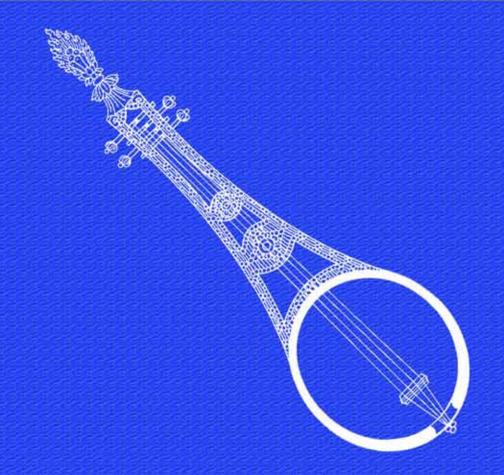
स्रेथ.क्रुम.रेबिटम.वर्थ.क्वैर.मरमा

र्ने निक्ता से न



हें अप्रार्थे ने में प्रदेशका के निम्हण



न्गार क्या

र्वित् ग्री हैं अ देवा त्य है न स्थित हो न से त हैं र ग्री हैं र ग	
র্থমান্নীদানা 1	
८८ हो स्वायविश्र श्रेष्ट्र हिंदी	
বাইশ্বা ব্র্নিট্রিক্সিন্ধ্রেক্সিন্ধ্রিক্সিন্ধ্রেক্সিন্ধ্রিক্সিন্ধ্রেনিক্সিন্ধ্রিক্সিন্ধ্রিক্সিন্ধ্রিক্সিন্ধ্রিক্সিন্ধ্রিক্সিন্ধ্রেন্ধ্রিক্সিন্ধ্রেনিক্সিন্ধ্রিক্সিন্ধ্রেনিক্সিন্ধ্রিক্সিন্ধ্রেনিক্সিন্ধ্রিক্সিন্ধ্রেনিক্সিনিক্সিন্ধ্রিক্সিন্ধ্রেনিক্সিনিক্সিন্ধ্রেনিক্সিন্ধ্রিক্সিন্ধ্রেনিক্সিনিক্সিন্ধ্রিক্সিন্ধ্রিক্সিন্ধ্রিক্সিন্ধ্রেনিক্সিনিক্সিনিক্সিনিক্সিনিক্সিনিক্সিনিক্সিনিক্সিনিক্সিনিক্	
क्षेत्रा न उर् छी से न से न	
	0
श्चेयास्ते स्वेतार्श्वेम्	3
गशुस्राम् र्हेस्स्मागी हस्य स्थ्रिम्	9
মদ্নানধুশা	9
श्रुव:रगाः शे:वॅर:श्रेद:श्रृंशःक्षेताः श्रावशः रावे:श्रुंर:वॅर:र्त्वे:ग्राशयः	
सर्चेद्र-पदे-क्विद्र-पिडेपा-स्रुग्ने-गदि-सेद-प्र-विद्य-चु-पा	3
मे दु'र्द्र'र्सेदे'र्स्ट्रें अ'केंग	7
ये दु 'गहे श'रादे 'श्रॅ्ब' कैंग	9
ये दु 'या शुक्ष 'यदे 'र्श्वे क्ष' कें या	8

न्गरःळग

श्रुव रगाये उर्दर्भे श्रुव सेंदरसाधेव रादे क्रुव की क्रांगविगाय
ভূ দ :ৰদ্'দ্গুদ্'শ্ 105
मर्ळेर् न्र्रें र्न्र्न् होर्न्न विष्
गहेशमा धियो क्षेप्पर मे देश प्रदेश के प्रति ।
শৃধ্যমাশা প্রবার্মির মির মের ক্রিবারী দুর্বারী দ
नवि'न। कुन'र्स'र्सिके में में निन्दर्दिन में रान्हें दिन सामार्सिता 115
८८ में अर्च प्रति पेर्व प्रवि पर्व प्रवि प
বাইশামা মনাবৃদ্ধাশ্রী ঐবি দ্বানপ্রামা
নাধ্যমানা মদমানই ঐবি দ্বানপ্র না
नवि'म। सून'मदे'पें न'हन'न-१५'म। 129
ष्ट्राचा निवः हुः चार्वे वः चरिः धेवः हवः चन्द्रः चा
त्रुमान्या र्नेब्रम्बर्यन्यवेर्धेब्रम्बर्म्य
नत्त्रामा कुःके नदिः धेत्र नत्र नत्राम ।
বক্সদ্রা বইদ্রেই ঐবংদ্রার পদ্রা

न्गार क्या

त्गु'मा अहे अ'मंदे'पें ब'हब'मन्द्रमा
नडुःमा हेटाटे वहें बच्चे कुवान विदाया
त्रुवःसॅटःसेवःमवःकुवःग्रीःसह्याःनसुःन।
वर्ने र न १९ खूद र वा ग्राल्ट वी क्षेत्र वर्ते व्या ग्राह्म
८८.सूर्यः स्वेशः सदः सदः स्वरः
गहिरायास्त्रेरायदे हेराद्येग्या
নাপ্তমান্যস্ত্রপ্তমার্ক্রনাপান্ত্রপ্তি।
ग्रनिक्ति। में भित्रिन्द्रिन्द्रमें स्वर्हिन्स्या अर्थ्यानमें द्राया 256
ই্শ্রেম্ব্রিম্বর্
र्श्व-५:म्रोट-न।
₹য়৻ৣঀয়৾৻ঽয়ৢ৻ঽয়য়৻৴ৼৄয়৾৻৾
মহন:ব ষ্ট্ ম শ া

कु नडमा

क में रामाण कु नमाण के नामाण के नामाण

शेर-श्रूद्र-द्रस्य-व्रह्स-द्रम्य-व्रह्म-व्यह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्यहम-व्यह्

र्वित् ग्री हैं अरेगा या है। नर अर्थि निर्मे ना हैं र ग्री हैं र

ने से प्रहेग्या अस्

न्याः त्वीयाः स्त्राः स्त्

विश्वास्त्र्वेत्। स्वर्ग्याद्वाद्वित् । विश्वास्त्र्याद्वाद्वित् । विश्वास्त्र्याद्वेत्। विश्वस्त्रः विश्वस्त्यः विश्वस्त्रः विश्वस्त्यः विश्वस्त्यस्त्रः विश्वस्त्यस्त्रः विश्वस्त्रः विश्वस्त्यस्त्यस

न्दःस् रेगायावर्गः श्रुविः देः श्रुन्।

निश्चार्यात्रियात्रियात्रस्य विश्वार्यात्रस्य विश्वार्यात्र विश्वार विश्वार

र्दे त्र देया यात्र श्राच दुः र्दे दे द्या यो यो वि दित है व्हार प्रेस वे वी देश स्मान वित्र दे त्या यो वित्र है।

श्चार्यात्रात्री क्षेत्राची त्रियायायात्रीय विटार्टे व्यक्ती स्थायात्र स्थायाः स्थायः स्थ

र्वत्यान्त्री श्रुवान्त्राप्त्रश्रम्भ वित्रश्चेत्र श्री स्वर्मा वित्र स्वर्मा स्वर्

ळ्ट्रासारीयासायानेराष्ट्रास्य

गश्च-भन्न स्त्री स्थान मिस्र अप्यान मिस्र अ

वर्षे स्वान्ति। इश्वान्त्य स्वान्ति स्वान्ति । द्वान्ति । व्यान्ति । व्यानि ।

वर-र्नेव-रेग-पादी शे-श्रेन-गश्यामी अपित्र केरावि नेप्ति केर्य केरावि केर्येन-वर्ष केरावि केर्येन-वर्ष केरावि केर्येन-वर्ष केरावि केर्येन-वर्ष केरावि केरावि केरावि केरावि केरावि केरावि केराविक केराव

सर्वित्वर्हित्वे। यान्याश्वावित्तर्हेशः संग्वियाः याद्वत्वर्धः स्थाः वित्वर्थः स्थाः वित्वर्थः स्थाः वित्वर्थः स्थाः वित्वर्थः स्थाः स्था

भ्रेन श्रुँ र दे। भेरा श्रे भ्रा श्रु र स्वा श्रे र श्रे ता श्रु र श्रे ता श्रु र श्रे ता श्रु र श्रे ता श्रे र श्रे ता श्रे

क्राया स्ट्रा श्रम् । श्रम् अर अर्थेन । त्रिया या प्राया । त्रिया या या या विष्टा विष

गहिराया विद्यीः सेवः श्री र निष्टा

नडद्खुनाश्चेत्यः अतः क्षेत्राची श्चेत्रा।
श्चेत्रः खुन्यः त्राची श्चेत्रः श्चेत्रः

द्र--त-विना-ग्र-- धेवा श्रुव-न्तानी-श्र्व-वर्ग् - श्रुव-न्दे के स्थान-स्यान-विना-न्हें न-वर्दे न-प्रते ने के न-दे के न-प्रत्या-न-स्र्व-न्ति के न-प्रत्या-धेन-विना-न्देन-प्रते न-प्रत्या-न-प्रता ने प्या-प्रयानश्च प्रत्या-न-के न-स्य-के प्रत्या-न-के न-स्य-न-स्य-के प्रत्य-न-स्य-के प्रत्य-के प्रत्य-न-स्य-के प्रत्य-के प्रत्य-के प्रत्य-के प्रत्य-न-स्य-के प्रत्य-न-स्य-के प्रत्य-न-स्य-के प्रत्य-के प्रत्य-

क्षेत्रान्वर्ग्गीः भेतः श्रुर्

क्रियायायवर् छेयायाः क्रियायोः खेरा।

दे'णर्। वेदःश्चरःकेषाःवरःषश्चरःवश्व। वेष्परा वेदःश्चरःकेषाःवरःषश्च।

रदः उवा र्वेद : श्रूद : व्यः हे : वर स्थित : श्रूव : श्रूव : व्यः स्वा : व्यः स्व : व्य

१ वें वामित्। केंवान्यरावरायक्ष्याः वर्षेत्राः क्षेत्रः विश्वाः केंवाः केंवाः वर्षेत्रः विश्वाः वर्षेत्रः वर्ते वर्षेत्रः वर्यः वर्यः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः व

र्नेन्'ग्री'र्हेस'रेग'गे'र्भेन्

न्दे न्द्रिंश मिले कि मार्थ नहिंद्य में न्यू निर्मे न्यू निर्मे निर्मे

ळेंग'नर'ग्रुअ'न'उत् ग्राम्याः उत्राची। र्नेट्रिंट्र स्थात्। नहेर्रकग्रार्थ। ग्राम्याने स्वा केंग्राय-प्रतिपाउत्। नर्हें खूदे रुर हा। यपियःयः भूरः रुगा। द्रेव उव अ अदे। वय:रश:५व:३८:॥४:५॥ ळेंगानरःथःनःउदा गश्राक्ष्रवाश्ची नर्ता है। इ.य.ज.व्यूट.र्शा 55'गर्र'मी'अळे'आ। भेगा अवदात्र भः निरः सेंदा। क्षुःतु। केंगानरः दुगाना उदा

सहस्याध्यास्य स्तित्र बे र्हेन दगर से र दबर थूट ॥ गर्भरःश्रूरःश्रेस्रशः भेरिरःशा यद्य श्रेट स्वाश्रेट य १३८ व रा श्वेटायाश्वेटावट्गावर्डेशार्शेटा॥ श्वेटायाश्वेटाहे सेटावा। श्रेट स्वा श्रेट से से तर्वा कृत्। केंगा नर नर्त्र भारत्। यदेवे अत कर देगा भागा शुसर् रुधे त्र नन्द्रभा १ वें वा नर नत्व पार्व वाश्वारा वार्य वार्थ में निया कु खुर वी वें अदे वार्य न राष्ट्र क्रें सें न्यें । त्युग क्रें न से ना गश्रम्भ्रवाग्री मुम्सू वेतर् न्धेन्न्यःग्रेन्ययःर्धेव्क्र्यःस्नावःन्। १ वें वा नर नत्त्र म उत्र थ म य न य वि वि न म यश्रीन्तरः सुदः वर्द्धनः ग्रीः वाश्रेनः दश्य बेशरेंदियाश्राद्दानुवार्शेद्या

म्रटाईशायानायानवयान्यशा

क्रें सबदे कं नदे नर से नश से राष्ट्रिता दे वें वा नर नर्तु न पा उत्र मा साया राषा वा से मिना या मकुः र्र्भू अग्वो अम् वहुं सामायशा ग्राय्ट केंग क्षेट में न्त्र द्वेते कुत्रा इनवेन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्तु केंगानरनकुर्भारत्वा वर्षे व्यवस्रीम्भागशुर्भार्षेर्दि। १ वें ना नर नकु न न उद्यो मा सर त्या न से विता या ग्रव्याक्षार्श्व अर्थेव संवि ग्र्म । प्रमा केंश नर्डे खूरे न्द्र हु: १ मानि कें।। रशःदेव उदाधासदे वया रशादे॥ इव इग्राय वर्ष सेग् कु इन्दर से द विसा भ रा १ वेंगानरनकुर्पाठवर्षणगर्शिक्षेर्भिर्मना खुर्यायदी कु माराध्यय दुः सूर् ग्या श्रेश्रश्राचारशास्त्र स्त्रिन्य स्त्रिन्स् ने सायापादे में निम्याद्या ८.४८.स.लेक.चूरे.क.जूच.वजू।कि.ची ३ वें वा नर न कु द रा उद न बु अ अ अ द द न कु द रा या द या वा कें র্থীন'শা

क्रिंग्-नर्ग्-पार्यार्ग्न्यार्थ्य क्रिंग्न्य विष्या विष्या विष्या विष्या विषया विषय

শ্ৰমা

१ वें वा नर न्या पाठव मा अप्यान या कें में ना या ञ्चा नश्या गुर्व् त्वाये दे दिन् विग्रा गुर्या यर रेंद्रे वसेया पि न्याने पार्वे मुर्ग रेंद्रो। नेशरीगाकुगाहेरावयेवायदे हुगार्वेद विगा मुंग्रायदेर्भ्यरावश्यीत्र्त्वराधे । देशे वास्त्राव्या १ वें वा वर द्वा य उव वर्त द्वा य व्या व वि व करंथ्र श्वेर ग्रें अंदिर विर में र ग्रें र अंदर्भा न्वरःश्रेशः सः केवः थूरः थूरः नुः रेशः नुशा उक्रतः क्रेंत्र प्रदे त्रवाश सुर वी वार्श न त्रशा इ.च.र्याय:यदुः क्रियायार:वाळ्यार्सर॥क्षेत्रा ३ वेंगानर-न्गुन्य उदाय प्रायान्य में विनामा वह्संसीर्स्स सुर्मी रवारावे हे वा বাদ্পাত্তবার্ন্র শুর্দিপাশ্রী । বিদ্যালয় সক্ষাপার্ম শুদ্যা

१ वें वा न्यर न दुः य उद न द्वार्य प्राप्त न क्षेत्र न व्या क्षेत्

71

इयानगाने येन क्षेता से किया नराय हेता १ स्व केंगानरन दुःगडेगा उत् मी सेन र्सेन र्सेन परी पर ने गरा गरा स्रा १ वें वा नर न दुःवादेवा सः श्राया स्थाया र्री विनाया गर्वेत त्वे । त्र्रे र विनय में विषय अदे गदिर अक्टे से र ॥ हिन्शीश्रामायाचेमा त्रुवा प्रयोद प्रदेश सेवा विवास प्रमा र भी त्यवा संदे सार श्रु हिंद अर न सुर अ संदे । हिन्शी ज्वायहें वर्षे याया वया यह न से श्रीना क्षित्र १ वें वा नर न दुः वा ठवा पर न ता प्राया राया राया रें विन पा पृ त्येते त्यायाया विवाया याते खूँ सुँ वाया ग्री सबद वरी मा ये खे द्यर में त्यर तर्दे के न तर्दे के न भर् वर्चार्चामानविष्ये में निष्वेषा वेषार्वेषार्वेषा व्यास्याञ्च वार्याः स्थान्याः स्थानः स्थान्याः ३ वें ना नर न इ ना हे ना साथ राया राया में हिना सा यारश्राष्ट्रवाचर्रावार्ष्ट्रित्राण्ची स्थापन्त्रीत्र स्थापन्त्र स्थापन्ति स्थापन्ति स्थापन्ति स्थापनित्र स्थापनित् स्यापनित्र स्थापनित्र स्थापनित् स्थापनित्र स्थापनित्र स्थापनित्र स्थापनित्र स्थापनित्र स्थापनित्र स्थापनित् स्थापनित् स्यापनित् स्थापनित्य शुअःगिष्ठेशः शिक्तियः विवशः हेशः वर्गे दः पदेः द्रशः देन। न्द्राधीन्य के दायी तु से में दु द्वारा में प्राप्त के र अप्तसुत्र सूर वी सुप्तर के द से प्र विद्या स्वा भू । केंगानर न इनाहेश संदेश्वेन श्रूरा वर्ते वार ने ना श्वा श्रुरा श्री

ग्रे केंग्राचराद्वानिकार्यर देन्निकार्यर में केंग्राचराय देन्य केंग्राचराय केंग्राचराय केंग्राचराय केंग्राचराय

१ वें ना नमः न दुः निहेशः परे में नाशः निहेशः पः म्यानी से से में न

71

यादया वार्शे कें नामा

सुःज्य

केंग्। नर्न न्युःग्राश्वर्या श्वर्या । वर्न वर्न न्या स्वाश्वर्या । वर्न वर्न व्या स्वाश्वर्या । वर्न वर्षा वर्

१ न सायान्याम् र्रे मिनामा नडुःस्रायाः अद्येतः परिः र्से : र्से अरु। अर्दे दिः यहिरः निव । स्वा चित्रयान्त्राच्यात्राविष्याच्यात्र्याच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या वर्षेत्र प्रश्ना न वर रेवि सह द र पं हे वि वे रेवें द सुर गुत्र हु ग्राया। वि'नवे'नेन्न्यॅव'यळॅग'र्हेन्वह्य'र्ग्गेन्रहेंव'वन्नेन्स्रुव'र्ये'हे नवेव'यर्षे। सु:ग्र १ न इ न हे न र न र न र न है न है न र न क्ष्रवासेनानी नर्रिक्तर होता स्वास्त्र मास्या स्वास्त्र स्वासी स् व्रवावात्राम्यान् सेवायाः श्रीवायवे स्रवायहे नवा ग्री देवा न ग्री न नश्रम् रश्रेम्रश्रम् प्रमादान्य प्रमाद्येषान्ते १३ स्वराद्यु र मी क्षु र स्वा गशुअयापिक्या हुन्सू अपने दिस्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्य स्वर क्ष.य॥ ३ वृष्यायादयाम् र्रे र्वेनामा कु र्वेद द्वेद वाश्वय के से देवाय वर्ष से वास वर्ष देवा के देवाय वर्ष देवा के देवाय वर्ष देवा के देवाय वर्ष देवाय के देवाय वर्ष देवाय के देवा के देवाय के दे मुयाशा है ये त्र तर्द मुवा माराय है र है र ख्रा सर स्वा यःध्यायायायात्रात्रात्र्रे तर् श्रुवासके दासवाद्या प्रविषा वर्षा।

हे.यी अ.कु.सर्व.जम.मी.यट.सह.मूजाय.ट्य.मी

केंग्। नर न द्वानि पा उदा श्री श्रेन श्री मा निर में निर न श्री ना श्री मा निर में निर मा निर

यद्भः भे अर्चे न्या के स्वादे के यदि स्वी कि यो स्वाद्भः स्वी के स्वाद्भः स्वत्यः स्वाद्भः स्

क्षेत्र'म् क्षेत्र'न्द्र'भे क्षेत्र'न्द्र'न्द्र'न्द्रेत्र'भेत्र'भेत्र'भेत्र'भेत्र'न्द्रेत्र'न्त्रेत्रेत्र'न्द्रेत्रे

यदे व शंके वा न्यर श्री वा श्रुया न्यर श्री हो से ना श्री र प्या न्या प्रदेश श्री व श्री र प्या न्या प्रदेश श्री र प्या न्या स्था श्री र प्या न्या प्रदेश श्री र प्या न्या प्रदेश श्री र प्या न्या प्रदेश से ना श्री र प्रदेश श्री र प्रदेश श्री र प्रदेश से र प्

त्रपळ्ट्यां अर्थियाया चीट्यां स्वाप्त्रप्ति स्वाप्ति स्वाप्त्रप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वापति

यदिमः अः नडद् सः क्ष्रेंद्रः र्ड अः दुः दः महः मी अः च्रे अः प्रवेः दे नः माल्यः द्रः माल्यः दुः नर्गो दः च्रेयः स्ट्रेयः स्ट्रायः अदः मदेः क्ष्रुयः स्ट्रेयाः ययायः विमाः द्रशे स्थर्टेयः दुः पर्मो दः वा

ञ्च्रव केना मह ना तुन शेषा न दे ना पोर । पदि ये ना श न लह । तु हु स

वृत्राधित: ह्या ग्रीश नर्गे शया उत्।

याश्रेरःश्रुद्धः यादेरः अवे।व्या

ळेंगानरहेरमाशुसामा

दसम्बद्धाः प्रवितः श्चाः प्रवितः स्वाः प्रवितः स्वाः प्रवितः स्वाः प्रवितः स्वाः प्रवितः स्वाः प्रवितः स्वाः प

ख्र-देग्रग्नर्याची क्रम्प्न्याची क्रम्प्न्याची क्रम्याची क्रम्याच

ळेषा'नर'हेर'नतुत'या

क्यान्या मुनामदे न्वेन्यान्त्र क्या क्रिया मुनामदे न्वेन्या मुनामदे मुनामदे न्वेन्या मुनाम

ব্যথ্যপূর্ব শ্কুর্র মান্ত সম্বর্থ স্থান্ত ন্যুর্থ প্রত্যান্ত না ক্রিল্ড ক্রিল ক্রিল্ড ক্রিল ক্রিল ক্রিল্ড ক্রিল ক্রিল্ড ক্রিল ক্রিল ক্রিল ক্রিল্ড ক্রিল ক্রিল্ড ক্রিল ক্

यदः दा

ग्वादः विया ग्वादः वी शः है 'क्षुं है 'क्षेत्र' विशः चुवि 'व 'क्षुं दः श्रद्ध देश दिया शः विया ग्वादः वी शः है 'क्षुं है 'क्षेत्र' विया शः विवा विया ग्वादः विया ग्वादः विया शः विवा ग्वादः विया ग्वादः वि

अः न्व्यास्य क्षां अर्द्धिः स्वया शेष्ट्रीय विष्य क्षेत्र विष्य क्षेत्र विषय क्षेत

हेश्राचित्र्वारेग्। अर्द्धवारेग्। अर्द्धवार्येग्। अर्द्धवार्येग्। अर्द्धवार्येग्। अर्द्धवार्येग्। अर्द्धवार्येग्। अर्द्धवार्येग्। अर्द्धवार्येग्। अर्थेवार्येग्। अर्थेवार्येग्। अर्थेवार्येग्। अर्थेवार्येग्।

ष्पर'क्।

येश स्त्रिः विष्य क्रवः विषयः स्त्रिः स्तिः स्त्रिः स्तिः स्त्रिः स्तिः स्तिः स्त्रिः स्त्रिः स्त्रिः स्तिः स्त

য়्यन्तरे त्यन स्रेग्या थे विदे म्य तकर स्रुग् से वे क्रिस्य स्वर्ष

म्राचित्रचीश्याहेरायित्रवित्रवित्रवित्यम्थ्राव्याक्ष्यास्त्रव्याक्षाः देमाचेत्रद्वीत्रचीःकुमहेरामधेःख्राप्याःक्षेत्रस्त्रक्षाक्षाःच्या

श्रेव पर्वि वा न्यु अर्देन स्थित रेवा वन्या यान श्रुव व से अर्थ न्यु व स्था व

ळेचा'नर'र्शे'गठेग'भा

स्वयः न्याः भेशः च्रितः अद्भवः स्वयः च्याः स्वयः न्याः स्वयः स्वय

नविःध्रमाः इमा इदिः बदे पद्मा हेतः हैं माश्रासदे न ब्राह्म मान्त्र देशे

याश्रुस्रायि प्रत्या श्री स्वाया या स्वाया स्वाय

त्रुवायाः श्रिवायाः गुवासे प्रवायाः श्रिवायाः श्रिवायाः भ्रिवायाः भ्रिवायः भ्रिवयः भ्रिवयः भ्रिवयः भ्रिवयः भ्रिवयः भ्रिवयः भ्रिवयः भ्रिवयः भ्र

धर:का

न्ययःश्रुवाःवाश्रुदःवीःदेःश्रुशःयःळवाशःन्यःयदेःश्रुशःयळ्वान्यदेः यञ्चदःन्यःयदेःवाद्धवाःदःवगुनःवशःयळ्दःश्रॅनःश्रुःवःश्रुःददःयञ्चीदःवदुः न्युदःन्दःवठशा

नशुरुष्या विस्रया श्री प्रस्ति । से प्रस्ति

येग्राथम्या यक्तिः में द्रायम्यान्या यक्तिः में द्रायम्यान्याः स्वाद्यान्याः स्वाद्याः स्वतः स्वाद्याः स्वतः स्वाद्याः स्वतः स्वाद्याः स्वाद्याः

धर'वा

য়्यन्तरे त्यन स्रेग्या थे विदे म्य तकर स्रुग् से वे क्रिस्य स्वर्ष

मिट्यार् वार्ष्या स्वार्ष्य स्वार्ष्य स्वार्ष्य स्वार्थ स्वार्

स्वा। स्वर्था। स्वर्था। स्वर्था।

केंगानरःश्रें ख्राया

यारायो यो के अंदर्शन स्त्रा प्रकार करा में स्त्रा या के प्राप्त करा में स्त्रा यो के प्राप्त करा में स्त्रा में स्त्रा

यहेगाहेव.यहे.व.याडेया.धे.हेयाय.क्षेत्र.श्री अंत्रेयाय.क्षेत्र.यहेयाय.कष्टिय.कष्टियाय.कष्टिय.कष्टिय

श्वामान्त्री प्रमान्त्री प्रम

यदः दा

स्वतः न्याः श्रीनः विदेशसहे शः सः या ठियाः नश्रूशः न्यीयः विर्मेनः विद्याः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्

भ्रीत्रविष्ण्यात्र्यात्

बनःत्रःकुः क्रेतेःश्रृतः ध्रमा नकुत् स्रुतः स्वितः क्रेत्यः द्वे । बतेः क्रुतः स्रद्यार्विमा त्रयः इत्यायिषु स्रुतः स्विमा श्रृतः से । त्वृत्रः क्रीः सःत्रः सिः च्रुमाः मर्विदः त्रेतेः दुमा व्यकुत्रः नविद्या

ळेंगानरःवे गशुसामा

स्व र्ळिंग्या क्षें रेळेव दे ये दे स्व राज्य स्व रेज्य स्व रेज्य

য়য়ড়ৢतिःबूदिःसदार्क्षःधिद्रमःशुःईवाशःयाश्वर्षःश्वर्षःयाःयाः য়য়য়ড়ৢतेःबूदःहितेःहेहेरःश्वेरःक्षं साधेदःकुः भूरःतुः विविश्वराधाः য়য়য়ড়ৢतेःबूदःहितेःहेहेरःश्वेरःक्षं साधेदःकुः भूरःतुः विविश्वराधाः।

यदे के वार्या संविष्ट्रं त्रहें वार्यों यो यो पी प्राप्त स्थान से सामित स्थान से सामित से सा

ळेग्'नर'नकु'न्र'र्शे'ख्'रुत्।

रमयाथ्न थूना या ग्री को विदे म्याययायम स्टा के विनामदे यापया यह

वनस्यस्त्रेयाः हेनसः र्ह्नायाः विद्रात्ते स्वात्त्रे स

सक्ति भ्री त्र नक्षु निर्देश स्ति । स्त्री व्याप्त स्त्री निर्देश स्त्र न्या स्त्री स

ळेंगायर है अयम् लें द्या उदा

रवाम्ययार्दिन् बेराबेटावयावदेदिन् ग्रीयावटावी सुवान्दाम्यानुमा मदे हैं भैग हैग कर हम राष्ट्रेर नहें रागुद पर सुवास सुराधित रा ग्रथः नरे केत र्रेट रें द्वनर थे ने श क्वें दाय ग्राम मी म् ब्या श दे क्या यर पहें त हो द ख द सम्मार्थ र न र न हे त हे त हैं हे ह सम्मार हे न हैं स्मार है गर्भरःश्रुद्रअःद्रगाःभदेःदेद्रःवक्कुश्रःअद्द्रशःववदःव्वेदःभदेःकुःश्रर्द्धदेः में अं उत्र मिंर धुमा कु केत्र कु महेर ने मुश्र अवे अर्के द धेंत्र या शेर रर रेग'न्ग'अर'वरे'भेश'श्रेर'गेश'में सहंदर्सर हेन्सवसर्मेग्राज्ञ र्याह्मुसासुर्द्रासे द्राये द्रयाया दळवा ळवा ळे दर्शे र द्रयो या पा दराधूदा वनरःनवे भ्रुः उत् वर्त्वराना केत्र में वे प्षेत्र मा दुवा या भ्रीवायाया कवाया प्रया য়ৢয়৽য়ৢয়য়য়৽ঀৢয়৽ঢ়৽ঀ৾য়ৼ৽য়ৢয়৽য়ৢ৽ঀ৾য়য়য়য়ঀ रयः हुः क्रु अः यशः श्रृं अदशः अहे अः श्रृषाः यदः क्रें अरः यशः श्रुं ष्राशः ग्रीः विर्वरः कॅ त्वोदसामर हो दायवे हे सासु द्या हा धीद केंद्र ग्राव त्वर् सावदे द्या विशास्त्रेरान्वरावी कुषार्वे रेवाळेवार्या हेवाशायरारेश रेंद्र बेरादाय नवर्ष्यश्चेर्यदेष्वव्यानःर्रेक्षेत्रम्यद्वर्षानःरेवे केर्नान्ना नकुःह्रेगःज्ञयःसरःगरःसर्वेदःश्चेशःहेशःस्र्रेदः।पःरेगःगहेशःसःसेरःश्चेरः ग्। सुन् नाहेत् सँ नास न् क्रीय प्रति र बुर नाहे स दे से द प्यत प्रना पहें त्या वियःसरः दर्गे दः तः रेटकः शुरु रे देरः तुः धे।।

र्ये निरासक्रिन् हेत्र हेते रहा निवासे के त्रिक्त स्थान स्था શૈયાનાયલ મુવા ફ્રયા વસુવાયા શું એ દાયા વર્દે તે શેદા નાયે રાશે તાનાયા सळ्य.सर्ह्य.मू.स्प्राचय.लु.क्ट्राय्ह्य.म्.चय.सुट.चय.सुवायाया.मुत्राचनरः *ैठःष्परःक्कुत्रःविरः*ठेःद्यारःवेसःद्ररःद्यरःवरःग्रेट्रःयःम्नरःशेतःरेयाःयारः देश'धर'र्<u>जे</u>ल'शुर'रे'हेर'श्वेर'र्वेर'र्ग्जर'श्चेश'र्जेश'र्जेश'रुद'र् क्रेंनशके विटाइ वस्याके खून है साह्याना नितात है नि हेट है त्या वस्त वर्देन्'गर्देर'सुद्र'ठद'णर'ग्वासेर्यासुद्र'यागृद्र्य'त् सुद्र्यानसेर्यः वनशः हवः देर देश देगा पः प्रावर्गिगशः अङ्ग हैवः ग्री प्रवरः ग्री प्रवरः र्वेर-विद्यानानमुर-नभुट-मुन-हम्राज्य-नर-भूत-वेरान्यमान्त नदे ल हेर वर्गे द नाद धर हु न र र दर्दे द ल म् स् र हे ले ल हि नाद ह में सरमात्रान्त्रान्त्रीरमरप्रमुरपाने धेरसप्रप्रमाने वितर्मान के सामाने स यासेन्छे रेंन्यह कुन्यम् विवा पुः सेन्यून समीन स्नि सेन्से रेंन्स हे अप्तर्जे निर्दर्भो से विराये निर्मा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त यहं यायदे विचया यहीया चहु वर्षे या श्री दारा पश्चिया ही । यहें दाहे दाह्ना से दा र्वे विसर्धः यः रेवा रे प्षे रहे अ ह्ये व सद्वायर व प्यर व प्यर द्वाय स्था द्वाय नरुश नगदः मुनः नर्ह्हेगः सदरः नगदः नः धी।

द्वायः क्रेंत्रः र्रेयः न्त्रमः प्रमः प्रमः याः याः वित्रः क्रिंतः स्वायः याः वित्रः क्रिंतः स्वायः याः वित्रः वि

नन्गारी हिरके तर्यान्तायर्गेन क्षुन अराधर प्रमान के तर्या है। वित्र तु : इत्र : ने रा : दें दे : देत्र तु ते : ये दे ये दे ये दे ये दे दे । ये कु : सू : तुर-रन कुः शॅर-र्से दे:वर्न से दे: क्रेन-तुन्दर स्वन श्रास्त्रेया रेगः यदेःन्यादःन्यःश्रुं यःययःस्टःयोःधेःन्यायदःनश्रुरःगुरःयादःवदेः धेन् होन् से ने न्वा ग्रम् यस्य ग्री से म् तुवे वात्म न ग्राम वर्षे वा के साहिन विनर्भागस्रेत्रायासुःविनारेर्भागस्य भेरानश्चित्र ग्राह्मायान्य स्थिताः गी र्सेंग्रार्श्वग्रार्श्याय है नायकु धे सर्गेंद्र से हिंद्र सक्दर्त्य है । दिंदर स्तुः स्था हे र र गवर रे विका सुर दे त रहे त र र र या र सूवा या यवर वेशाधीन नगदे नश्यामहत्र में स्थान सेन सम्मान स्थान है। धेशश्चेन् प्रते हे से दे निर्देष प्रताय यार शा है र न् से या र या पर द होन वहिना हेत वही दरमावित दर अर्थे देश देश सर खेन्य स्था खेन्य राष्ट्र स सबदर्गाम्बन्यसम्बन्धः विवासित्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः स्वासित्रस्यः स्वासित्रसः त्रवात्र अक्षेत्र वे त्यादे द्या ने त्यादर न्यादर द्या प्रवेषा अपन्यर वे अ यविदःधीः विवासः सः विद्रसः सः दिह्न स्यसं विसः तुः गुरु दहवा दे दिरः ख्रुरः डेगा शेर् अवर वे ता अवसायर वहें वा द अवीं द में हिंद क्रा थे सुदेववाद तुर:दशुर:नरशेसशा

से प्रश्नुम् निर्देश से मिन्न के त्या से निर्देश स्था निर्देश से निर्देश से

यशः इसः देवा द्धंयः वर्देशः द्या वर्षेया यस्य वर्षा सः हिंदः इस्र सः प्यतः यवाः अर्केना श्री अः इस्रापः वस्र अाउन् नाशुरः नी निरास हैन समीत्राप्तस्य । गशुस्रासहस्यानुन्धिन देन वियान्यान्यान्ति कग्रासन्दिन वित्रवे देवा नर्भानसूनर्भायमें प्रमासूर्वे वार्षाय्या होत् सूर्योदे सेवा वे ना दुःविहेश इर्ष्व स्वापि अयर्कें व्यक्ष अया नित्र पर पर प्राप्त में प्रे प्रे प्रे वर्षे अया वनद्राया सेद्रायम् सूना रेदि से सूर्य हेरित केत क्रित की सामन ही पाईपा हिंराञ्च पार्वेरावदे ह्या वे हिंग्यायया विवया जुराग्यया व कुर्या पहें। श्चेमा नर्डे साथ्य वर्षा हिंदा कुरादर से विषय देना दें माठेमा लुगा रामार केंद्र ग वुग्रासहं सासासूर्कें ग्रास्थार्ते ग्रासे र दें र सूट र द्रार र सारो सूसा <u> ५८.क्.भेषः रेवः रेवः अर्हेवः वाः धेरः वह</u>्यः वेः विवेः वयः श्रेः अहे अः यः गुवः नसूर्यापनाग्री सकुः क्रें या देनाया ग्रीः क्रें रानदे दुव्वते प्रश्रीया विदे ध्याः न्दः यार्षेत् : नकुद्राः विवयः याद्वेयः न्द्राः नहतः यः वर्षेयाः प्राः श्चें र अवश्चे से द वेग ले से त्यूर रें अ गर हैर वहें द न र र हे अ नन्गः भ्रेटः नुसः न वटः पेट्राः ग्राटः हेन् ग्रेराः में यः ग्रुटः हेग । वृः नु।

क्षेयाः भ्रमायीः भ्रेनः श्री रः रमायाः उद्यान १८ रा

महास्थान हिंद्र स्वस्थान हिंद्र स्वस्थान स्वत् स्वता स्वत् स्वता स्वत् स्वता स्वता

हर रें र भेवा हैर यथा से द ड्वा या

णुअ'यनम् अर्व'र्से'र्सेम्'न्द्रव्यक्ष्म् अर्थिते स्ट्रिंग्या यन्त्रव्यक्ष्म् वित्रुक्षा ।। नर्वत्रे स्ट्रिंग्य यहेव्यक्ष्म् अर्थिते स्ट्रिंग्य यहेव्यक्ष्म् ।।। नर्वत्रे स्ट्रिंग्य यहेव्यक्ष्म् अर्थिते स्ट्रिंग्य यहेव्यक्ष्म् ।।। नर्वत्रे स्ट्रिंग्य यहेव्यक्ष्म्य स्ट्रिंग्य स्ट्र

में द्रा श्रा श्रा भी राष्ट्र में या विश्व स्थानिय स्य नर्गेरमार्भे॥ स्रमार्भेरानह्न सुनिव्यामन है॥ नर्भेरमार्भेरमा (245) ५५। ५ग मस्स्रास्य सम्बर्धान कर देश देश है अया दे दि ही खेंग शुर्यायास्त्रवाद्याद्यमीशामद्याश्चीर्यायम् शुम् स्वा (246)मीशा श्चि.सय.ही कुंदु.बूर.बू.ज.यर्ह् ८.वश विंश.यंटश.श.कूर.सर.लूटश.ग्रीश. वनरशः इत्यः सरः (२४७) नगुगः न्या दिरः वीः देगः नुः नडं नः से वनशः ग्रीशः यद्यायाक्षे यवटः(विटः)लयःर्नःयाचिटःयःचर्यःयम् कुःर्टरःयःवयः न्ध्रत्यार्थः(यारुवः)वैद्या र्वेषाः स्वाद्यान्त्रे स्वराद्यम्याः सुः सम्दर्भा द्वरः वीं देवा नु नडं द से र्सेट न इद न्दा सट से हे बट सूट हे स दनदस ग्री : नर-री विरास् स्रीर-अर्-ग्रीअप्यस्य साम द्वा स्री न द्वार्म वर् बूट र्से न ही पर्देट र ने पर्देट वे या या या (वार्सेय) है। वट बूट या वर्ष र्रे ही नर्रें वर्रे नर्रें वर्षे वेश हुरा है। उर वश वर सूर में हीं नाया हिर र्रे सूर अर् न्व्या द्र भ्वा स्वा र्रे (248) है। सूर अर ने स्व न्व द्र सूसावर्गा नहवारी विरानगाय गुरावापा वा (स) वे या गुःस्री सामर सूराना यदःनश्रेग्रार्शे । उदःत्रावदःश्रूदःगे त्र्रा यळनः ग्रीयः विषः (249) है। वर बूर नक्ष्मार्गे॥ अपर क्ष्म (ह्यूर) न प्यर निवार्गे॥ उर मे दे मा बुक्त अन्त्रगुर ने वा है। विदासूद नगुरा है। बुक्ते क्रिंग हैं। वह व

र्विः र्ह्मेत् र्विः व्या हिरार्वे श्वराया श्वराय श्वराया श्वराया श्वराया श्वराया श्वराया श्वराया श्वराया श्वराय श्वराया श्वराय श्वराय

वेशम्बर्यः यः सूरः र्रेष

हुव र्हेट महिर धिमा डेश रा वे श्री में १८६६ वें र माव शुद्ध विट ळेव'ग्री'तुव'र्नेट'ञ्चा'स्या'वय'सुट'वदे'ग्वव'र्वदे'धे'गे'क्रय्याचेट' नन् देवे विन्तु अप्याप्य सम्मान्त्र न्त्र मान्य स्वर्थ के से मान्य माल्य मदि पी मोदर से सुर न लेगा पेंद रेटा सर के न ते सुर कु य मेंद ग्री भिना क भिन सम्भ भिना क ने निना नी निन नु निन सम्म में निम्नी से निम्नी ग्रे श्रे कें नरू दर्ग रेग नरू । दयम देव से मरू ग्रेम स्था देव । त्रवर्गेद्राधेद्राध्यादेर्द्वायो बद्रायाहेवाद्येद्र्येद्र्येद्र्याये क्रुयाये देव बर-५-७८-छेद-सॅ-छ्द-स-विग-रेना धेद-दवर-ने-न्यायश्रासर-छे-न-विग-श्ची वि१०० वे वर्ष १०० विदेश वर र विव है सुवा विव शी की विव र विव र र য়ৢ৽৴য়৽য়৽য়ৣ৽য়৽ঢ়য়৽য়ৣ৽য়৽৻ঀ৾৽ড়৾৽য়ঢ়ৢয়৽য়ৢয়৽য়য়৽য়ৢয়৽য়য়৽ मुँदःग्रवः केवः में मुद्दा मान्यात् नर्गेदः या वे श्वेनः देवः धुयः हरें केवः मुर्भार्भे .जू.७६८५ जूर इ. रय. शुष्ठ मिता श्रासाम व. यशाल्या क.ट्रे. रया. यश्राक्षःभ्रान्वेगानी नश्चराधेगा हिराधेंदाना ने हिंग्स श्वराक्षरा परित्रा नश्चेनारायशळत्यस्विगायीत्।

र्देव:कवरावदर:वस्याग्री:वेरिकेवाय वया

.....वर्ष्वः र्वः (श्रुष्वः करः) में रः र्वे अवारः श्रृंदः स्वः ख्रुषः व्यानः श्रृंदः स्वः ख्रुषः व्यानः श्रृंदः स्वः ख्रुषः व्याने विवार्षे व्याने विवार्षः व्याने विवार्षः व्याने विवार्षः व्याने विवार्षः व्याने विवार्षः विवार्यः विवार्षः विवार्षः विवार्षः विवार्

ने वश्यों नुमानय नडं वर्षे हि र्शेट इव नगुट नुमाने गर्शे । नर्द्रासे सुर उर में र हे प्र प्र म्य मासुस न के सार्था । 1. विते वे वा वा ननः भ्रेनिडन में हो अवि र्शेट इन ही श्रूट ही टानिट दिए निट (1)नव देट सह्त्(2)केर नत्ना क्षे नडन में क्षेत्र (3) वि सर क्षेत्र सर इन सेर गो'त'न्व्यायायम्'वें पाठेवा २.सवी'वें व्याननः हो नडंद में हेद्रागम्'द नत्यायानेता होतानम् नर्वरायाहीयाहीर्येत्रह्वाहीरयद्वरान्तान्तर (4) वें निष्ठेम 3. ही निर्देश वें निर्देश निर्देश के नि र्ह्में त्रिक स्ट्रें त्रिक स्ट्री अ र्ह्में पेर्ट त्र हित्र वर्ग्याया स्टर से या है या विकास वि इव ग्रीया नाधुना हु नावना खेरया नित्र (5)। न मुख अर में हे य बिर ग्री भ्रीत देव (6) नग्रीय। त्रयत हेते ह्वें तर्देत सूना हु दत वित ग्री हिंद केव न हम्म (७)। वर व्राप्य श्री अन्य (८) न श्रूम श्री अ स्व संक्र नक्ष्म सर्रिः अर्र्, मार्था वि नवर वे त्या वि स्वर्धि सः (१) नग्रा से भागि से स्वर्धि स सर(10)वें निकेन 5. श्री वें या नन श्री नह से से रामि नय न त्नी स

ने त्रशः कुषः रवशः वुदः रेशः तृतः रेषः धेषाः करा P.T. ११६६ थेः क्रमा विषय स्वार्थ निषय स्वारा स्व सु:बि:नडव:में:न्रः अ:र्न्र:नेर:न्र्ने अ:य:दे:सुआ दिर:बि:नडव:में। नेर: वितर्वसी प्राप्त अर्था वसार् प्राप्त अर्था अर्थि पर्वसी अवि नडवःराविःश्वर्या देःविःनडवःरी देःविःनडवःराविःश्वर्या विःश्वेःनडवःरी वर्तःलयःकरःवरवरः है। अयः क्ष्ययः गाः श्रुवः या व्यवः त्र्वारः र्वानेवायः र्शे । विःश्वे नडद्रभे दे श्रम् द्वा द्वा स्व न्य द्वा द्वा स्व न्य द्वा स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स शुने न्त्राम् कुया न्यावसाय दे न्यन्त्र साये यो न्या न्या न्या न्या शुने न्त्र कुल में रुषा वार में याद स्वावस्य में स्व हिया विसे र पर्देया वी सुर्वा में येगानड्दर्से । वि.जेगानड्दर्से देख्या । क्.जेग्यायानड्दर्से क्.जेग्या नड्दर्से देख्या विर्ने ज्येम्य नड्दर्से वे स्वायाय नड्दर्से देख्या वर्त्रेट वि येग्र न उद्दर्शे वर्त्रेट वि येग्र न उद्दर्शे वे स्था वे वे वे येग्र नड्यम्य व्युप्तियायाया श्रम् । भ्रम्प्रिया व्यव्याया । भ्रम्प्रियाया श्रमा नुमात्र नित्रि नुमात्र नित्र नित्र श्रमा थे सुय में मात्र मात्र मात्र

नद्रवी ग्रवस्मार्थरः मध्यस्य श्री स्था । हि.मूजा हि.मूजा श्री स्था ग्रवस हि. र्हेल दया न्वया भे हें ल दया दी श्रया न से तहें ला री न से हिल रें ति श्रया हे मुयारी हे मुयारे ते स्रमा मुयार्श्वर नहता मुयार्श्वर नहत मी स्रमा मुयार्ने में विद्यान इव। मुयार्ने में विद्यान इव मी अया वि न इव व्या । हिनस्व वया ग्री अया वि सु सु र न स्वा वि सु सु र न सव अया वि र्वेग नहत् विः विगानहत्र्रा रुः परा वः वेदा विषय अर्वे अराविष्य भा थु में में भु नहन थु में में भु नहन नि गर्ने य न सर से है है में भ शु नर्ने यारा दे स्था । वि स्व ब्रा वि स्व ब्रा वि स्व ब्रा वि स्व व प्रा व वि स्व व व व व व व व व व व व व व व व धरामनेरात्राम्यात्राम्या वर्षे सहेराहेराहे वर्षे वाहेरासहेराहेरा सकेसरा अत्यु कुया द्वार्से सकें राजकें राजके राजका विषया स्नानु स्नानेग्याह्य देव में दा स्माने द्वा स्मान्य स्वान स् न्वें अःशुःनर्वे अःयःदिः श्रुआ । श्रॅनः हो नक्क । श्रॅनः हो श्रेनः हो । र्वे अहेर हेर हेर ने विश्वास देश्य ग्राम्येर ग्राम्य इवर्ता विवर्षे अर्थे हे वि अर्र्त्य विवर्षे अवा विरर्धेव अर स्व। यरःश्वेंत्यरःस्वर्रा वर्षेत्वाधियावेत्। वीश्वेरःत्वर्ष्यायावे यथा वर्षास्ट्रास्ट्राही वर्षास्ट्रास्ट्राहे दर्भ सक्रिया निर्ध अ.ब्रेंग ब्रेंग.क्षेट.र्.च.क्रांच.ख्या । व्रि.क्रे.चार्ब्या.चक्र्या व्रि.क्रे.चार्ब्या. नहत्र्रा श्रुवयावयायरार्थे हे निर्वे हेरात् निर्वे या विर्वेर

धेनड्रव विश्वरिष्ट नड्ड न्द्र विश्वर्य के स्वर्य के स्व

नर्नेत्र विनः विनु अः सवे नियायः विश्वेषायः श्रीः में में में प्रेस्या र्जुनः में अः वार्षेत्रः तु। ने

्र श्री | च्यादाईवाक्कीशान्याचारा १६ व्याक्कीयाः विवाधाः विवा

११ धुत्र-दिर-धेर-येग्रार्थ-परिदे तुः केत्र-धें ११ यात्रे नगायः में रा

सन्ना | पिन्यक्रियः १३ हिन्यदेश्वे (वुर्तन्यः श्वे विश्वे वित्राक्षेत्रः १६ न्त्री वित्राक्षेत्रः १३ हिन्यदेश वित्राक्षेत्रः १६ वित्रा | पित्राक्षेत्रः १६ वित्रा | पित्राक्षेत्रः १६ वित्रा | पित्राक्षेत्रः १६ वित्रा | पित्राक्षेत्रः १८ वित्रः वित्राक्षेत्रः १८ वित्राक्षेत्र

याब्र प्याः भूत्र भे क्षेत्र विशेष्ट्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र प्

गहिरामा नश्चरः ईसाळेगा श्चना दी। अन्यार्थर नर्धन्य न्यान्तरः व्यास्ता द्या स्त्रा न्या स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा न्या स्त्रा स्त्र स्त्र स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्र स्त्रा स्त्र स्त्रा स्त्र स्त्य

ग्रीसायन्त्रीय हैं तस्या ग्रीसायन्त्रायम। हैं नियस ग्रीसायन्त्रायन्त्रीय प्रमायन्त्रीय प्रमायन्त्रीय प्रमायन्त्र स्थायन्त्र स्यायन्त्र स्थायन्त्र स्थायन्त्य स्थायन्त्र स्थायन्त्र स्थायन्त्र स्थायन्त्र स्थायन्त्र स्थायन्य स्थायन्त्र स्थायन्त्र स्थायन्य स्थायन्य स्थायन्त्र स्थायन्य स्यायस्य स्थायस्य स्यायस्य स्थायस्य स्याय

वा श्रुँ न त्यस श्री अ तन् त्य न न न न में न त्यस श्री मान त्या से न त्या से ५८.क्रेब.स.स.बेक.योर्ट्र.चर.सहर.ट्री ट्रेड्रे.च्यंश.क्रेश.के.चें. धेर्सूर्यर हेर्पर हेर्रे । देव्य वर्षेय स्वाप्त या स्वाप्त स्याम् ह त्या हिन् मेशहे क्यान्य प्रमान त्या से सामानिय ह बुषादे नर्डे अष्ट्रदायन्याग्री नगदायाष्ट्रवा सराज्ञा नाजे नाया थे दास्या विनयानिकायान्त्रमानर्यान्यस्यान्यस्य विनयम् विष्यम् वयश्यम् श र्रेशः श्रेरः देरः। क्ष्राम् श्रद्धः व व र व व र व व र व व र व व र व व र व व र व व र व व व व व व व व मशक्त्रायार्वित्रावनातुत्रक्षित्रकात्यानत्वाकार्के देवे के हे कुषा क्रीका ह बुवाबन नेट में त्रायर्बेट है। रन ह चुट न वहे वे हैं द वया ह चुने वे नन्गामी अर्थेन कन अर्थेन नियान ने देश मान न् से मान हिन् ही से न रायादा यादायी भ्रीस्स्तर हुन्। शिदे के शायाद्याद वेश दे दे श्रुरा है। ने भूर देश राप्ता वृग्येदे रेवा अष्य राप्ता हु दूर द्वा अर अर अ कु अर । ने नित्रामी क्रिंवाचा ने देश क्षेत्र स्वाप्त क्रिंच ने विक्रें क्षाया ने विक्रें र्सूरा केंगरे सून हेन विनेत्र नार्वेन विरास्य पुरुद्धार या गरा नार्य नेदे नसूत माकु केर नसूत से त्या भीया नेत्र नसूत पर मुद्दा नि सेरा मिर्नि त्याने देन दर्गे राशेया देन यह प्यहार हरा छह प्यहार हैन हेना हा ८८. दे. त्यों या या दे अवस्य । दे अविव या ने या अध्य के द की अध्य या व स्था है। । दे : श्रूद : वाशुद्र अ: धरे : खुवा : उत्तर्वा : श्रूद्र : के। । के अ: ग्री : इया ग्रद्र अ: वदि :

नन्द्राया हे कुषा के सम्बर्धाया के सामी सेवा ह्या सेदा है दिया द्रा व्यानः भ्रेशःश्री । देवशाहे क्वाया केशः अर्थे दाना दिया केशः विश्वापादा क्रॅंशरेग्'राप्टा क्रॅंशःग्रेंगिरिरःश्लेयःयप्टा श्रॅंशरें,प्टा वे क्रॅंशयशः नम्यानान्ता मान्नामी देता भारत्या मान्नामी सामिन ८८। र्वेद्रायदे नसूद्रायदे के या इस्राया से वहिष्याया में नाद्र्या सुराया क्रुॅन'रा'क्स्रराण्चे'क्र्य'वर्ने'धेवा नभ्रवास्त्रराचे'न'विवा'तिवा'ति र्वेत'क्रन सासर्वेटासार्वेशामा वक्षेत्रेनासुम्बास्याची में वस्यापदी वाहेशासु ह्रेग्या वर्ष्ट्रसः व्यव्यादे प्राय्या स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वया स्वाया स्व क्षावर्षे दे.लु.स्ट.क्षे ६.बिजाजासियातक्षा सूर्यायक्षा यर. व्यासेशाउवार्श्रानान्ता नेयाववार्त्रात्य्यार्द्रानासर्वेदासे। हिन्छीः न्नर में इस्र र द्रश न वेद शे सर्ग पित्र सु न्य स्य र पि सर्ग स्य निवर्हिन्यारवा हिन्योशनन्त्र हेन्द्र हेन्द्र हेन्द्र हेन्द्र हेन्द्र हेन् ब्र-मी:क्षेत्राक्षान्य व्याहितः यथा प्रमुद्धाः विवा विद्यालयः ठेगानहें न्रायमा ने माण्य प्रनेताय सर्वे न्यमा स्रमान विवासे न्या स्रमान दे। नर्डे अः स्वनः प्रदेश देः दः स्वापः त्रापः त्रापः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः र्वेग देवे शुन्र स्र करमायर शुन्य प्र होते । के निर ख्राया हे विकर यानक्षान्य न्त्राक्षे नन्याक्षाक्षात्र न्याक्षात्र न्याक्षात्र न्याक्षात्र न्याक्षात्र न्याक्षात्र न्याक्षात्र वे येग्रायायाधिव वे । १ वया ने याहे या ग्रीया त्रया ने दे । हि दा ह्यायाया ह्याया या मिं में रवा पहिन्न ने नर्डे अध्व प्रम्य थी शुन् स्र रहिन स्र प्रम शुन्ति

हिन् इस्र र हे होन्। सम्बर में महिशा नन्ग रमा है वर्ळवा न मस्य रहा हिन्यहिरायाने स्वायान स्वायान स्वायान स्वायान स्वायान स्वायान स्वायान स्वायान स्वयान स्ययान स्वयान स शुःरवःहुःववुदःवरःवग्रीवि । विदुःद्वा दःदेवेःदुश्वःवःववःवरःवेशःवरः ग्रीशःविना ने वशाने नाहेशायिं राष्ट्रा नकु न्दर नवशादेन स्वते रहता नु र्या नन्ता हत्रुयःविन्तुरःविनानःवर्नायः अर्वेरः वया हे कुयः ग्रीयः यरः वर्षाभ्रेराताश्चराय। ८८.सूर.चर्ड्रात्रेय.वर्षातासिया.चित्रा यटात्राया क्रिंश्रिंश्याने त्यास्या स्वार्थि हेर्से क्रिंश्रें स्वार्थिय स्वार्थित हेर्याहेश्रह ब्रयाग्रीमान र्रे से व्यानरं या नरा व्याने व्यान या निया ग्रम् त्वापा स्वाप्ति । वर्षे अष्ट्रवायन् अग्री आ स्वापानम् वे पार्वेवः ययर:रुटा विटायशक्तिंशहे स्राप्तेशया दिःयःग्रायायराध्याः ग्रुःश्ले र्शेट्यान्ट्या वर्षेश्राष्ट्रवायन्थ्यात्रीश्रामुद्रानेट्यां वर्षाने वार्ष्यात्रीयात्रा हे नगद सुयाय। नगे र्सेट नग हिन ग्रेशने गहे सा सर्वेट नश नह न श सर्वेटार्टे। यदी पाहे अरवे प्टारे हुन हैं अरवे अप्टार विश्व हुन हैं । स्टार हुन हैं । ग्री:सर्केना:हःदशुर:र्रे दे:दशरे:महिश्रःवर्रेश:ध्रुद:दर्शःग्री:दुर:र्:शॅरः क्षे विनयः गहिषाया ध्रमा नर्या नर्या नर्या नर्या खेगाया सर वाश्रद्यायदे के याद्वायायायाया स्वातु स्वात्या विश्वेत्यम हेवायाया न्नो र्श्वेर ने नर्देश में नावर वा नर्देश ख्वा प्रत्य श्री श्रुव ख्र र कंद्र सम् र्श्वेर्प्याञ्चर्प्यर्ग्वभ्रेष्य । नर्षे अप्युव्यव्यक्षा भ्रामेश्वर्था । न्वीः श्वेर्प्य

स्ट्रस्ति स्ट्रस्य स

गशुस्राचा क्रिंश्वा क्ष्या क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्ष्या क्षया क्ष्या क्य

न्ये त्र न्यान्य वित् भी स्व त्र त्या व्याप्त व्यापत व्

र्रेदिः वाद्वां वात्वा विराराया विरार्भे वार्षे रास्त्र के वार्षे राप्ति राप रेग्रायः र्क्ष्याप्रयास्त्रम्यः सेन् रहुवाम्युरामे १ वर्गाः स्याप्रयाः स्वित्रम् यग्।परः सःगर्नेग्रसः ग्वितः ग्वारः धरः से दर्गे सःग्रस्यः भेरः। स्वेतः स्वेरः र्भूरप्रभूत्रवालेशपदि क्षेत्रायक्ष्रवार्ये स्थान्य स्थाने स नित्रम्भाविष्ट्रिया विष्याद्रीत्र अष्ठ्याविद्वित् ग्री कुवे विषय अप्तर येनशळें'त्सुःसरामर्शेयान्धेवान्धेवायाः कुतेन्द्रम्'त् सेमासानस् वेरामान्सरा मम् गर्सेयान्सेन इतामायोन्साने कुदे त्रान् सेया न्यूसाम्सा कुदे वर:र्:क्षुर:क्षे:क्ष्यायित्र:प्रशास्त्रायायार्थियाते। देवयायद्वर:कुर र्द्धेन् मुं कं न नु मुं द्वा द्वा या सून या शु मिले न न मा मिले न स्था से न पर न्र्रेश्यास्त्रम्प्रास्त्रेत्रः स्ट्रितः स्ट्रियः स्ट्रियः स्ट्रियः स्ट्रियः स्ट्रियः स्ट्रियः स्ट्रियः स्ट्रियः र्अं केम हेन परिवाक्तिया केन सेवाया निवेद निवस्त्र या हिवा केंया है वा नरग्रायायात्रे कु: ह्वरायेनयायीता धरादेव प्राया हेया शु: ह्वाया केवारेग्या अस्ति स्वायाः विकास स्वयः , पुर्ने दः देश यः श्रुव ग्रायव (ब्राययः श्रेगाब्द प्रदेश देग्य रहें या श्रुवः यासुर्-५,वनुवान्याम्याम् हे नहुन्यस्यस्यान्हें में नेन्द्रेन यटाकुः ह्यूराकें अर्थेना पुरन्य वाषा होता हो। वर्षा नगाय नर्गे अराप्तर हो। नवि'मा मालुर न्त्रेश क्षेमा भ्रुमा ने। नर त्यस र र मालुर प्राप्त भ्रम में स्वाप्त कर क्षेमा भ्रुप कर स्वाप्त स्वाप्त भ्रम स्वीप्त स्वाप्त स्व

ब्रान्य श्री स्वार्ध स्वार्ध निया स्वार्ध स्वार्य स्वार्ध स्वार्ध स्वार्ध स्वार्ध स्वार्ध स्वार्य स्व

व्यायद्रानवे से न्या अर्चे विष्णाय या स्वाप्त से वा से विया प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र धरःश्रुद्रअः घदेः अः वोः अअः ग्रीः ग्रुः धेन अः दृदः। अद्दः धनः दृदः। ग्रुः वद्वाः दिन् क्षेट्रायनम् नशः सुवाया ग्रीयिम् ग्रीयिम् विम्यानम् वान्याया वान्याया स्वाया सक्त निर्व निर्मे निर्म ग्रे शुन्वरमाग्रेमा इतावर्त्र हितावर सहित्र ग्रेन्स हिताया ८८.ब्रियाय.सक्सया.सम्बद्धाः भ्रीट.ब्रुया.क्ष्य.लुट.ब्री.यहेव.स.पर्ह्याः धरानेत्रायाने हें निभित्रो रेसाम सुरायात्रा सुराया नुराया सुराया मेन्सर्केन वै.मू.६८८। नाववालरावर्मात्र्वराष्ट्रवाराप्टा विद्यान वी मुन्तरळम् मुन्दम् नार्केश्वान नाया द्वारा है। नरःगव्यासदेः वद्वाक्षायाः याः भेदः गाःवः स्वायाः यो विद्युरः स्रुदः न्वर्याग्रीःर्यार्थेन्यस्थेन्न्यवियान्। व्यूर्याम्ययाने तुःन्येन्स्य यरक्ष्याययार्षेट्यास्नित्यायाते सेते प्रत्याम्विता नक्ष्राया स्राप्ता याञ्चार्क्षेत्रात्रासदे।वार्नेतानी हो ज्ञान्त्रस्यस्य न्यानदे से हिंतानी र्क्षेस्र स् केन्न् नर्गेन्यक्ष्युर्भासहेश्या म्वन्यप्याह्रिश्यीःहेन्युन्या सर्हेः <u> ५८. सके खे. ज. श्रूची श्रामा त्रामा न मि २. मी. त्रुची. श्री. मी. या १ वी. मी. या १ वी. मी. या १ वी. मी. या १</u> मुँग्रायान्त्रः मुँग्रायाक्ष्रयान्त्रया स्थाया स्थाया सुर्वे या पात्राया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स् यन्ता तुःसँगिर्वेदातुःसाद्गस्यसाह्यसान्दरहेन्।यहेरार्नेयायायासीयासा यायर्ने नायते व्यव मित्र की हो निवाय व्यव्याय स्था ही नाय सहसाय हा सा

या क्ष्यानिवान् मुन्नियान् स्थित्व स्थित्व स्थानिक स्

त्रवायाने त्राया क्षेत्र क्षे

न्वरःश्चेशःग्रीः हात्रयायाय द्वाराय स्वरः विद्या श्वेतः विद्या स्वरः स

र्देव'ग्राम् मिर्मेन श्वास्थायम् अपने स्वास्थायम् । स्वास्थायम् । स्वास्थायम् । स्वास्थायम् । स्वास्थायम् । स्व

त्राष्ट्रीयान्य विकास वितास विकास वितास विकास वितास विकास व

न्यः अवते हैं भेटा न्यः अवते हैं भेटा भूरः अवते हैं भेटा

- १ सॅं'देर्चे अर्थेन्य अपे'श्रेमार्वे दिर्द्या अप्रक्षित्र अप्यान्य अप्रक्षित्र अप्यान्य अपयान्य अपयाय्य अपयाय्य अपयाय अपयाय्य अपयाय्य अपयाय्य अपयाय्य अपयाय्य अपयाय्य अपयाय्य अपयाय्य
 - १ ग्रोरासर्गिनी विटानस्था देवे सेटा विष्य वित्र स्वारी देशे

नर्गेत् छेट ग्रेश्नेर अर्देग् ग्रे प्रह ब्रिंग् ग्रेश्नेर प्रिंग है प्रहेश है स्ट्रिंग है

३ श्वेन'न्न'न्द्रः श्वेन'र्यूद्रः मेश्वेन'र्युद्रः मेश्वेन'र्युद्रेन'र्युद्रः मेश्वेन'र्युद्रः मेश्वेन'र्यु

गर्थे दगुष इट वट ग्रट से तुरा परे वि सुगरा ग्रे में तुरा में विग

- र रे.श्वर-द्यर-स्यार-वाव-वावायन्य स्थान्य स्थान्य कुत्र-वर्ष्ठ न्याव-व्यन्त स्थान्य कुत्र-वर्ष्ठ न्याव-व्यन्त स्थान्य क्षित्र क्षित्य क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्य
- ६ अअस्तिःम्टाइयाद्याद्याद्याद्याः अवाक्षः स्ति। भुक्तः व्यानिक्षित् विद्याने स्त्रास्त्र स्त्राह्या स्त्राह्याः स
- २० हो। न्यास्य व्याप्त व्याप्

नत्त्रम् कैनाःश्चनाःनीःश्चरः ईस्याया तरःनाशेश्वर्तेः नरम्याश्वरं शेश्वर्ता नित्रश्चरा श्वर्त्वा श्वर्त्वा श्वर् स्रोश्वर्ता नात्रवःश्चरा श्वरश्चरा श्वरःश्चरा स्रोतः श्वरः स्वर्ण श्वरः त्रायस्त्रेत्वा क्ष्माः स्वरं स्वरं श्वरः श्वरा स्वरं स्व

म्बरक्ष्यत्त्री श्रुटक्षे में त्युरक्षे भी श्रुटक्ष के निर्माण के

यहिषान्त्री वात्रवादिः श्चे किवाषादित्यीः वात्रवादित्यीः वात्रवादित्यीः वात्रवादित्यीः विवाधिः विवाधि

शे खें 'बि' क्टें 'ट 'ची 'खें 'क्टु श ख़्द 'र दे 'याद द रे दि ' से 'दे या श 'दे या था 'दे या थ

८८.या ब्याया नश्य विया श्री स्याया देवे स्थाया स्याया स्थाया स्याया स्थाया स्याया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्था ग्रीशासर्वेदारावे विदार्केशासर्वेदारामा नामा वे कुराग्री द्वी सक्सम्य द्रायमेया वर्षीय भी देव द्राय प्राय के माया माया माया से देवा मा नेते क्रिं अने वा वी विं क्रु अप्रयेष के अन्दर्भ वर्षे वा अनु श्रु श्रु दिने देवा गी रेत वर जर जर हे केर वर्शे निविद र्थेन से विर निकु से र मी से त व र हुर नदेः श्रुक्षर दे द्वा वी वर द्वा केश सम्दर्भ दे दे प्या से शा केंद्र वर्ष सामित्र से स्व इस्रान्धिन नद्या नद्या सहस्रान हुत्य सेन्। स्टान्धन वर्षे वि नहेन्। वह्यः सूर्यान्य या जात्र्या व्याप्या या या या स्वाप्य ग्री मिर्दि सदे खु सुर ल मानव र रु अ र्चे द से दे र दे दे ने अ दि है त सूर अ ग्री চ্চিদ্র ক্রমার্ম রাম্বর বিশ্বর शु:ध्वाः डेटा र्वेट्यार्ट्ट्य अवेर हो रहेवा अर छो वाव अर ह्रद्या द्या भे अर गिनेश ख़ग्र भेत वर पर गुत हुँ । यहेश र हुँ र ग्रे के खंग गुत है। मंदे विन धें व सम्ब

 वह्रान्त्रीराञ्चान्त्रीराची निवादाळवा वावन वारानुवरास में राजे रान्त्री वार्त्री रेग्रायाहियासुर्वे केंग्रायास्त्र अर्यास्त्रियास्त्र व्यास्त्र व्या न्या वरावड्र ग्री सेससाउदार्चिया छ्याविसार्से। वरावड्र ग्री सेससाउदानुराद्धयावदा (श्रेषु ५ ५ ८ ज्ञवा श्रेदाविसायसार्वेदासे नुरा द्धयः ॥ नर्गे दः पे द्वा श्रेष्ठः न्या श्रेष्ठः न्या । स्वा श्रेष्ठः न्या । स्वा । स्व । स्वा । स्व । स्वा । स्व । स्वा । स्व । ग्री.पर्चैर.धिरश्र.बर.ग्री.योश्नर.च.¥श्रश्न.पर्टे.पर्ट.योयर.जा.पप्तिज्ञ.यपुर.टर. न-१न् नियम् असिर भुत्राचित सी हिन् नु में नु न सि मारा से नियम धर्यायहै गा हे द श्री श्री द रियाय द्याय या यी या प्याप्त र श्री या प्राप्त विवा नर्वेशःहेशःदेवेःहेनशःशःविषाःनर्गेषाःतशःवृःकःवेरःनवेःनुदःशेदःषठिषाः नर्जे अर्यायश्वर्ये निर्धित सेवा अर्जु दान स्वक्र तथा कुः भे सेवा अर्थी खुः र्थे दुरु न्वर हे विराय गडिया सुर र्थे न भूनरा विर कुर वी र्भे सूर हुर क्षेप्यन्यानवानी सेप्यवायन वेस्यान स्थान हम्य स्थान है। न्वायमायम् निम्म् निम्मम् सकेन्यम् म्विन् मुन्दि न्वा न्दःनश्चरः वः स्टः से 'र्नेन्' ग्री'श्च्रःश्चरः यः ळवः सेवा वी स्टः सबिवः छे त्यः सदयः न'नार्यय'हेंग्राश्चराक्षे। होतुंसुना'ने'न्ना'खुन'नेट्नो'ट्य'हेंय'गुर्याय' नकुन्यवर्धेर्वस्य क्षान्य वार्यायायाय वर्षेत्र स्वरिष्टेर स् र्नेन्द्रिं इस्र राष्ट्रिया कुन्द्र अद्भारती अद्भारती अदि राष्ट्रिया स्थार क्ष्रवार्थः विकाश्यात्र व्याप्त विकाश्यात्र विकाश्य विकाश

बूँ, साविकान्दा इत्याविकान्त्री, वावेव साविकान्त्री, वावेव सावेव सावे

ग्वित प्यार ((व्यार्शेव चुर रहेया)) ग्री ख़ुर ने या प्रिंट स्वेर नु या वयानवयःकयागुवास्टार्केयाशुः सदयानवसावहैना हेवाग्री नेट्रार्थेया **ॻॖ**য়য়ॱॸॣॸॱॸॾॆॱॸॺॱढ़ॺॖॕॱॸॱऄॱख़ॱॻऻढ़ॸॱॸॱऄॕॻऻॺॱॸॕढ़ॱॸॗॸॕॺॱॸॣॸॱऄॱढ़ॺॱ भे समुद्रासदे सुर दुषा है । धरान सूद्रा से दार में द्रा से दि से मुस्य सामी स रर वुर विस्राय देश यहें व प्रायम्य हें प्र वेष्ट्र प्रायम के प्राय वरावर्ळं वावयाची नवीं यायविष्ट्रमाने याहेवायाचुरावान्ययार्थे वाची केन्-न् श्रुन्-प्रदे विग्-ने जें नदे नगद स्या इस्य ना त्या सम्या किन्ने जी रन निवर्षेगान्यायर्केन्येन्यायार्भेन्यायार्थेन्यायान्यायः विवर् दयः हैं यः ग्री: प्रत्र अ: सुर: पुंत्र अ: सुर: सुं): प्रते: त्याः प्रि: शि: ब्रॅन्'ग्रे'प्देना'हेन'ग्रुन'र्ख्य'वन्'नेन'स्नायाणे'श्रेन'यात्रेन्'ने र्झेन्यया तुरः वरः क्षुः ववे वें द्युवायाया ववया कवाया ग्रीः दर्रेया वें देः रदः विदः वनाशक्या देनी यसन् र्रामशहेन्द्रम् नुमक्षयायाधेनशस्य स्व रैगान्दरम्बुद्ररावे विशेषान्त्रन्तुन् बुद्रासेन्द्रत्या न्द्रसार्थेन्न्त्रा

कुं सेन क्रेंब सेन न्या रूप निवास्त्र मुन मुन कुं निवासे स्वर्भ के प्याप श्रेश्चरतकरःश्चेर्णरश्चात्र्युः इयाची वनशावस्या स्ट्रिंगः स्ट्रिंग्चरेरविर्णश वशन्देशसेनिन्ना वर्षु र नर्ने शासर प्रमुक्त केवा या नर्हे शान्वी शा राः नेशः हेंग्राश्चितः हो। कुं क्रेन्यारः उटः विगः इट् विनः ग्रीशः नश्चनः परिः म् दिनादि दिस्यान् त्ययाद्वीयायादिन (कु यह भ्रायाया यह राज्य »धेःविन्कुतःवने वे वेन्देन यायायात्वा सुतःगुतःयः सुनः सुनः यायायायेः ञ्चाञ्चर विगाणिव विरा अर्कें में रामा अर्कें में रामा अर्कें में साम अर्कें में स ळग्रायिः विन्कुत्वः विनः याने नः याने याने यान्याः स्याने वा न्यरःयारःखेवाशः गुरुःखेन् स्याः यारः। वेन् स्रोतेः श्रुः श्रुनः त्यः क्रंतः नेवाः मी रदानिव है वदा विदासे दाने हैं दान हैं दान है ने किया महिने के दान पाद व (१३ सन्त्रा) अवेशमित्र क्षु क्षु न्वर न्त्रा है से निर कें र्नेगाने प्रज्ञान प्रविदायमें प्राप्ते अभाउन प्रज्ञाप्त होया प्राप्त हुन ग्रीः क्षें वर्षः अर्थेटः श्रुवः या इटः क्षें वा वाहिर्यः ग्रीः श्रुवः वर्षः क्षें दः वर्षः क्षेतः वर्षः र्यदे हेत्र हेट वडोवा नर मात्रा पदे मात्रा सुमारा ज्ञा मारा हिमारा व्रव केट दे क्रम प्रत्वा केवा के स्वा की क्रम प्रवे वट क्र ही रवस प्रत गठिगाहेशामहित्रासम्भागकानुमान्याकानुमान्याकान्याकान्याकान्याकान्याकान्याकान्याकान्याकान्याकान्याकान्याकान्याका र्नेन्यार्नेन्यदेख्युन्देश्चेत्रेत्रेदेर्ययाचीः ह्यान्यस्यार्येन्यदेश्चेत्रयः शु-तुर-विवर-रर-रेवे से श-रें इसश-ग्रीशवकर-पाव-रर-हेर-विकर-ग्री-यस्त्रमः भू श्रूमः वित्र न्नि न्य नित्र स्त्र स् चुरः निते हुँ रः नः निशे रः निर्दे स्था स्था निर्दे स्था से निर्दे से से निर्दे

श्चीरश्चरते। श्चीरणे स्वर्धान्य स्वर्धितात्र महिरान्य प्रत्रे स्वर्धा स्वर्धित स्वर्येत स्वर्येत स्वर्धित स्वर्धित स्वर्य स्वर्येत स्वर्य स्वर्येत स्वर्येत स्वर्येत स्वर्येत

त्रेशक्ष्मद्वी ग्वत्वयद्वयद्वित्वर्धियद्वयः व्याप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स

१. विवाप्य विवाध में विद्यापिया के वार्य के स्थापिया के स्थापिय के स्थापिया के स्थापिय के स्था के स्थापिय के स्थापिय के स्थापिय के स्थापिय के स्थापिय के स्थाप

श्वास्त्रात्त्रे स्वास्त्रात्त्रे त्याः त

ह्म इन्ने दु स्ट्रेन् ह्वं न्या स्ट्राया स्ट्रेन् स्ट्रेन्स्य स्ट्रेन् स्ट्रेन् स्ट्रेन् स्ट्रेन् स्ट्रेन् स्ट्रेन् स्ट्रेन् स्ट्रेन् स्ट

मिश्राचराष्ठः विवास्त्र स्वास्त्र स

त्रियः प्रायः विर्मेत् वेद्यः विष्यः विषयः विषयः

तुश्वास्त्रश्चार्ष्ट्रस्यते। नश्चार्ष्वितःश्चार्त्यात्रश्चार्याः हेशः नश्चेन्यायाद्याः न्द्रित्वितिःश्चेतः र्वेत्वाद्याः न्द्रस्याः न्द्रस्यः न्द्रस्यः न्द्रस्याः न्द्रस्यः न्द्रस्यः न्द्रस्यः न्द्रस्यः न्द्रस्यः न्द्रस्यः न्द्रस्यः न्द्रस्यः न्द्रस्य याहेश्या श्रेश्वार विवानमें दिश्चेषा त्र्यास देश क्ष्या स्था श्रेश्वा श्रेश्वा श्रेश्वा श्रेश्वा श्रेश्वा श्रेश विवानमें दिश्वा त्र्या श्रेश श्रेष्ट्र प्राची श्रेश विवानमें दिश्वा त्र्या श्रेश श्रेष्ट्र प्राची श्रेश विवास स्था श्रेष्ट्र प्राची श्रेश विवास स्था श्रेष्ट्र प्राची श्रेष्ट्र प्राची

मशुश्रामा श्रीश्वाने प्रमानि प्रमानि

निवा श्रुप्तः भी श्रुपतः भी श्रुपतः भी श्रुपतः भी श्रुपतः भी श्रुपतः भी श्रुपतः भी श्रुपत

मृया न इस्र अञ्चर नार विना ने अप र ने दे रे के ना वह र नी कु र ने स

विन्द्रभःश्चे क्षिण्यात्र विण्द्रभः विन्द्रभः विन्द्रभः विज्ञान्त्र विज्ञान्य विज्ञान्त्र विज्ञान्त्य विज्ञान्त्र विज्ञान्त्य विज्ञान्त्र विज्ञान्त्र विज्ञान्त्र विज्ञान्त्र विज्ञान्त्र विज्ञान्त्र विज्ञान्त्र विज्ञान्त्र विज्ञान्ति विज्ञान्ति विज्ञान्य विज्ञान्ति विज्ञान्ति विज्ञान्ति विज्ञान्ति विज्ञान्ति विज्ञान्

मुव्यवे गुनः ह्वाश

वि'गर्गरारे'स्र राम्पार्मि दिन् वेर की खूग्या संपेत् कंत्र का से सहसारावे पहिता हेत परि मास्या से दार् हैं माहे त्वा मेवे सावदासबदा दशन्याग्रीयानत्न। धाउमार्केयार्भेवाग्रीयान्ग्राम्ययास्ययानने विमा गर्धे अ हे : स्ट हे द : या डे या : शु अ : न व द : ह्व : द यथ : थू द : य : द अ द : र्थे : न ग्र द : निवन निवाद वर्ष वर्ष कुर्के निवाद वर्ष निवाद वर्य निवाद वर्ष निवाद ग्रीशःश्चर्याद्यात्राच्या व्यायायात्रीया प्रश्चेत्राची । विष्याया विष्या बेर्यस्त्रेंगार्श्वेष्वगार्थस्कृगार्श्वेष्टरकुर्देवेष्ट्वेष्यार्थेष्य द्यावेदः सविवासायते सुरिष्ठवासाने ते वन् सुवसान विविधे सेवा सुदि प्यमा बेसा र्वेवा हुनवगः भेर्व व्या हे सामने भेगाय व्यान्त्र म्या प्रह्म स्विगा मी विया हुने सा हे नहरमात्रमा हिरामार्सेरान दुः पेरामित वह हमाति से सामेरामित्र रादे रहा हुर वी विराधिया विदेश वार्ष र विवास विदेश स्वा सुरी विवासी या गर्वेद त्रेशिष श्रें र यहे श्रेंशिय र र यश्चें र

यादात्र अश्चेत्र स्थान्य स्था

कर में न में श्री मानी भू पहर प्रश्राण मानी में प्राप्त प्राप्त मानी में प्राप्त प्राप्त प्राप्त मानी में प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त

प्राधि के हि श्वर प्रकेष श्वर शर्मिया प्रमानिय । विष्य प्रकेष । विषय ।

१९८२ । ११२० हिन्द नेस्य निर्मित हैं नेस्य निर्मित हैं नेस्य निर्मित हैं ने

लट.यी ट्यूटश.प्र्यूजी

धु वर्गा भे स्मम क्षेत्र गारि श्चेत प्रमा तर् के निर्देश निर्

श्चे त्रा सर्वे तस्ता मुन तस्या वीत स्त्रा वात्र व इते त्रा सर्वे तस्त्र वात्र वात्

5....5

3....3

व्यालु कु ध्येवा व्यालु कु ध्येवा

चर्त्रः सः न्ध्रनः र्ह्स् अर्थः व्याप्तः स्थ्रा स्थ्रा व्याप्तः स्थ्रा स्या स्थ्रा स्या स्थ्रा स्थ्रा स्थ्रा स्थ्रा स्थ्रा स्थ्रा स्थ्रा स्थ्रा स्थ्रा

८८.८४.१५.४.५८.४.२४.२४.२५.५५.५५.४५८.५५४.४८.५५४४. नर्धेग्रायानेर'न्गें र'नेंद्रा क्षे'वर्ग्याया रुर्यास्य सुनार्धेग्रायाये <u>ॻऻॿऀॸॱॸॱॸॆढ़ॆॱॺॿॖढ़ॱॺॖॕॻऻॺॱॸॸॱऄॱॺॿॖढ़ॱॺॖॕॻऻॱॻॖऀॱक़ॗॱख़ॱॻऻढ़ॆॺॱॻऻॱॻऻॸॱ</u> नः धेंद्रः रावे अः वाद्र अः यः द्रेस् अः युः वर्त्ते व्यः वित्रः धुवा दे व्यः द्वे अः देशः यदे कुः कः वर्के वा न सुन् नावे ने न्या वर्षे वा वा वे नि स्वर्धे वा वा वि न्धन्याबिने प्रवेषा शे अन्य कार्य मानुमार्था होन्या हिंदा से क्या प्रविमा वुर्यनित्रः कुं कुं मुन्यक्षियान। न्ध्रन्यावित्रे न्द्रायवेयानवे के स्ट्रियाया ख़ूर नी हे अ य से पर्यो नर ना त्रा शुन्य में संस्था से ना नि न हो द पर्यो ना स वे रुषार्व्या ग्री र्ग्यू के स्वादेश सम्बन्धे र से दाया स्वाद्य स्वाद स्वाद्य स्वाद्य स्वाद स्वा गयःकेःविगःधेता

श्चेतास्त्रेतार्श्वेता

नर्द्रश्वाय्यतः द्वंतः नश्चेतः श्वेतः श्वेत

क्रियाश्वा श्रेया अया अया श्रेया यह रहे हैं ना श्रेयह ना श्रेयह ना श्रेया यह रहे या श्रेया यह रहे या श्रेया यह रहे या श्रेयह रह

र्मेन श्री र मी प्रमास अप्ता स्थान स्थान

न्त्रिंत्र तुः क्वा अदि श्री निष्ठा क्षेत्र त्या कष्त्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या कष्त्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या कष्त्र त्या क्षेत्र त्या क्या त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत

म्यायाक्ष्यास्य सक्तान्य स्थान्य स्थान

विश्वाश्वरायात् र्हें में शरहत श्री हिंदा से इस शही रेग्य श्वरा वर्त्युर्ग्यायात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र् यदे प्रयानुयाने द्वायायायाया प्रयान्य नुया ग्राम्य स्त्रेन्य प्रयान्य स्त्रेन्य स्त्रे नर्यार्थारान्द्र। यानुदाबेदाङ्खायळवाद्रान्द्रायान्द्र। यायाळवार्था यरः शुरु केर वर्षाय प्राप्ता दे वाहे वर वाव्याय प्राप्ता दे वया ग्रार हेया शुःळवारायवया दिराविःचदेःशेयराविचःतार्वेशःविदा देःपरावाहतः मासेन्यियकेन्स्रीतायानहित्यम्पेस्राधेन्यस्राहेन्। न्ययःह्रयाथ्यः यः इस्र अर्वे कुषः रेग्रायाव्व र्या गी न इव सेंद्र स्र मुगः हे नडुव से नहे सामर्पन न न न से मारा सुरा है न से न से साम है न से साम है न से साम है से साम है से साम है से स वियायरावगुरारी वियान्नेरारी अन्नियशहेरान्ने ग्रीयायकेषा न्त्रभूत्रम्थायने सून्रहेशःश्री

है सदे हैं में शर्म शर्म प्रदेश न्वर न्वर न्वर न्वर है । हैं न्वर हैं न श्रें ग्वित पर्वे र सुद र्से ग्रां शे प्रवेर ग्वित प्रवास मी।

न्वायः सर्वेदसः सुः श्रुं न्ये स्र श्रुं र्वे न ग्रुटः। रेटाव्यायह्याच्याचिट्यापदे हा विद्या धेन कन मन्द्र नियम् भी स्थान स्था ने सून निर्मेर सर्केन निर्मे व स्वे प्रायमा इस्रान्ग्रान्नो नदे वन्यान वर्ष्ट्र सुर सुर सिन्या है।। क्रे नाडेना क्रेंत पर्त्र राज्या में या यह स्था । है निवेद पर्दे द परि रे ने में नियम रे या गवाने वसा हुर से बर खूर नदे भ्वासा वर्षेत्रः वर्ष्यः वर्षः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत गडेग ए नर्गे अ परे दें दें दें दें अअ श से वें र आ। विशः श्रूशः प्रश्रा कुषः र्ह्मेत्रः स्रवदः द्याः नविदः यः द्वीत्राशः यादेयाः हुः समुद्राधराग्नुराहे। द्यो श्रेटाद्रा इसा वे उदा रवा हु हुरावादरा नगुरक्षेत्रेयम्बर्भेदिन्। ध्यानीक्ष्रित्य क्रियमी अन्ता वर्णश्राक्षान्ता दे रेवि अन्ता ग्रिके से वि अने वि अने वि सुन्ता सु सुन गी संतार्श्यायायायययाउदायार्थताविदायक्तियाद्वा श्रूरायात्रयया

न्ना वें राष्ट्री: अर्वि: नृत्वे: व्यें चुन् के: नृत्र के: वर्दे न् प्रवे: श्रुव: प्रथः कें अ: प्ररः

ठेशनिर्दिन्देशकेंद्रश्चेत्रश्चेत्रश्चेत्रश्चेत्रलें कु.केत्रेंद्रन्त्र्र्भेर्य्यश्चेर

रेट्राच हेट्राच क्ष्य विषय हो । विषय क्ष्य क्ष्

देवे क्रें भारता क्षेत्र स्वतः विद्या क्षेत्र स्वतः स्वत

नियानामित्र क्षेत्र क

गशुअन्य हैं अन्त्रेग में नुस्रम हैं हा

प्रिमःस्या यहूर् चित्रः क्षेत्रः क्षेत्रः श्रीत् प्राध्या स्विमः विद्या स्वीत्रः स्वीतः स्वीत्रः स्वीतः स्वीतः

न्द्रभा न्यान्त्रहें अप्ते न्यान्य हें प्रच्छे न्या है न्या ह

युनःध्वःमदेः क्रिंयः भेगः वात्रेयः वात्रेयः क्रिंयः वात्रेयः क्रिंयः वात्रेयः वात्रेयः वात्रेयः वात्रेयः वात्रेयः विवाद्यः विवादः वि

याश्याया हैं साधिया यी श्रीया यावी हैं साधिया पर्री पर्री स्रीय स

चलिया ईस्थाप्रमानी महें द्वालि मान्द्र त्वे न स्व स्था है स्याले मान्द्र त्या मान्द्र मान्द्र स्था मान्द्र त्या मान्द्र त्या मान्द्र त्या मान्द्र त्या मान्द्र स्था मान्द्र स

थ्या ईस्यायार्वियायस्य हिंदि यह स्ट्रिंगि हिंद्य हिंदि हिंद्य हिंदि हिंद्य हिंदि हि

यादात्र्यात्र्र्याः हे स्ट्रेट्र हे निया । देवे सह्या प्रत्या स्वर्थः स्वाया प्रति । देवे सहया प्रत्या । स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः प्रति । देवे सहया प्रत्या । स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः

त्रुणान्य केंब्राध्येयायात्र व्याप्त विद्याः केंब्रान्य व्याप्त विद्याः केंब्रान्य व्याप्त विद्याः वि

न्दः स्वा वार्तिन् स्वतः स्वतः स्वतः स्वा विद्या स्वा स्वतः स्वतः

श्राणम् त्यम् त्रि । विष्यम् त्यम् । विष्यम् त्यम् ।

व्दर्भः भिनः स्वदः वण्णान् सः श्वीः द्वाः व्यव्याः विद्यः स्वयः स्ययः स्वयः स्वयः

वन न्यायय पो भी या यहिं ना नी से विंदा के ना नेश गुर शेर इस्रश ग तुग्र ग रहत र्षेट्स हैं ग्राय । र्याद्युस्थाकुयाग्वाद्यायाचे वा वहार्वाची। यर:क्रेंदे:न्वयःवनर:क्रुंग्वदे:क्रुवःस्था अर्बेट वें शर्त र्दर देया सदे क रं अ श्री श्रा न्यात्यः भ्रे : बन् : वर्त् नः स्टेने : वर्ते ने यह वि : यह वि र्हे हे निचरमा ग्री कुया से सर्के ख़्दासा। क्रेंश ग्री प्रविद्य विदेश यह क्रेंद्र हिंग । श्रे भ्रेन्द्रप्रदेश्या क्रुशस्य पर्वेदश्रावश्रा श्रमान्द्रन्त्वद्रमा श्रीयाद्रम्या वार्ष्या यदेनया सुन्। र्त्ते न्दर्श्वेनश्रामदे सर्वेना श्रेत प्रवन् सेन्त्रा र्द्धेयानम् अह्रान्ये विवाश हे स्रान्ति वृता नेशर्या भुस्राया शुप्राया हेते होता हेते रहेता है

त्रभः सर्वे नश्ची । स्वार्थः नश्चित्रः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स

वाश्वस्या स्टार्श्वस्य स्वाद्धे स्वाद्

यशः द्वदः वीशः क्वतः द्वशः देद्रा श्रेशः द्वदः वीशः सद्वः द्वशः वशुश्रा वर्क्कः वर्दे दः श्रेदः प्रवेः ष्यः वेश उदः विशः हः षीः वद्वाः वेदः क्वाः

क्षु नेनाश्चरः विवार्चना नर्गोत्। १००१ | १६ हेत्र ह्रेंच ख्रूच ख्रुच ख् प्राश्व भुग्रा से न प्राये से न भू

हैं र्दिन्यः नुन्द्रभः अविद्युन्द्रभः व्याक्ष्यः नुम्यः विद्याः विद्य

स्त्राया स्त्राय स्त्राया स्त्राय स्

क्षूर्

श्रुट्रावस्थाः ग्रीः नाश्च्यः प्रवाधाः प्रदेश। स्ट्राच्याः क्षेत्रः विद्याः प्रदेशः प्रच्याः प्रदेशः विद्याः स्थाः स्थाः

ब्रिन्स्रायान्त्र्यावियान्येनायाः कुरान्यस्या तुर्या

हिंद्र रूप

शेर्स्स्याश्चार्यस्य स्थान्य स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्

ध्यतः विग

श्रुटावस्था ग्री वार्से द श्वास प्यें द स्ट्रेंट स्ट्रेंट या हिसा क्षेत्र

שביקבישאיקקבין <u>}</u>

कर्षित्रः तृत्वीस्रश्यदे द्रसे द्राण्यः। कर्ष्यते स्रुत्रः से वादे द्रसे द्राण्यः से द्रा कर्ष्यते स्रुत्रः से द्राय्यदे । कर्ष्यते से स्रुव्यास्य दे से द्रायासः से द्रा

श्चित्रश्चार्यात्रस्थित्रः श्चित्रः श्चित्यः श्चित्रः श्

वि'च'न्द्र'ळ'च'श्वित्'स्र'र्थेत्'स् स्ट'खुत्य'न्द्र्ये'खुत्य'त्य'ष्ठित्'स्य 'र्थे श'र्थेत्। ट'ळेंदे'नेस'म्बुग्रस्दि'श्चु'चेत्र'र्देग'र्थेत्'ग्रह्य व'च'न्द्र'ळ'नदे'सेग्'ग्रु'नेस'न्वेस्य

ग्रे. मूँ न्या शर्म व्या श्री विद्या के स्था के स्था

विशा भुःवा

धरः दा

र्रायवे से द्वा

वहिवा हेव श्री शु वा प्यें दश हैं वा श कर वी श वार वर्ष द्वे मद्भित्वाची त्यस्र श्रे दे प्यदः कदः विदः त्यः श्रुवा त्र्वा यापवि:८:४८:कट:मी:विट:प्रयथायाः श्रेनशायाः कर कुगा कर में कें अर प्या भेगा नह प्रमेता र्विटः क्षेत्रा कटः रवा वे से राया वे ती राया वे ती राया वे ती विष्य कर्स्यार्केश्वराया तुर्स्य वा निष्य र्विः र्के शिक्ट रचा वे सह श्राय प्राची श्राय रे ख्राय श्राय प्राची स कें श्रेंग'दर भ्रुग्राश गुःष नेग अ श्रेंद पदे रा राषराश्चेरावहेवाहेवावहेरावर्षे प्रवेशिकार्रेवावाराधेवाव्या कें श्रेंगायारेव बर से दावा वहेगा हेव वदेर वर्ळें दर्गे अ देव गरा सहसायायादेवाबरासेनावा ध्यायायुः व्यावेद :क्याया द्वीया देव वादा कर कुग्रास कें सर त्या विया दर्गे द वुस वुरा

कर्रा के स्वास्त्र विश्व स्वास्त्र स्वास्त्र

सह्या नसूरा

यर्दे र व र्वे द ग्री क्रिंय रे वा त्य हे न र य्यो त्य क्षेत्र क्षेत्

क्रेनःश्चरःरेवाःयतेःवाःहित्यःयः यहेवःयत्। हिंयाःरेवाःश्चरःयद्वाःयः ख्वायः यहेवःयय। वःदुरःयावयः यदेःरेट्ट्वाःयः ख्वायः यह्यः श्चयः यथ। क्षेत्रःश्चरःश्चरःश्चरः यहेवःश्चरः यहेवः यहेवः यहेवः श्चरः यहेवःश्चरः यहेवः श्चरः यहेवः श्चरः यहेवः श्चरः यहेवः सर्ने स्वास्त्र विद्यान्त स्वास्त्र स्वास्त्र

यहूर्यं च्याच्यात्रः क्रि. क्षेत्रः या अप्यायः यह विद्या हूर्यं चेत्रः श्रुवः त्याः क्षेत्रः ख्रीयः श्रुवः या क्षेत्रः ख्रीयः या विद्याः क्षेत्रः या विद्याः विद्याः

ने भिन्न हिन् किन प्रकन हिन् हिंस मास्य या। नहेत त्र स्थाय स्थाय

विश्वार्त्त श्री हैं अन्ति। ते श्री त्र स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त्त

ने दे वहेग्रासे द द्वर कुष

स्वस्या।

🛊 कुषःगुवः अद्विवः स्वः नुसरः से सः विः विवे । विश्व । । विवे वाः वर्ष्यः दिन् विवास हैन से स ने या हारे हिंदा । वा सवा सहन दर वी है सा ह्या निर थ्रा विह्राद्याय हैं वर्षे श्राद्या यो भी श्रादा श्रुवशा विद्याद ग्रादे स्थित हु गिहेर्यार्थे नदे वहेर्या | र्यासूत्रे दे वदे वसर वर्षे विद्यायदे कुस्या। र्ना अहें अ र्क्ष्ट्र अं अं अं प्रमुद्ध र्मा वी खू । र्मिन प्रमुद्ध सुद्ध यदःविश्वाराञ्चयश । स्वार्चरायशः मुदेश्वेरार्वेराक्षेत्राची श्चेरा । द्रहेदेः न्व्रिस्यास्य स्थाने । इस्याच्यास्य न्यास्य स्थान्य स् है। विर्मेद्ध्येवार्स्स्यार्थयार्थ्यम् विर्मेश्वर्थाः विर्मेश्वर्थः विर्मेश्वर्थः विर्मेश्वर्थः विर्मेश्वर्थः सळ्सरा वायद्वेन । नडुः स्वाप्नेरा नुः नेवा पदेः वात्ना । श्वाप्तदेः हैः याययाकेरात्वा विवादाविवाः श्रुपाठवाविवः वेया । स्वार्श्वाः श्रुवाः श्रूपाः स्वार् वश्वारेदिः वटा विश्वट्रास्ति शुर्के वार्या वत्यस्या वीर्या विदेशों स्विते येट्रम्ब्रिं भी विश्वेत्रम्बर्भन्यात्रम्भात्रम्भात्रम्भात्रम्भात्रम्भात्रम्भात्रम्भात्रम्भात्रम्भात्रम्भात्रम्भ नेयायायियोदाया । प्रत्यात्रागुत्रायाद्वेत्यादियोदार्थेया । कुःयार्केषायाः सिव्याद्युरःश्रीत्व। विश्वाद्यश्राह्यः विश्वाश्चात्रः स्वीश। विश्वान्तः सिव्या रे. इ.स. पश्चिम्यान्या । ग्रावासिवासिवास्य व्यास्य स्थान्या । ज्या न्या व्याप्त स्थान्य

यानश्चनयान्। गिरायान्नियान्यायान्त्रायान्यान्त्रायान्यान्त्रायाः ८८। अन्निर्यासद्यायह्रितक्रियाक्ष्र्रितक्ष्या क्षिर्यायारायक्याने प्रवासयाः ग्रम् । अधिव व अप्यान्य सदे में अ क्षेत्राया । यह मीय क्षु ह्या सदे नेया न्तरी कि:सर्वे दसःसमिते द्वीरमानिमाना समा । स्ट हिट क्रेंट्स स्यापि रेगामव्राम्य । र्रेन्ट्रिन्स हुन्देरे स्टायक्र स्थेन । १३ व्राम्य स्थायः श्रुवःरमाः समिव। । रसः १०: सः ५८: इः रः । । श्रेमिशः ग्रीः मिवृदः स्थाः नश्रुवः सः र्र्यराम् प्रदान्तर्रे ख्राद्या । वाद्येश्वायराश्च्यायम् द्वायाः द्वायाः वार्यस्य तर.चक्च.रेट.ची.वैया.ही विर्देशकातका.वृ.ध्य.या.लु.चेटका वियावक्च. इगा इ इ इगा में । इ गर वेगा न हें र छ दे र रें अ से र ग । सुव रें मा अ हें र होत्रक्षेतानी क्रममा । इत्यर स्रुव विद्योप निर्देशमा स्रुव द्या मक्षत्रकृत्धेता । वित्राम्भवित्रम् । वित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् । वित्रम् वित्रम् यदे यत थें त दर्श । स ने स रा थे हे स द से मास दर्श । सूत र मा सुत सुस क्रियाश्वास्त्रः कुर्ते । इ वळन न्दरः क्रिन्न न्दरः क्रियाश्वादन । विवाश्वादक्षेत् अस बास्त्रेरार्स्सिम्स्या हिंदाक्षेत्रासृष्ठीःस्रात्यात्याविदा दिवासीःस्यात्यास्त्रीत्रासेदा न। क्वि.र्जर ग्रेथ.क्वीश.म्.सि.य। स्थित.रमान्त्रेश.सप्तु.सय.लूय.लुया १३ यहूर. ययः भूर पर्रे या या । श्रुव रिया से विया राष्ट्री है भे या श्रुर्या नियमान्त्राम्यान्त्रीयान्त्रीयान्त्राम्यान्त्रीयान्तियान्त्रीयान्तियान्तियान्तियान्त्रीयान्तियात्ति

मशुर्मा । श्रुवः त्यों मशुर्मः वेषः वशा । शुर्वः प्रमा । श्रुवः प्रमा । श्रुवः प्रमा । श्रुवः प्रमा । श्रुवः प

र्दे। नि.ज.चर्टर.क्षेच.क्षेज.ज.चर्था विद्यायायर १ द्रुया क्षेत्राची होटा। मटारायादेयारायाद्वेटारायाद्वेटी । इस्वास्त्रेयास्त्रेयारायायाया होत्र हुं ति विश्वेष सुरिया विह्येष स्था से वार्से र वित्र र विश्वेष व अन् मन्य रे रे दे दिन्य । किया विभाग शुभाव रा र्शे ख्राय रा । थे न् के नामन यानिने ने विष्यान वर्षे के अपि वर्षे ने वर्षे वर नविरावगुराने। भिर्वानान्दावे देवायान्दायहेन। वित्यामा इसया शु स्वराधरायन्त्र । विषानान हिंदा देवा ना से विष्या निष्या निष्या निष्या निष्या निष्या निष्या निष्या निष्या निष्या ह्रियायायम् प्रमेत्। भियायात्रे पहेंद्र में विषया केत्र में । क्षिया प्रवर्त् स वन्यासवे सबस् । ज्ञाळे वा वा वे वा वी या क्षेत्र सम वर्ने न । यहें न वे न हें न गुःश्वःक्षेत्राया । हेन् ग्रेन्याकेन्यक्षययः विःवेन्या । ग्रुकेनायनः सुनः वेः रेग्रायार्थे। १८५ याचा केंग्रयाय वर्ष्याय वर्ष्या १५ व्यय हेंग्य विष्य

क्रूॅब्यस्यरत्रेत्। निर्नाशक्त्यस्य त्रिः धेश । निर्वेद्रश्रस्य सूर्वरम्या केवः र्र-निवा । दे ने या पह्या परि र्से या श्रुस है। सि निर र्से या निर हैं स रहें या व्या विशानह्रेन् स्वान्तः देशानस्वान्त्रमा स्वितः त्वा केवः स्रान्त्रमा यदे र्र्सि । इ यार विया यहें र रें व र्रेट रें वे रहा । श्रुव रया यो वे र्रेया पेव र्वे । नुर्वे निर्केशन्दर्यस्य केना विदेन्य निरुष्य निर्वे निर्वे । निर्वे । वर्स् अ.राष्ट्र.क्.के अ.श्याया । र्ह्न विट.वर्य अ.रट.ट.के.ला । मूट.विट.के. सर्वें में न्दरन्या हि त्या कर त्या के निक्या है निक्या वश्रद्भा । द्यावः भ्रूवः ददः वे : द्र्यः या स्वाया । या वे व : व खे : या वे व : व : के या व वसेवान्द्रा विष्यान्द्रास्त्रात्रात्रे विष्यान्द्रा विष्यावन्नना स्वराह्या नःश्रीम्या । नर्हेन् चुतेः स्रेन्यः श्रीमाः धेनः स्री । हे स्याः स्याः नर्हेन् प्रतेः खुवः ने त्यी निया में सियाया के या न स्वायायायया नि त्यया न से न त्याया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स यद्र हम्या । यर्भेट स्था सहसारा देश सके वा हे सार प्राया । नरुन्केंग् र्श्वे न्द्रम् मर्देन् सळस्य राहे या से न्यू केंग्य स्त्रम् । स्त्रम् परिः श्रेषास्य पर्देत्। । र्मामी रदा विवादी र्मामा ग्री । विवादा श्रुर रदा वि रदःचवितःभ्रदा विरःळग्राभ्रदःददःवःबदेःहे भ्रिदःदेग्रायःचविःययः नहस्रयासराम्यन्त्र । विदेश्वितेर्वेत्स्त्रूत्यासेत्यारा । हेर्यास्रव्यत्रेत्रेर বি-শ্রেম'বাশ্তুদমা।

येतुः इटः रेविः र्वेस केंग

अव्यास्याः अहं अः प्रमः होनः प्रांथी । क्रिंशः इस्र शः क्रावः विशः मनः तः । नर्हेन । ने न्य बुद सेंद सेद य द्वा । बुद सेंद कुद हे दस्य य पहिया । वसवाराधिकार्के निरावाहेराचे ली। शि.श्.वि.यदा जारा श्रीवा भिया बॅर-भेर-भंदे-कुर-भेर-दें। । दे-ल-ब्रें-ब्रेंग्य-नैर्भुह-८८। । १९४-ब्रेंग्य-र्गे. दे. यपु. श्वीयायायक्षेत्रा विंत्र ह्यायाला यो. प्रह्या विट. प्रदा विट. प्रया इन डिट थ्रे नमा विद्या थि यो प्रह्मा दूर महेंदा । यदमा दूर श्रीया इटर्ने ब या हे या हे प्राचीत हुय प्राचित हु या प्राचित है या इस्र राज्य प्रति प्रति व स्वाया स्वया स र्श्रे भी वा त्या वितर प्रत्ये त्या स्वयः यात्र स्वयः यात्री विस्त्र स्वयः यो विद्या स्वयः यो विद्या स्वयः यो व धेवा । अरवेदः ख्रान्दः वश्वार्ये ख्रा । व्रेंचः नवे नदः अववः वदः महिम । द्वा यदे भी मी मर्के खूर पर्देन | विंद भी मा मा मा मा ने स्वा । के मा <u>ख्र.स.लय.कर.मी । पार्रेश्व.स.चर्ट्रेय.स्थ.चर्च्यार्येश्व.रटा । परल.स.ज.ल.</u> ५'नडरानडु'र्से'वरी । इनम्बदे'धे'मे'हेर्'धेर्'वेश विश्व विंद्रें केर्ने यावरायरायत्वता । असूरायार्याद्रस्यायह्याहेराद्रा । भूवाद्रायेवा र्जिव्यक्तित्रान्दा विवायम्बान्दरक्तिकान् विदेन्द्राम् अन्तर हिरारे वहीं विवाहन विवादि । विवाही विवाह व

धेवा विदे द्वास्य केर क्वें वाराधेश विष्ट्र राधे यस क्वें या अर्कें वा कि वहसाराःभ्याः कुनाराधा । इतः वन् न से याः हैं खुन्या निह्राः रार्विकारे त्यापरा । पियो पाठेवा पी साहे सावित्र उत्। । भूरावित खुवासा ग्री श्रु र नर्दे । श्रे नर्हे र ग्रु हे र ग्रु है र ग्र रायार्द्धराधिकाकी । श्रिरायकार्या श्रिःक्ष्रीयकार्या । श्रित्रार्यायकाराः श्रेष्ट्रवायम्। दिशक्षिवाष्ट्रश्राश्चेशम्बार्श्वेराने। विश्वन्तुः दुनः विदेन्द्र उवादी । १९२१ नरायमें द्रायते राय द्राया थेवा । ११ वह सा हुता थे गो में सक्ष्याबिदा । श्रियायासुदार्थे, ख्यायाद्यदा । श्रिदास्याबिदार्थे, क्रुन'रावया | वार्ववा क्रुन'वावद'वह्यासे'सहसाउदा | वर्न'वदे'स्वार्यासे' सहस्रित्रित्। । धे भी मी से मित्रि मित्र म ग्रान्धेत्रायम्। अभ्यक्त्रार्ध्यार्ग्धेयार्थेत्रार्थेत्रायम्। हिरादिन्तित् न्यान्तियाया । इत्रसाधियान्त्यायाके स्टान्त्याया ग्रीया । द्या द्या न्रह्में न्ये क्षेत्र न न्या । द्वान क्षेत्र क ग्रानदे रूरान विवारवा । ११ राये श्रम् रापे भीव प्रामर्विव। । यहें रार्नेव क्षेत्राचार व्रिश्रां अप्ता श्रि देव त्या नहेव हेवा श्राय्य श्री स्थार श्रि स्थार श्रि स्थार अःक्र्रेंद्रासम् ।देवःयार्थयः नःदेःयादेशः गादेः ख्यारा । । ने नस्यारायदेः स्वाः श्रु र द्याद विया यथा। विर दस्याय धें वर्त्त क्राया । दे वे क्रा के कुराधेता विश्वा विश्वास्त्र माने स्ट्रिन स्ट्रास्य सुत्रा विश्वास्य सुत्र का

ये तु मिहेश मिते र्श्वेस किंग

के क्षें भिरामिक स्थान है त्या स्थान स्था

वर्गेग'न्टरें व ग्वव नर्गेन्य न्टर्। व्रिंग'य उव न्टर श्रेन्य उव। निश्व रा व्ययाध्य ग्रीते नहें द उद्या । इस ग्राम्य गहें द द ग्रीय हि स्वा । कि के र नर्श्रेव वर्दे र श्वेर न दर्। वित् पर सर्हर या पर श्वेर र पर दर। विवाय ८८:अन्यः भेवः नर्हेटः यः ५८। विषः नर्हेटः देयः यरः हेवः यः ५८। व्यवः ठेगानहें न न ने ने स्थान है अभी अप । स्वार्शियाने विश्वान में प्राप्त करा । र्नेन क्रुन्से ख्रायरे प्राची विष्यु नर्भिय हिं प्रावेश्य हिं प्रावेश्य हिं प्रावेश्य विष्य क्रम्भार्यात्रविवार्श्वे भूराद्या । भुगम्भार्श्वेव र्यमाभेव द्वार्थे नहें । । यह नविव नहें न नवे कुव हे नवे। नियाय न न ज्ञान पेव हवा । इसे वर्षेव ग्रेन्द्रमे द्रायक्ष्व ग्रुद्ध्य । यक्ष्य स्य द्रिव साद्रमे मुव धेवा । क्षेत्र न्दो न्द्रेशन्द्रो नहीं न्द्रिया स्वर्ध्य न्द्रो न्द्रिय से अत्यान्य स्वर् न्दःसुयः हुदःस्वः वहवाराः सद्। सिंद्र्यः न्दः वे स्टिंयः वाह्यः वये वर्यः द्ये। शुर्द्रायक्रमकेरास्त्राप्त्रम्यार्भार्द्रायकेर्द्राचेकेराने भेव भेर सम सम्यापित । वर्षे र प्येर प्रमाय पर प्रमाय प्रमाय । द्यादगुराबेटावादगार्देवादन। वि.च्.र्ट्यादनायद्धरयार्श्वेरादगे। वि. धिन्दे से सुस दु महिया | दिये धि क्वर दी न्द्री न धि हा से हमाय मन्द्र र्ट क्षेत्राच न्या । द्रे देव सके वा द्रम्य के न क्ष्या । भ्रूव द्या स्विव ही : श्रुव:इ: परा श्रुव: क्याने याव मुव: र् त्युरा श्रिवः रेवे स्वायक्र यावर ग्रथा ग्रेन श्री विंदर्गर वें रूप रेग्रिय मुस्य विराधिय सेर वर

में अनि। । निर्मे देव मार्थाय में निर्देश मार्थिय निर्देश मार्थाय में निर्देश मार्थिय में त्रा | त्रे कुत्राम्थयः वेदः वर्षे ख्राद्रा | दे ख्रातुः श्रेम्थायः वकुतः इस्थयः र्शे । । नविव सूर सूर तुरि सूर सत्त्वा । सर्द्ध र र र र र पर र पा सर्द्ध र र र दर:अद्या । यर:द्या:वाश्य:दर:देश:यर:वाश्यः। | स्व:वाश्य:वाश्यःवाश्चवाशः ग्रे ज्ञः र्वे प्रदाष्ट्र । विदेव से प्रदाव प्रवास ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा विद्या । विद्या विद्य वडा वित्र वरुषान्त्रसुप्तारीयाषास्त्र वुत्र प्ता हिषासु हु। हिषासु हु। वि ग्रा व्याया सक्ष्रं रया ग्रा व्याया सक्ष्या ग्रा व्याया ग्राविया प्रायं विया प <u> अत्रुव दर अळव हेर प्रा । अळव हेर अळुर अदर अत्र हें ग्र अर्दर। ।</u> न्धेर ग्रुशन्धे न्दरहेगान्दर न्यवा । इद वन न्यव न्दर रच हुः श्रु । श्रे र्शेर-क्वेंग्'न्ट्रियायायव्रव्यव्या विष्यायव्रव न्ट्रिकेंयाव्रव सेंट्रा वर् दें नियाया हो निर्देश की । है वर्षे अर में की किया है निर्देश र्ट कियार्ट रेट रेट रेट विश्व विश्व स्थार्थ स्थार्थ । स्थार्थ स्थार्थ । स्थार्थ । स्थार्थ । स्थार्थ । स्थार्थ । वनेनशः भूनः चर्चे वर्षे वाः मैनः नः भ्रवाः मैवाः भ्रेः नर्भेन् भ्रेनः मुनः ग्रथा हो न पर्वे व्यापिता । ने प्ये अवाप वार वर्षे वा हो न न । ने प्ये अहे अ यः बुर्यायमः ब्रेन्। । ने न्दरायम् त्य्या स्टम्म मेर्डिन् न्दर। । ने प्ये हे या शुः महः यायह्या देखी व्यायायह्यायादा ।देखी प्राप्त खेलादे वर्षीयाया ।देखी

न्ग्रेशः मुदेः श्रेया । धेवः ग्रेः अर्द्धः शावाश्यः पदेवः द्वयः या । विनः अपिशः शे दुवे हे अ वज्र राज्य । जिले दुवा से सिंदी पाल् दर् पा ने पाले । है इन्यरान्द्रार्श्याचेष्या । कःग्रेवायाः सुवः त्रुः यर्षेदः व्याः प्रवा । देवाः ययः श्रेवायहेवारासेसरायहे। । नहीं नदे इस मुहसान हुव विवादि। । नेत न्ने 'धे' क्रुव क्री क्रिया श्रें र 'या । अर्द्ध र अ'या अयः वर्दे 'न्याः पेव' हु 'या । श्रे नर्हेर्-इदे-र्देन्दे-र्दे-धे-धे-म्बुग्या । नर्गेर्-धदे-कुद्र-रे-म्बुग्य-कुद्र-लुरी । यर्ने अ.र.र. अ.यर्ने अ.यर्ने अ.य.र्ने श्री । अधयः रेची. क.ले श.क.ले श. ठवा । पात्र या गारे वा रहें वा राष्ट्र वा स्था । से साह्य । सि साह है। क्रिंस्ट्रिंगः देवीयाया स्ट्री विष्ठाय हैया वा ब्रिया राज्य हैया वा ब्रिया राज्य हैया वा ब्रिया राज्य हैया ग्राबुग्रथं उत्रा । नर्श्वेदः देरः नरुरा हे हे स्वायदी । ग्राबुग्रथं कुदः न्रेटी । ग्राबुग्रथं कुदः न्रेटी इस्राम्बर्स्यापेत्रा । ३ रेग्रस्य ५५ मा विद्याम्य देश यात्रकाराधिका । यायाहे प्रयागात्रायायत्वा । पे वे याक्षया हो प्राक्तव हु वर्रेत्। दिवारान्द्रः ग्रुः नः व्यव हिवा स्य वर्षेत्रः व्यव वर्षेत्रः वर्येत्रः वर्येत्रः वर्येत्रः वर्येत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्येत्रः वर्येत्रः वर्षेत दरा दिवासदरग्राचरम् अवयावस्य । विराच व्याय दिव दिव विवा श्रुम् । १६ राम्भूव १ ते ते १ ता वहामि । १ त्या या सम्वासि । १ त्या या सम्वासि । व्यामें १ क्षेत्रार्श्वेरमारमे वियासवयन्य । यहेरिर्द्रमासवयन्त्री ८८. ट्रेया १३. ट्रेया थ. श्रें अ.स. पश्चेर. यह श्रें या १८ हो १८ हो या है अ.स. यह या १८ हो या है अ.स. यह या १८ नर्भेर-१८। । गहेशामा नर्भेर-धरे क्रिय-१८ गहाया । इताया ग्रीमा विया

महरमित्रीम् मेर्निम् वर्गेना छेराया । दे वे वर्गेना यदे क्रुव धेव वे । छुर न सर्व कुर वर्गुर वर्गुर्रेक्षा विष्याउव कुष्वाया हेया पवर द्वारा विष्या विषया विषया इन से मैंग्या विनर र्राविव र्नर विषय र्मि । स्राप्त वि रि वे र्क्ष अश्वर | दिव गावव कु या वर्गे गा है पुण श्वरा । है पश्चर गुरे प्रस्था वनायः र्वेत्र नर्गे द्वया । दे र्षे सून हे द्वयाय उदा । द्वयाय रे वर्गेर्न्सन्। रिवामाववानगेर्न्यवे क्रवावेशाचा ।गुवाह्याह्यायराश्चर न्दायन्य दिशायान्दाने अभित्राया दिशानेदारी विद्याने नम्ता । अभ्यः वेदायवसंभियायात्वी । रितः रूपः सक्दर्यायमः निर्धेतः वर्षा भ्रमा । व्रिमा के रामाद विमान्य महेव वर्षा । विद्राप्य परी द्रमा यदे मुद्रा विषेत्र क्षेत्र विष्य क्षेत्र क्षेत ठव.र्टर.की। १६ ध्रेच.ची.रेची.र्टर.रेमु.ठव.कैंग विक्टरम.क्र्य.मैंग.चुय. वर्ते दर्जे अर्थे वा सेवा अरा श्रुवर्थे वा पा उव दि । इस दि स्वा तु वा वा वा वि कु र्ह्मेना वर्गा । यार विया कु यावव उदर वर उंगा । यार र र र में रें रें हेन्। क्रिंव यने वे श्रेन्य वन्। श्रिवन के अ श्रेन् श्रुमहेशन्म। विश्वस नुःस्टानी दिः र्वे अपिक्षेत्र प्रदेश्चेत्र पाउत्तर्म गासुस्य । ३ दिसः र्वे गान्तरः विगानिईन्वर्मन्त्रमा ।नेन्द्रस्य सदेन्द्रस्य सदेन्द्रस्य मान्यस्य ।नस्य सदे द्या ग्रीया नहें दाया प्राप्त । दि वि नस्या नहें दा मुन प्राप्त वि । श्री प्राप्त । गिवि शन्तर्ना । वित्र पर शन्तर शन्तर भेवा । श्वें त से त स्थान हैं त

मुन्दर्वि। १३ वर्हेर्यदेर्देर् देशेर्यहेगाहेन् मी। अळस्रश्यस्य नम्यः देश'रा'त्र'। | ग्राम्थ'रा'नाई न'रादे'स्य' ग्रुट'नादे। । ३ शेश्रथ'त्र' थ्रव'शेव' है सूर पर । विहें र हिते रहें र रें रें रें रें रें रें राया विस्थानर विवार हैं नन्ग्रायात्रम् । नर्हेन्यास्यानन्ग्रायाः क्रुवानु । यो अस्याध्याये अस्य येन्स्यःहेवायिष्या विनःवहेवःस्यःहेवायविवःश्चःख्वा श्वियःन्नःरेवायः इरारेशाइरावड्य । अवावअावेशार्शेग्यायास्याहेगायीः यायवाहेदावदेरा क्रेंबर्ज्याकेन्द्री। के जेन्द्रांक्ष्या जेन्द्रम्था केन्द्र्या विद्वार्था कि वयायःवियाःया । यहेव वयारे सम्भान सम्मान में प्रमान हो । सम्मान सम्मान सम्मान सम्मान सम्मान सम्मान सम्मान सम्मान धेवा । न्रें अन्दरन्दें असे न्यक्र कु है। । इन्दरेन् हो न न सुराधेन ने। । न्रास्त्रिस्य स्वास्त्रिक्षः व्यापिष्ठेय। । वेष्ट्रस्विक्षः कुः न्रास्त्रेयः कुः । वेष्ट र्रे लायार इसामित्र है। अन्तर हेर कुर्र लाया है। अन्तर हेर कुर्वा इयापिश्राही भिर्ने ने ने किया में निया ल्रिन्ते। विषायग्रीम् म्रान्निन में निष्ण में न्ह्र्यास्त्रेन् कु.जापिया । स्ट्रम्यसास्त्रेन्द्रम् विचानस्यस्त्रेन्। । यत्र रह्न बेन्द्रम्भद्रभः व्यायेन्। विन्द्रम्मण्याः कुःवेः इस्रायिन्द्राः विर्द्धिणः प्रदेः कुं,याड्या,अ.लुवं,रयाया ।र्ट्स,अर् कें.केंव.यकूं अस.सस.की ।याश्याया. अक्र-प्रते कु.ता.की। डिट.तयश कु.तयश खेर.हया.त। वियश तुर्वे

८८. र्रम्यायास्त्रेयास्त्रा । र्रम्यायास्त्रे कु. ५८. सक्त. कु. हे। । यहूँ सथायस्य र हो. नन्तरुः दुवार्वोः 💡 नससः देवः श्रुसः वेदः सः नहेंदः सम् । एसः द्रार्दाः नाः वीः नम् वनश्यश्यश्रा वि नि नम् त्रारा स् रेवि क्वा । त्रम्प्रम् स्यारा स्र से गिहेश। । दें दें दें दें हैं दें अर्क्ट प्योनश्रमित क्षेत्र। । क्षेत्र हें दें के शस्त्र हुद यहें अर्थ विषा हें न्यदे विष्य ग्री अर्भेन पर ने । विष्ये मुन्य ग्री अर्धन हेन धेवा विरामन्द्रिके से विराद्या विर्देष्ट्र मदे स्वर्थ सुन्मन्द्र । सुन् यदे क त्यम न में द्राप्त वि । भे द्रो उत्ताय विवा में देश प्र विवा । भे द्रो उत्ताय विवा में दिस प्र नर्गेर्न्स्य ने न्वायी वहवा होर्न्से इस्य देस ही याने ग्रिस हो देसे न हिन्य र रुवा भ्रियान र हिन्य दे के वार्श्वर है। । नवाय नदे कुन ही सक्दिकिट त्रीया । निर्देश विच ना त्रुवाश नह्नद त्यश तुर विह नि वह वी । नमयायदे वर्षुरानाया । नहेन नमा द्वी थे ख्रार्मा है। विन्याय क्रिया न्याः द्वेत्रमितः प्रवेत्त्याः ने द्वे क्ष्य्याः स्व क्ष्यः स्व व्य व्या स्व वा स्व वा प्रवा विवाद्य व न'न्न्। । श्रुट्रेट्रे शे श्रुवावित्वित्ति। । अत्युट्रेट्रिव्ये अस्ति। नम्ता । इं ह्निन्देन क्षेत्रानहेन देवायायदे द्रयया विवेदया सुरस्टिन क्रॅ्रेन'रावे प्रवा वा वे निहें न उन ही क्रुन हे वा हे वा क्षेत्रेन में निहें सा शुः स न्ह्रीयम् । ने केन न मुन पर मुन पर मुन पर मुन पर मान मुन पर मिल प यारा । दे वे क्राचर्या क्रिक हे गडिया 🛊 चु च त्याय विया क्रियायाया । श्रीया नःले ते क्षेत्रयायया ग्रम्। । ने ते क्षेत्र्य हो न स्व क्षेत्रयाया । गुत्रय

कुव हे जिंचे व हिन हैं। । व व हैंन हैं व है ने हैंन न राया पर हिन है ने हिन स्वाप हैं ने स्वाप हैं ने स्वाप हैं लर. २८. मु. वर्ग विर. तर तस्यारा सूर्य सपु. ट्या. में . कुर में य. मी. हे. यात्र अप्यायाया । यस्त्रें त्र त्र अर्दे तः या वतः उदः वदः उद्या । यस्त्र तः दे वे नर्सेन में मार्के वा विष्यायान सेना मार्थियायान सेना विषय नर्सेन यदे क्व न्दरम् सुर्या । । अर्दे व मार दुर में अर्दे व मार दिर में व मार हैं । श्रुर्यायम् । नर्हेर्द्रित्र्यं सम्बन्धा । ने ने श्रुर्यं कुर्यं कुर्यं प्रित्रा कैवानी वर्षेत्र अळअअ शन्द्र अेवा विन्द्र केवा वह वे श्रुर वन्द्र । वि न'मिडेम्'न्र' तम्बाब'सेन्'म् । ज्ञु'मदे'धुब'रुन्'सुर्'न'न्रा । देस'सर' उव दिरादेश सर वर्गे वा विषय श्रेव विषय । उव दिराद्या १ वर्षे दि । इति । र्ट्यन्र्न्स्कुःक्रेव्य्वया । विद्यक्त्यायः विवासः क्रायायः । विद्यस्य क्टरमायमायमायमा स्रिन्मा हिन्मर नहें न्यते क्रुवा पिन्न न्वरेनामा र्टा ग्राम्या कि.लु.विर्यराम्ह्रा । के मह्रेरास्ट्री विराधितामा रुट विवा सर्द्धर अर्दे द से द रिया परि द में विवा पटा । वर्कें द सूर हे रेवा या ग्री क्षें त्रमा । मर्द्धरमायमः क्षें माय सहरमा क्षें मास्त्रमा । प्रति न सहरा क्षेर् सर्द्धरमार्श्वेराविमा । वयाया त्रास्त्राचीर स्वराद्धर हो। वियाया प्रदेश हें मा न्दःक्रिंशः ठवः त्याय । यावे या हेया हेदः नुः सहसः नुः हेय। । ने वे व्यायः नवेः क्रुवर्र्रित्। ।गाले मन्दर्द्राचर्याया ।गाले गाउँ गार्थे व रहत्याहे वा दवायाद्या । इसादवाया इसाद्याया व्यायाचा । जुः नादवायाद्या अर

वयातार्चयाः है स्टायशान्सवासदास्ताताता विहेन्याचेन्या भूवशः श्रेव ग्रम्। भ्रिव श्री प्रवर्ग श्रेव पर्देव पर्देव प्रवर्ग । भ्रवश्रेव पर्देव पर्देव प्रवर्ग । क्रुव हे मारेवा । श्रे मार विमान हें न मावि मा बुर न ने मा हिन खुंया क्रें व स्थर ब्रूट्य पटा दिवायाके नदे पेवा किन्न हेना हिन्म ब्रेंब्य में ब्यान हेन्। सव्यन्तराक्षेत्रमानी विषय में द्वारा । इस्त ने निष्य ने निष्य ने निष्य नेशा ।ने निर्मासक्ष्र्रसायि नस्त्र नुते न्त्री ।सर्केना नुस्तर निरम् गर्या ने ने ने ने ने के महत्र मुद्दा मुद्दा ने निष्ठे या । यर्के मान्दर यर्के मा से द देशनभूवर्ते । वर्षे नर्हेन्देवर्ने न्दर्यक्षेयानाधी । धेवरव्यक्षानाधाराधारा र्श्वेर्या विश्व विष्य विश्व व र्यः श्रेयः श्रुवः धेवः है। विवः दुवः देवा राष्ट्रेयः राष्ट्रेयः र्यः श्रेयः र्यः । श्रिवशः सद्धर्यः र्यः श्रेयः क्वित्रर्गतिशा । हे हैं या यावतः रहः वी वययः है ता सूत्रा । श्रुवः न्याः हैं अर्धिः न्वें अर्देवः ने। । या अयः यरः अर्कें वर्धः न्वें न्यः क्वं वर्धवा । दे.लु.क्र्यायवु.म्यायन्तरा । ट्रियार्ग्यात्रे व्याप्त्ययाग्वा । यवः द्ध्वायवायमान्त्रेना विवादायायये। विदायमान्यया । यान्या ग्रवशःशुः नस्ग्रायः प्रदा । निर्हेतः देशः स्वित्रयः एयः दिर्धाः देशि । व्याः सः म्या क्षित्र विष्ण विष्

ये तु मार्युया सदि र्श्वेया किया

अः क्वान्तानः क्षेताः श्रुं तर्थः वर्षः वरः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्ष

عدما اعدم فراعد عديهم عدا اعدر فري عديهم عدا ا कूर.कुर.श.कूर.बेर.र्जय.योशेश । है यर.श.कूर.राष्ट्र.बेर.र्जय.या। यर.रा. याडेया'याहेरा'याशुस्र'यवी'द्या । में में याहेरा'याहेरा'याशुस्र'याशुस्र'यवीम्।। न्द्ये नमा इस म्याम्या नर्षे व्यापित् । । व्याप्त स्वर्था । व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्य रे'र्षेद'र्रदे'र्न् हे'र्न्जुम ।म्रासुस'रे'र्षेद'र्रदे'र्न् हे'र्नम्सुस्। ।निने'र्षेद् गडिमा क्षे न इ न इ त्ये कि मिल मिले अ लिंद न हो न न सुरा । न सूर पर । न्द्ये:र्रान्युम्य्यार्थित्। । के क्रिन्डिन्सार्केन् बुन्स्य विष्यायाहिया वर् ही अविश्व विवासवयविश्व वर् निर्मासवयविश्व वर् याया । व्यूर्यस्य बराक्ष्य क्यायायाया । ३ क्याया स्थाय वर्षा स्थाय नःश्री विवासर्वित्रस्याधेवासर्वित्रस्य विवस्याविवायाधराधेनास्ते । ज्ञा नगदेःगव्यान्यान्वरायार्थेन्यादे। विराध्याः कुनः हे नहे नदेः मह्या । नविः गदिः द्व्रु अवः सेंद्रः सः द्रा । सम्रमः सेंद्रः चरः सम्रदः चित्रे अः गः द्रा । विवाः यानिकान्द्रभाद्रम्भामिक्षा । यावकामासुयायाध्य प्राची विकासिक्षेत्र। । यह स्ट्रिन कूरे. वटा शाक्रुं रात्री विष्ठे अ. पे. श्री म. प्रमाय वि. योष्ठे अ. प्रयोगी है कुर्या अ. मट र्के. शरु . शवतः श्राचेता । व्री . शरु . व्रूचा श्रा श्री शर्वे द्वा । श्रवतः व्रूचा । सबदर्गादी। हिन्चेन्या ब्याया सर्द्धरया हेन् श्रेन्या । ने दे ग्राव ए बन विष्याचेन्। भिरायाम्बर्यान्याक्षेत्रायाच्या विष्याचेत्राचेत्र मुन्दर्यश्रम । । मद्रम्य याद्रया न सुर्या प्रम्य प्रमेश न सुर्या

यदे प्रचे प्राचाश्वा विषय पश्चिम स्थान स्य नम्भान्द्राम्य स्वा । रे.रे.नभूव पश्च रि.से । के क्षेत्राय पठ्टा गठेग'गे'त्र : क्रंत्र'त्। । इर ध्रुत श्रु कें ग्रथ : यत क्रुंत र्त्। । प्रश्रेश : यते श्रु लु.भिय.वुया.को विश्रेश्वरादे बिर.केय.भिय.विश्व भाष्ट्र । कि क्रुयाश्वराद्य मट.चर्ड्सेचा.क्ट्रचार्याच्यटन.होट.चर्ड्स्चा.टटा । प्रट्यास्.चर्ड्स्चा.संद्रा.बंट.र्ज्य गशुरु। । क्षेत्र: नगदे: हिन् : यन्य विव : याव्य न्गवन्द्रा विवित्रसदे ग्रुन्गव इसाय विशेषा । ३ केवाय वर्ष वितित्वा में निस्तर्भ में विष्य निष्य विषय स्थान स् दे। । नः यर महिन मी मुन्य प्येन। । इक्षेम् अप यह मिर देवा से द्राया से द्राया से स्व ८८। वि.यबु.अवयर्ययेश.ब्रियोश.गीय.यशी वियोश.यवीर.वीयाश.क्रियो. के रेग्रायास्य । श्वायसंहर्यायायसार्त्रेगास्ताया । रेजे ग्रायाय वारायिया स्त्रिम् । श्रिम्प्रान्द्रिम् न्यानिक्षा । पावव प्यानिक्षा । प्रावव प्यानिक्षा । प्रावव प्यानिक्षा । अर-८रा किय-२०र-महेशनाक्तान्रान्ता विरायम्बर्धकेर-१५ यन्ता निरमी के न्त्रावनशाहर सँग्या । सावसाय सँ सँ वि इस निर्मु यथा विर्मे द्वित्रयः सेतः स्वीत्रयः सुर्खेत्रयः प्रित् दि द्वाः से सिर्वास्यः व्यःविवाया । १ रग्रम्यः न्दः वावयः न्दः धेः वो । इयः प्रमः वादः न् ग्रु-द्रगायःच। विविष्यःश्रीम् श्रायः स्वानश्रुवः वदी। विग्रुस्थः श्रीम् श्रादेशः

महिश्वा | महिश्वा | दे त्या न द्वा स्था न स

अवानः ग्रितः वर्षेत्रः वर्ते वर्येत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्येत्रः वर्येत्रः वर्येत्रः वर् धेश। अर्देव धर क्रेन हे अन्य क्रेन क्रिया विष्य त्यायान क्रिया क्रुना गुवर्ळें गुरुश्चे द्वेदर्देशराज्य | द्वायर्डेशस्त्र बुवर्ग बुग्रास्ट्वर्येः म्या । रवः वन्वायः भेटः वर्षः वर्षे वयः सत्रुवः भ्वा । भेट्रियः प्राप्तिः वर्सेना निर्वा निर्वेश क्षेत्र । विष्ट्र पद्रेश क्रुव हे न व्युत्त विष्ट्र । विष्ट्र न सळसराञ्चरातरादेताञ्चराया । ग्वादातुः स्वीयाराधेना प्येता । मनाग्रेन्थित्याग्रम्याञ्चयाग्रेन्य्या । मनाग्राञ्चान्याग्राग्रेन्या । श्रे क्रियाः श्रें रंभीतः ए त्वियायायायीया। दिवाया श्रें रया श्रें रया श्रें र्या र्देव'ग्नाट'र्स्ट्रा क्षेत्र'न्यशर्देव। हिंग्यश्चाये क्षेत्रा खेट'र्स्न वर्षेया क्षुत्र। क्षे ग्राच्यामा । अस्य अस्य केरा प्राप्त प्रस्था है सामित्र स्था है सामित्र स्था है सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र हुनःस्राद्धे । । म्यान्यामी स्थान माना मुन् । सिन्या मेन मान्या माना क्षेत्राधित्। । वर्हेर्नेत्राव्यवर्त्रः श्रीनित्रवार्यात्रे । श्रीनार्यस्यात्रवार्यः ग्रानः क्षेत्रा थित् । क्षे देवः सरः यः वह्ताः सेरः ग्रेचा हेत्। ग्रानः ग्रुनः यहग्रासः रायर्शायदे मुन् । ३ के या यी के शासक रशास मा स्था । देव या वन

है स्रव:रग:स्व:श्रम:क्र्याय:मदे:यावी विय:श्र्या:मेव:मी:ध्रमय: वशुरायमा विवापित भुति भीति अस्ति । भूत रवा मानव समा भीति र नग्रम् । दिव क्ष्यं दिव त्याय दिव या है या । वि स्थि या उव दि दिया या वस्या सिवस्य पार्ट्र सक्स्य राष्ट्रस्य राज्य सिवस्र मिन्न सिवस्र सक्तरार्श्वे र.यता । तिय.रेश.श्वे.कतातह्या.धेय.रेरा । विर.रुयाय.रेया. न्दायम्यान्यान् स्रे । न्य स्रि न्यो स्रुव न्या स्रुव । क्षिमा स्रेट स्य स्टिम्स वःलरा रिवःग्रेशः र्हेरः सः रेवः हमयः क्रेवा । वहेरः रेवः स्ययः ग्रेः या वर्हेसमा विवाय विदेन्त उत्रिन् ग्रे मुन् । हे नर्गे म सेन में न विवाय विवाय षरःषरःवर्शित्रं विकायां विकायं विकायां विकायं विकाय र्वे देशद्या विश्वयादियात्राक्षयात्रादे क्रिया । अ शुद्रिव यर्द्धव रहेवा यायवेयाव। शिक्षयायाधीः श्रुवाधेवावी। श्रे क्वामानावाविन्यक्षया

दयःगर्शे ज्या ।गर्डे दः सळ्सरा १३ सरा सदे श्रें व दः नग्दा । १ धि यो स्मा कर्षुः परः द्रम हे : निवेदः शे मिद्रशः से नः से रः से रः से रः से राष्ट्री रः हु स्था । हे के मार्ने दः से से र सक्तर्यश्र क्रिं र ज्ञा | दे दे सक्सर्य क्रिं र ज्ञाय प्रते क्रिंता । क्षेत्र या रा वयायाना बेर्याया दी। । ध्रायाने में त्रायायाध्याय विमानमा । नुसाने हेना सक्त-रचर-रगुत-र्यग्रा श्रिक्य सु-र-गर-र्यग्राम् सर्वेता विदेगः हेव विश्वास क्रिन्य इत्। विषय समानिव के माश्रित स्था सिर वि ष्ठे वर ग्वर ख्राय अर्थे वाया । इया से प्याप्ट व्याय प्रति । ख्रय से वाया क्रम्यासदार्भ्भेत्वावेयानम्या । भे श्रे मास्याम्यासदानिनासयम्। । ने न्यायशर्धेयान्त्रीयाश्वर्यश्वित्। । ने सूरः क्रेन् । विन्यः वयःश्चेत्राचयाळ्ट्यायदे न्व्या । न्ययाय्व न्व न्वर्यायत् श्चेया। म्नें निर्मा अधिव संदे मुन् र् क्रिं । क्रुव क्रिं निर्मा अपिय संदे क्रें र नी क्रें ग्रम्यास्त्रीत प्रासहें सा क्रुत्रा गरिया। सुरीया प्री दे प्रायस्य । यो दु ग्रासुस मते क्रिंस के वा वी

दश्यात्रीत्रस्य स्थान्य । श्रिया प्रस्तान्य स्थान्य स्थान्य । श्रिया प्रस्तान्य स्थान्य स्थान

र्वेर्फीः ईसारेगामी र्भेरा

स्रुव:रमायो छ:र्रः स्रुव:स्रॅर्स स्थायो व्याः य:ड्रिट:स्रुट:स्रिट:स्रुट:स्रुट:स्रुट:स्रुट:स्रुट:स्रुट:स्रुट:स्रुट:स्रुट:स्रुट:स्रुट:स्रुट:स्रुट:स्रुट:स्रिट:स्रिट:स्रिट:स्रिट:स्रिट:स्रिट:स्रि:

वे:दे:वहेग्रासंद:द्वर:कुवा

सर्केन् नाईन्न्न स्त्रीन नावि।

कः हैं ग्रथः हो तुः प्रायः प्रायः प्रायः प्रायः प्रायः प्रायः प्रायः हो तुः प्रायः प्रायः प्रायः प्रायः प्रायः प्रायः प्रायः प्रायः हो तुः प्रायः प्

क्ष्यःक्षेत्रःश्रुवः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्वितः स्वतः स्वत

सर्त्रूट्रियायियात्व्राचित्र्य्यायायायात्र्या स्वर्याः सर्वेट्रियायियात्व्राचित्र्यायायायाया दे में किंद्र त्रियः हा निर्मा क्षेत्र के मान्य के स्व के कि स्व

वेश्यकेंद्रायरावहेंद्रायदेरावाचीश्रायश्चरायराष्ट्रीत्रश्यदेरा स्रुवःरगः से व्येटः मी वे दुः दरः में व्यसः चुरः ववे खुवः सेंदः सः पीवः पवे कुवः मु इस म्वान्य क्षेत्र मन्दर्याय विवा (व्यय पर्दे द दे। क्षेत्र माव्द वर्नर्न्त्रभूव प्रवे खुश क्रुव श्रेंग (श्रेंव शेय वे रे मश्र श की ख़ेंग श्रेंग श र्रमायहेवर्म्याधेवा)म्युमाग्चीयर्म्या स्मादी हिमारार्म्यापर्विपा बेरा रहे.य.यहर ख़ूया खेयायायायाया क्रमती यहेर हा से प्रवेश्यया यादःवियाःच बुदःच देरे हें दु चेदःच उदः ख़ुयाः श्रेषः अःयादः वी अः श्रूअः यदः शुर्देव ग्वान के ग्वान रहर मे अ अहे अ या वा ने र विरा नि हो व श्वन सेंदर भेवरमन्दर्भवरभेदरमी कुवरमहिषा श्रीमानी हिष्यम में श्रामान विमानहेदर गिवराम बुराम दे छिराया बेराविरा रही तर शेरम वि पर्से अ देव पराम करा यः इस्रशः श्री

पर्ने र ख्र र व्याप्त स्त्र स

नर्दर देवा हु नाद्या पदे नाविय सुय श्रे कें नय हिंद स न श्रुवः <u> ५८. बर्भः ग्रेभः गल्रः वरेदे वित् क्रुमः श्रेषः अपिमः हे श्रेतः हे गागे भः सर्देः</u> <u> ५२, ४१, व्रिंतः गीयः थे. त्रास्त्रास्त्रः ही. यः ये ४१ हीयः शुल्यः यत्रः ही. हिटः क्रियः </u> येवाश्वरम्भुँ रावर्दा धराया कुर्द्र क्विं विवालेश कर्षा वाश्वरावा वर्हें समाराये में न रेगमा हैं न न में त्रायाय विवा यो सनय विवा न से तु न म नदेः श्रून विन् ग्री श्रूष रं अ ग्राम्य अ प्राप्य अ प्रोप्त प्रविन । यवित्रक्षित्रपुर्वा न्यर्यायार्डे न्रार्यान्यात्रीययः यदे रदारेदे नड्न हैं या वेंदा है। हैं। हैं नश्हें प्रश्वे कर हैं। प्रमा वनायः विनाः सार्तेन सार्वः वस्त्रायितः क्रुवः सेन्यः न्यः वर्षः ने प्यान्ये दः नर्डं अप्यश्राम्बद्गमिहेशप्रिविद्धियाने दार्डिं हुर्। अप्रेंट्शर्चे मुख पिनः केत्रः रेविः श्रेतः इः श्रेनः व्यापिनाः नीः श्रेनः श्रुनाः इसः प्रश्नान्। त्याप्रः वर्दिते हित् कुत सुर्छ। इत < < शे विंदा श > > विश्वास्ति शेट रहं साया र शे नेशःसम्बर्हरःहरःसेवा देशवःश्चेरःस्रुवःरमायःदमयःसेशःग्चेरःसम्बरः न्द्रभ्रुष्याचेन् चे मुनाचेन् यावदानार्वेदा भ्रेष्या मुन्या स्ट्रेन् प्यम् सुन् स्ट्रेन् सेद्रा नेरानहेन नेरासर स्नुन प्रमामी हिंसाधिमा मारावळ सार्धे प्रन्तर हो सुन्र र्रितः क्रुवः क्रीः श्रुरः रुषः व सम्भागितः श्रुर्धम् य स्थानि । दः द्रारः रुपः बेद्राचेश्वाम्बुद्रशायवदार्थेद्रार्थेद्रा वेद्रावादेश्वाम्बुवाधीकेवावदेव राधित पु क्या ग्रामा वो क्या प्रमेश मार कें त्या धी यो खें प्यम प्रमा कें या क्षेत्र ग्री पर्वेश हेन हुँ र ग्री ग्रुर क न उर्थ हैं य रेग ग्री हु हय हैं ग सर्वे सम्बद्धाराधिताया देखानहेत्रत्र्याम्बद्धिरामी साम्यासासराधिया वर्योषान्दरसळ्द वर्योषा नगव वर्योषा स्वीषा स्वीष्ठा स्वीषा येग्रयान्त्र न्त्र ग्राम्य स्वर्था प्रमान ने स्वर्धि संग्रम्य स्वर्धि संग्रम्य स्वर्धि संग्रम्य स्वर्धि संग्रम् न्यायी न्यों न्यायवेन स्वाद्धेत ग्रुया है खे तु न्या से स्वाद्धेत कुर्यार एक मुद्दानिय अळर प्रयोग प्रमुख रहा के असु पार्वि र नरुषा वर्षेयानाम्बर्ग्यायम्याद्धयास्याद्भान्याम्यस्य । वर्षे स्वर्ग्यम् रराग्रीशानुशार्टिन् ग्रीशान्धन् र्श्वे ख्राबन् न्राव्येयान्शास्त्र स्टेरे सळ्व'केन'न्न'न्नेर'न्र्हेन'ळेग'वर्गेव'नठश'वर्गेन'सर'वर्नेन'र्ने॥

गरिग शुत्र सेंद्र सेत्र मित्र मी देश मित्र मित्र मित्र

ययम्यायाध्याक्ष्याययाध्याक्ष्यायाध्या र्रे.स्ट्रीम्.ययाययास्यायाध्यास्यायाध्या ययम्यायाध्याद्यस्य

कु. यार त्ययाश्वासाय त्या कु. कु. कु. व्या कु. संदे कु. यार त्या कु. संदे कु. यार त्या कु. संदे कु. कु. यार त्या कु. संदे कु. कु. यार त्या कु. संदे कु. संदे कु. संदे कु. यार त्या कु. या

र्श्वेन स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वा <<श्लेश-रनशःश्रीनिवान>>व्रानुनिर्देश्याने । वतुर-५. विवाधित पार्टा वया विवाधिक मिला मुका पार्टि । < श्वेव ग्री:मॅ.४.>>२८। क्रूबाचीयार्यो।२२८:योशायङ्गर्यार्यः < < र्या नर्मात्रिःविरः > > क्षःत्रःवे :वरःमदेःख्यामः ग्रेःक्रम्भः वर्दे वः ख्यापार्ठः र्वेर-वर्त्वर-प्रेर-प्राथमानेमा श्रुवा श्रृव-र्वेद-प्रयामाध्याची-स्रुव-रया न्ययः सूया वहु से यस स्वास ग्री न समस के साम गरी में प्रें निर् क्रयभावर्देव वन्य ग्रुया है। न्र्हें दार्य न्याय विदाहें दा ग्रेट के ना वह्या विरःश्रुवःसशःर्भेगःमःरिवःधेदःद्वरःदग्ग्यशः श्रुवःमःद्वः। धरःस्रविशः ग्रीयःवस्त्राश्चर् सिविद्यान्ता वर्षितः क्ष्यान्तर ग्राम्या वर्षेत्रास्य नःकेवःस्। मूर्मावशा ग्रवःश्रिवःश्रुःब्रेटःस्ट्राःस्। द्र्योःचलेशःलेशःस्वः मु अर्के व्या न्या र यसून प्रदेश सून य्या य स्या या र स्या र किया इससागर्रे में कु ग्राम्भ्रम्थाया साम्भ्रम् हे न हे न हे न हिन् चु खु न बन् । प्राम्थ विरःश्चेनःमन्दा हेन्। हेन् होन् केंगासून् ज्ञारु स्वार्मिनः यदे कुस्र राग्ने सार्से वा पार्से दे रहे स्रोत्र राग्ने स्वर कुर्म सार्थ हैं। या प्रमेता वनयानुयार्षेद्रायाङ्गययान्त्रेतानुवायान्यः विया व्रुवा

गहेशमा धेमेश्वेष्परमीर्स्यत्हेतर्मग्यर्धेन

क्रें द्विम्बर्धियो तह्रम बिट पटा न्याया हुन हेर हैं नदे हुन। धियो तहस्र न्दर नहें न पर हों न। धरशन्दर्श्चिमा सुदर्देव महिमा हिद्या दे निवेद हुन दर भ्रेन दर ॥ न्यान्दार्श्वा केवा इस्था गुराम् विम वसम्बाराध्याम्बयाचे दार्शान्ते वसम्बार्था र्से जिनाः स्ट्रान्से जिनाः स्था निव र हिर्से ख्रा समय पान सामित्र वह्रसम्बर्धाः वी न इ दु न वा प्ये द्या य.वुट.कं.टट.श्रधिय.तू.की॥ इनःयदे थे ने नर्डे थूर वर्देना र्नेन्धिम्म्ययान्तेन्सुयादुःयस्य ब्रे'न'ख़'न'यत'ळन्'ग्री। गिर्देशमान्त्रित्रम्थान्त्रिः स्ट्रान्ता दःषःर्यःषःधेवाः वरुया।

त्रुव सेंद्र सेव संदे कुव की क्रांग्विया खेया साम स्वेस साल हिया। सराधानो प्रह्मा हुना ग्री सळवानि निराह्म स्त्राम्य स्त्री सारा र्थे वार् पर्मे ध्रे प्रदे सूदे क्रस्य या पेंद्र प्रदू प्रदू पा प्राप्त व्या प्रद्यापा वेश पा पर्दे द यदे के निर्मे निर्मे के नि विदा वहस्रायाददा द्वेदाया धराया श्रेयाः छ्टा धेर्यो सर्केयाः इससः र्देव पारे पा प्येवा दे प्रविव सुपाय दे प्ये पो समस्य पर्देव प्रवे के सुपाद र स न्यायवयाम्यायायायायाचे स्वययायाचे स्वित्य द्वारायत्या क्षेत्रा न्या या श्रेंपाकेवा धेरपेर्वरम्य सम्मास्य स्थानित्र सम्मास्य स्थानित्र के स्थानित वहसा हुन ग्री देश वहें न मान्द सूर राहे सूर धीन लेना येगारा सूर ग्री धियो या र्वेषिया गार्वतात्रार्वा श्राप्तिया याद्वातात्रा श्रीता मुर्खे र मुन्द सार्था समय निर्मा समय निर्मे निर्मे

यदे थे मे निर्म अरेट निक सम्माय सम्मान् निम्न में स्वार्क सम्माय स्वार्म स्वार र्रे.च.च.ि.श.य.च्री अवय.वर्.धे.चर्रु.क.स्य.क्ष.चार्यः त्याचे.त्ये.च र्ने। रटरेवेर्श्वरर्तेवर्ध्वराध्यायरार्द्धयार्द्धयावर्ष्धयार्ग्वेवर्श्वेवर्श्वेदर ग्री पर्शे राजा ग्रहार नदे के दार् कु मार ग्री थी में प्रह्रा हुन ग्री ह्रा मान्या यान्येर गुराने। गुराय ग्रेन सुरा दुःयावह्या हुन गृहेरा सुरा सिरा ने। श्रेन्यः वाष्पवः कन् ग्रीः सन्देनः श्रुन्यः विद्यान्यः गानाः नः वाहः विद्यान्यः वाष्ट्रः विद्यान्यः गानाः नः वाहः विद्यान्यः विद्यान्यः वाष्ट्रः विद्यान्यः वाष्ट्रः विद्यान्यः वाष्ट्रः विद्यान्यः वाष्ट्रः विद्यान्यः <u> ५.४.२.४.२.६.६.स.क्रे.५६.५८.५८.८.८.५.५.५.५.५.५.५.५.५.५.५</u> यदे भी मी दर्। य में राव का मार्क मा हुन मने भी में हिन् न् वहें वा हिन्। यन वे नियम या वह सामने थी मो ने न्नात्यः सर्वे त्वर्ने न्या न हे न्या या सुर त्र हु न धेना हु त्यू र वर्षे न धेन वेशः र्वेदः र्वेदः र्वेदः श्रेष्ठः द्याः अपिदः अदः के नशः नश्वदः व्याः प्रस्थः ळ८.अम्.यर्चे वर्षायाच क्रियायायायायाची विट.यर.लूट.यर.लूट्यायायायायाया वहसामदे भी में से रामवा सह रामा प्राप्त विवासी सावहसा धेवा शुस्र न हेवास उद इसस हुन से निवा रास वार्ते वास हैस न हेवास उदार्शे भेगान्दरार्शेन् नव्यापि देशकुषा द्वस्य शागुदान्दरान्दरायी प्रमेन निहेता यः यहेव वयः वियः दर्गेश

धेव भी। रम्मेव शुराह्माश्राभी मात्माव स्वराय विषय से से से सार्व माने नर्हेर्नाराज्या विराद्याय विषय निर्देश की में स्थाय है सामा की सामा है साम है साम है साम है साम है साम वर्षाभी पर्यापित कुषा पर्यापे रोषा पर्याप्त स्थापित स् धे मे प्रह्मा हुन में दें मारहें दादा सुमान मान्द्र द्या मन्द्र से स र्बे संवेदमी नित्र सूर्या पिर्वेश से प्रताय प्रति स्वा वर्षे द्या स्वा वर्षे द्या स्व केव से न्दर्भे दुवे न्देश सूर्य निस्र श्रुव निस्र से के निहेश ग्रास्य सेव स गडेग'न् ग्रुट्र रागडेग'गेश सूत्र प्रांगे सून्र रागुंगे सून्र रागुंगे सून्र रागुंगे सून्र रागुंगे सून्य रागुंगे र्देश प्रदेश मुस्र शुस्र ह्वा श्राष्ट्री यात्र प्रस्य स्वर्भ प्रत्य स्वर्भ प्रस्य स्वर्भ यात्र । द्धयापाशुरश्रामात्री रदारे में दाया अर्कें दादारे दाया वाया दा से दाया येग्रथान्त्र निमाधिव सेन्। ने भ्रावयर द्वेश र्हेव स्वाप्य प इस्रायः भृष्ठे वर्षे दासायः साम्या साम्ये वर्षे प्रस्ति हो साम्या साम्य साम्या साम्य साम्या स मुर्श्व र्रेव र्रेव सावरायि विदेश र्रेव र्रेव र्रेव र्रेव र्रेव विवासित र्रेव गी'न्मेंन्स'सदे'सवेय'त'र्थेन्'सदे'नबेन्'र्सेय'ने'न्नेस्यासु'यम्'नसूर'' ग्रवह से प्रम्

गश्याय। श्वार्थेट सेव परे मुव मी प्रेनी

श्रुवः नरः नेवः दृरशः स्रष्ठसः छेनः नरः । श्रुवः नरः नेवः तुः गर्विवः सः नरः । नेवः गश्रयः नः नरः क्चः क्वेः न। । नहेन्द्रसहेशन्द्रित्रे । व्ययम् भी स्वाप्त स्

नवि'न। कुन्रें रेंदि में रेंद्र प्रम्म निम्म महिंद्र में मार्थ महिंद्र म

न्दःस् श्रुन्द्रः विः विंत्रः कृतः नश्रः य

१ रे क्रें सदे स्वाया या ग्रे क्रु र नदे र्धे व नव दी

क्रियामान्याके वहसामाधाना

इट:बट्रावर्श्वरायःह्यूं प्रदेश्याया।

हुन मंदे थि गो भूर्य के नम वह सामदे थि गो हुम बन नशे सामदे हुन हे ख़ूँ नदे खुग्या श्री श्रुम नदे थें न हुन थे न है।

द्येरः वा

नहं ज्ञ्यस्त्व के क्वास्त्वर्धि कें न्या। वित्र प्रति स्त्र स्त्र के स् वित्र के स्त्र के स्

स्त्राचित्रस्त्राचित्रः त्राच्याचे स्त्राचे स्त्राच्याचे स्त्राचे स्त्राच्याचे स्त्राचे स्त्

ख्नाश्राण्डिस्यान् व्याप्तात्रक्षात्र विद्याप्तात्र विद्याप्त विद्याप्त विद्याप्त विद्याप्त विद्याप्त विद्यापत्य विद्याप

ब्रिंग्र्बेन्। क्रेन्यः स्ट्रिंग्यं वित्राहित्यः स्ट्रिंग्यं वित्रः स्ट्रिंग्यं स्ट

तुसाधुसाधुः से महान के दाची निर्मा हुन निर्म हुन निर्मा हुन निर्मा हुन निर्मा हुन निर्मा हुन निर्मा हुन निर्म हुन निर्

वै विंदाची दिसे स्वाईदान विंदा स्वादे दिन सम्बद्धा स्वाद्धा स्वाद् न्यर विदेश्वर्म् नर्देश श्री श्रुम्न यथ क्षेत्र प्रयास मेगा पर्देश वेय प्रमा र्वेदावशुरात् श्रुरामाश्रीमा खुदाधी मो सकें मा क्षेत्रामा हेता श्रीमा स्थान मर्दे। वियामायदी महियाधेव विदाने वे में दे वे में स्वाया मा में मुनाम वे प्येत हरायाश्चिमा कुरार्स र्वेड्स प्रिये थे मो सरार्धे सामारे मा साविमा दर्गे सामारे धेवर्ते। दिःवरश्रवःगल्राहरुकेगाः तुः हुनः धरे धो मो से न्दर है गहिशायशः भे'दत्रुट्र'नशःर्श्वेषाःळेद्र'सट्याप्ट्र'र्श्वेषाःळुट्र'स्ट्र्ट्र'य्याप्टे'दे' र्भेन्थेन्ने कुःभून्थेन्नन्न्न्युष्ठ्यान्थेन्यविष्य्यान्येन्नेन्नार्भेन् *ॻऻढ़ॸॱढ़ॾॺॱॺॱ*ऄढ़ॱ୴ॸॱॸॗॻॖॸॺॱॸऀॸॱऄॖॕॻऻॱढ़ॖॱॿॖॻऻॺॱॸढ़ॆॱॸॱॸॕॱढ़ॺॱॺॣॱॸॗॆॱ र्श्याश्चार्ट्या स्वर्धा स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स नशायदी मार्श्वेषा के वा भी विषय शुर्वा च्या विषय श्री विषय । यर में यान वेद यदर पदि है दिन वित्री।

१ न्यास्त्रिम्यास्तिः श्रुम्यादे खित्रान्त्रः हो।

प्रमायान्या केत्रः विद्यान्य क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्य क्ष्

यारश्यात्र प्रियात्र स्वाप्त स्वाप्त

यारशाउदार्चेदाग्री विदायश्यादाग्रादा रेगायीशायहिदारादे यादशा रे द्वस्था है दें न न त्र्री व साराध्य प्राचार सारी विशेष मार्थ से साराधि सार् लट्यीट्टी सुट्टी सक्त पश्चित त्री अस्तर त्री के असर तह्य यदसःश्रॅम् कुर्ने धे मे हेर्न्य दर्श्या केत्र न दुः महिरासामितारा बेर्-डेर-ग्रायय हेर्-बेर-ग्रिन ग्रायेग या पर पर नक्कें र द्रार हे या शु विष्ट्रिया वर्ष्ट्रम्भे मुलक्षेत्रम्भिया हे अवव्यव्याप्त नडराम्यानित्राक्ष्रम्त्र यह्यामार्वित्रयाधीयो नडियायाधराधरा नर्भेर्न्स्निस्ति है अप्ति वित्रास्त्र नित्रास्त्र स्त्र नित्र स्त्र स्त वर्रेन्ने इनम् ब्रेन्यस्तुन्त्रस्ता वेत्याक्षानाकायावर्ना वैत्या लिशाहेशायविदार्वेशा देखर्देदाणा डेशायव्दारायाह्मस्रशालेगायवारे रे'नविदःश्रेंगाकुर्नार्वे'दाधेदाध्यार्थे। विश्वामश्रुर्याते। इन्निवे'धी'यो इसराश्चित्रःश्चिताः खुटावित्यः धिवाराः भिवातुत्राचित्रः स्था वित्वः व्यविदास्या केव में हे अ वज्र अ प्राप्त वर्ष प्राप्त अ वह्याय वि व से प्री अ प्रमायहरा याद्यायाञ्चा क्रियायाच्च प्राप्त स्त्रायाच्च स्त्रायाच स्त्राय स्त्रायाच स्त्रायाच स्त्राय स्त्

महिरामा समान्दर्या शिः वितान्त्र मन्दामा

रवःद्रस्थःग्रेः व्यवः हवः दः वर्दे दः दे।

द्यं र ज्ञा । विष्यं र ज्ञा र

१ न्रामित्रम्या अग्री स्वान्य मित्र वि

र्श्वर्त्त्रः याम्यायायः स्थाः स्थितः स्थाः स्य

भ्रेन्त्रित्र्यान्त्रित्त्व्याः द्वान्त्रित्त्र्याः स्वर्षाः स्वर्ष्यः स्वर्ष्यः स्वर्ष्यः स्वर्ष्यः स्वर्ष्यः स्वर्ष्यः स्वर्षः स्वर्यः स्वर्षः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्षः स्वर्यः स्वर

यदेवे निर्मित्र वित्र स्थानित निर्मा स्थानित निर्मित्र स्थानित स्थानित

गशुस्राम् सहस्रामिते धेव महत्राम् निष्

१ ब्रॅं ख्राम्य ग्री सहस्र मियं पित नित्त है। व्हस्र हुन पि गो में सहस्र मिया हीं ग्री स्था ख्रुन ब्र्लें निते ख्राम्या। कें ग्री सहस्र गोडे गा गो पी गो व्हस्र हुन सर हुन में सहस्र मिये कुन में ब्रें सिते ख्राम्य ग्री सहस्र मिते प्रांत प्रांत क्रिन में मिने मिने स्था

यदी'त्रश्चात्रः श्चित्रश्चात्रः त्राच्यशः श्चात्रः त्राच्यशः स्याद्यः स्यादः स्यादः

वेशा विश्वास्त्रप्रस्थास्ये भी मो नर्डे मक्कु न न्दर कुनास्त्रे भी मो प्यमानर्डे नक्तर्रे तह्या द्वार्टे यह्यापा सुन्त्रे वर्ते मराय सेर्थ्या यह <u> ५८: से ५: से अप्तारा क्षेत्रा प्यारा हो ५: से जा पा प्राप्त के जा प्राप्त के जा प्राप्त के जा प्राप्त के जा प</u> קן מבאיאימימבאיאלימבאיאיקרין מבאיאליחדיחן מבאיאלי हुन:यःगशुअ:५:ध्रेश:विर:दे:५ग:दे:दे:यःगशुअ:गशुअ:५:ध्रे:नश:५ग्: र्वे त्या अळव यावे प्रये र यहें प्रप्राय क्षाय या यो प्राये प्राय गो श्वे प्यट मी इस ग्विम हे उस म् प्यट्स स प्येत स र र र में द र र रेस नन्द्राच्यायेत्। द्याचेयाच्यायायदेराहेत्येद्रायाययायदेष्ट्रायळेताः श्.रे.त्याश्रमाग्रीमाग्रेटावसवीमायकाग्री,मधिमायपुरावीशेटाक्रिय.रेटाकी. वर्गेया इससा सु ने व्हर पेंद्र पदे सह न हें दर्स सामा के ना सा ने द न हैं द विगामाश्चर श्रेयामात्र सो

१ न्यानिस्यक्ष्यामित्र्ये स्वत्यान्त्रः स्वास्यान्त्रः स्वत्यान्त्रः स्वत्यान्त्रः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्व स्वत्यः स्वत्य

थी'वो'त्रह्रस'हुन'ग्री'ब्राह्मा'गा'स्रह्रह्रहें से'सक्रस'यह नहें न् ग्रुदे'

स्वान्यम् नर्गे न्यो व्यान्य स्वान्य स्वान्य

कैंश कुय से शन्ने द इस मंदे सुन्दिर या गर्दिर नसर ने द श्री श वह्रअः श्चीरः शुअः विदेशः अः वः द्वरः वश्चरः वश्यरः वश्चरः वश्चरः वश्चरः वश्चरः वश्चरः वश्चरः वश्चरः वश्चरः वश्चरः विविद्रःविः न्त्राद्याययायायः प्रद्रायत्यात्रः विद्रायत्यात्रे विष्युतः मदे थे मे दुर वेर हुन म सर न स वह स हुन रे से सहस थर न हेर चिते-र्नेत्रची-श्रें र रहेवायानस्यात्रयायक्षायक्षायते वितान्त्र प्रति । प्रति । प्रति । प्रति । प्रति । प्रति । श्चॅ्र पर्मे त्रं न प्या श्वरा र्रे किये सूत्र वर्रोय प्रापी रेया सर्के यथा मत्र केया नेरे अपस्ति। व्यथान्यस्यान्ते में क्षिं एस्यास्य स्यास्य स्यान्ये रान्ये रान्ये प्राय न्हें अर्थे न्यान्ता भ्रिः अप्तरान्ये सुना अर्था अहें ना अर्था परि में ना <u>षरः द्वेरः वर्हेर् वार्रेवाः वः षो वो वह्यः हुवः कः यद्यः यः उद्यायः वर्षि।</u> दे त्र या बुद दिवेष द्वी या गुर दे दे हे या शु दिवद त्र या निया निवा यह

र्रे सहर प्रात्ते। द्विम् राष्ट्रवे त्रयायायहरू प्रमान प्राप्ता विमानी हे या प्रमा नशःसॅन्श्वार्वेदेः लु: न्याः न्टः वर्त्तेः सुदः यो । न्ययाः हेशः ग्रीशः न्येशः श्रीतः हेः र्येग-हिर्स्ट-न-निर्व वर्ष्याः सूच-निर्व स्थानिक स्थित्र स्थिते । कुःत्रोयः । अष्रःयः वेशःयः यः श्रेष्यःयः श्रेष्ट्रे हें अःयः इस्रशः ग्रेः धुयःयः यार:विया:व्या:अवय:यर:याशुअ:म्रारा:यवि:या:यवर:श्रे:अष्ठअ:य:श्रेर:यर: रेग्यायाय्यव्यायाः केरार् श्रुरायाः देश्वायाय्यायाः विष्यवाद्यायाः विष्यवाद्यायाः विष्यवाद्यायाः विष्यवाद्याय र्दे। विश्वान्ता गुरायिकायद्वानगरार्देश व्हेरास्यायम्हारार्देराकुरा व कुर सहस्र नर व नर सहस्र के व के व के सहस्र मदे दें व द न है। स मदारारेराके कुदानराया त्रया राष्ट्रायह्या प्रदेशे देतातृ पातृदानी या त्रेता या तेगा हो दावाब तर् प्रकर्प प्रवास स्वर्प स्वर्प से विश्वास स्वर्प स्वर्प से विश्वास स्वर्प स्वर्प से विश्वास से विश् वर्रे द्या विरम् शु नुमारे। श्रे र श्रे र य वह्म म व वह्म सम्मार्थ स्था व्रः हुनः अष्ठभा नश्चे अन्वन्य स्था अष्ठअः धवे क्रुवः व्यः व्रें खुन्य अर्थः व्या श्रे अहसारायादेवे वें वा ह्यु पराचवे खुवारा ही स्रो अहसारावे पें वाहत हु । वर्देन्द्री। देवःश्वर्यायाद्रायः केवार्यः श्रेषायाः ग्रेयः भूरायवेः खुषायाः ग्री अद्रअभिते प्रेंत प्रताने अप्रुम्प्रे कि कि वर्ष म्यू अप्रिम् विष् कुव मी भेट रंभ भ श्वास पिट दर्गे रास दे भेरा दे भूर भेव व कुव परि न्नान्त्रे नान् द्वेते वर्त् से वर् नमान्त्र मान्य वर्ते व वर्ष है से वर् हार कर वर्गुर्र्स्य वर्रे हेर्क्ष्यार्श्वे रख्रिः षर से सहसः षर् देव सहसः प्येवः वह्रमामासायायायी हुन्।

नन्गामी नह्रव पर्वो ना न्नाय सादी।

मळ्या.मी.पि.ली.धर.रेट.तयायी

बिश्रामायदीमासुमाद्रमायायाये प्रमुमाश्रामाहेशार्षेत्र प्रमुखा यन्ता विः व्यान्दरः कृतः वादेशः त्रायद्यात्रः स्वायः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः नश्रा वेशम्यरावर्द्रन्यराधरा वर्ष्यावर्षेयान्। धरावर्षेया न्य नः इस्रयः ग्रीयः ग्राटः श्रुः से स्वव्रयः दवटः देवः सव्रयः विवादिर्गेषा देः सेट्दः सहसामित सेटा पटा से मित्र हे सान्दा ने सुन्ति में ता सहसामित से सामित से सामित से सामित से सामित से सामित से स यदे के। क्रुट प्रदाय अदे प्रयाभागिक अप्यान प्रमाय है अप्यान स्थाय स्थाय है अप्यान स्थाय स्याप स्थाय स्याय स्थाय स्य व्याप्तरक्तामहेशप्त्रायहरात्र्यं विषयात्राप्तर्देशपदित्यदित्यदित्य हेर्गी अधिव र्यायमान हुर मिं व सामिन मान्ति । विराद्य स्त्रीया गिरुरागित्रित्रान्द्राधारा स्वाति । विकास स्वाति । यह स्यायायाः मुः त्योयाः मुः क्षेपाः नश्चुरः नतेः त्राः नेतेः से अध्यायतेः सूत्रः न्या हु त्यु र र्रेष वेश य वरे विरश्च स्था सुर हु नुश है। द्येर वर्हेर मु अप्तर्ने हिन्से अहस्य प्रते देव द् मु प्रमेष निष्य प्राप्य प्रकर्ण अहस्य यदे देव दु से प्रदेश प्रदेश हिन प्रमार्थे। विश्वा शुरुष्य प्राप्त स्वार्थ ग्रीः श्रुवः हो नः श्रुवः रावेः ये ग्रुवः व न्युनः विष्युनः विष्युन्यः विषयः विष्युन्यः विषयः विष्युन्यः विषयः विष्युन्यः विष्ययः विष्ययः विष्ययः विष्ययः विष

र्रे स्वार्थ ग्रीय श्वाय देवाय वातर या न्य स्वाय ग्री मुन परे श्वर ब्रॅट्सेन्सिन्स्ते क्रुन्न इते न्द्रसेट माट मी विद्रास् सु सूट्र पटे प्टर वहे वा बेर्-र्-द्युर्-रविःदवावःश्वरःकैवाःद्युःविवाःग्रुरःवर्गेर्-शेःदर्वाःवः वे। वनुमाञ्चयः मरः हेरः वरेवे ज्ञूनः र्रेषायः वयः यार्षे मयः नमामः र्रेषायः दशः श्रुवाशः हेवाशः सः श्रुद्रः नः धोदः सक्षेः प्यदः विदः वीशः दवावाः श्रुवाशः श्रीः क्रिन् श्रम् से सिन्य मान्य पिन् वान्य प्यम् स्रिन्य स्राप्त स्रिन्य स हर्नान्निर्मित्रा बुर्सान्य संस्थित संस्था स हुनन् हुन अह्र अह्र न रे अह्म न्य अह्म न्य क्ष्य न क्ष्य क्ष क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य गल्र-र्वात्रम्भूर्येर्वात्रम्थान्नेयार्वेषार्वेषात्रम्यान्ने वुरस्यवरायार्वेष मुंशःभितः प्रद्रां रेराजावरःया वर्येगारासधःरेगारास्याधिकाताः वर बःगवरःचतः भ्रम्या वःश्रूरःषः श्रूरः चः र्यं यायाः नविषाः मुयः यः यः यह्र माय्त्रे मासून हो न पावन यो न माय्रे के हो न न माय्रे *ऀ*ॷॱढ़ॱॿॖढ़ॱऄऀ॔॔॔ॱॺॱऄढ़ॱय़ढ़॓ॱक़ॗढ़ॱग़ॖढ़ॱॻॖॸॱॺढ़ॺॱय़ढ़॓ॱऄॕढ़ॱॸढ़ॱॸॖड़ॱड़ॱज़ॸॱ वशुर्वित्र वाराष्ट्रराष्ट्रियायावित्रावित्रावित्राकुवारेयायराश्चरा वःश्रापशःभवेः प्यवः त्यवाः तुः वर्गुः रःग्रीः रहाने । विष्ठितः क्रुवः रुं शः वः । शुः र्द्धवाशः गडेशवहें व ग्रीशणविव श्रिम्यायासूट न वे सिवश संदे खुम्या से व र्वे।

য়ৢয়ৼয়ाखेतुः इतः स्वाधितः स्वाधितः स्वेतः स्वाधितः स्वाधि

निवा श्रुव मित्र भेव मित्र मित

१ व्रेष्ठ्रस्थात्रः स्वाप्त्रः स

नर्हेन् चितेः र्ने न न्दर्भेन् चित्रः चित्र

४) क्रें.सद्र.धेयायाजी.श्रेंद्र.धेश्रयातर्ट्रेय.क्ष्या

क्रें.सद्र.खेयोश्र.ग्री.श्रेंथ.स.सूर्याश्री। श्रें.सद्र.खेयोश्र.ग्री.श्रेंथ.स.सूर्याश्री।

धी गो क्षे गावस प्रत्य हो गाय स्था प्रत्य हो गाय है गाय ह

न्तरः न्दः हैं न्तरः न्यः श्वा । श्वा श्वा श्वा श्वा श्वा श्वा श्वा । श्वा श्वा श्वा श्वा श्वा श्वा । श्वा श्वा श्वा श्वा श्वा । श्वा श्वा श्वा श्वा । श्वा श्वा श्वा । श्वा श्वा श्वा । श्वा श्वा श्वा ।

यक्तः श्री निर्मायदे ख्रियाश श्री श्रीते क्ष्रश्चा विश्व स्वार्थ ख्री विश्व स्वार्थ ख्री विश्व स्वार्थ ख्री विश्व स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्व

ह्रेश्वाविद्यास्य विद्यास्य । श्रुष्य स्वाविद्यास्य । श्रुष्य स्वाविद्यास्य ।

वर्रे र दे। । द्ये र वा

मार्थेट्स्याम्यदे प्यत्त्वास्य स्वत्ते । । सक्षत्र स्वाप्य प्यत्ते सक्षत्र स्वत्ते । । सक्षत्र स्वाप्य प्रत्य सक्षत्र स्वत्त्र स्वत्ते । । सक्षत्र स्वाप्य प्रत्य स्वत्ते । । । स्वत्ते स्वाप्य स्वत्ते स्वत्ते स्वत्ते स्वत्ते । ।

स्त्रःभेशःश्वर्षि।

क्षेत्रमानि त्र्रात्र स्ट्रिं स्ट्रिं स्ट्रिं स्ट्रिं स्ट्रिं । क्षेत्रमानि त्र्रात्र स्ट्रिं स्ट्रिं स्ट्रिं स्ट्रिं स्ट्रिं । स्ट्रिं स्ट्रिं

र्यः न्यार्यार्थः रेथः वर्धे र वर्षः न्यरः श्री । रे वे स्थरः न्यार्थं स्थरः वर्षः न्यरः श्री । रगः प्राथः गुरः स्वयं केत् सह प्रायः उत्। नुःवेदिः इसावसुवार्त्रेन् स्थ्याः केंसा ग्रीः है।

मी विराव स्वाद्र सुवाद् सुद्रा निविष्य स्वाद्र स्वीव ख्वा स्वाद्र स्वीव स्वाद्र स्वाद्र स्वाद्र स्वाद्र स्वाद्र स्वाद्र स्वीव स्वाद्र स्वाद् इस्रावस्यार्द्रम्हिम्योम्कुयार्देवैःमेय्यायस्य विद्रस्यार्द्रम्दे ब्युन्नद्रम् वाराययात्रयात्रम् मुयान् वेयायदे क्षेत्रार्श्वे रायदे दे महारा नवि'गिदे'सर्गेर'र'धेग्'यर'यर'यर्नेर्नर्नेर'नदे हे अ'सु'दिनिर्'र'द्रेत्।

५) क्रिया त्यः र्से सः नवि है सः निवि । म्ट्रार्श्स्र्र्स्र्र्स्स्येट्रम्बिन्द्री। वर्गनः र्भू र नवे हे अ विदि पीता।

क्षेत्रभाव उद् ग्री क्षेत्रा मह रहर रहाया क्षेत्र पावि प्ये पो पद्भव रहे श्चरानश्राधराधरानर्भेरानवे क्वतायाळे नायार्भेरानवे हेशाविता वेराहे। न्धेरः वा

यारशरेते सेट नश्चर्य में र नते यारश हैं रशत्। स्रुव केंग स्रुव क् सु स्वाप्त रे प्रहे हा।

वह्रसासरीं व्रासंसायह्रसान् ग्रुट्सान्दिसान्दा ।

ग्राम्याः उत्र में नृष्णे वित्र त्र नृज्य स्था उत्र सदे न्ज्य स्था सदे । स्रु कें गायरें न मुं स्रु न में साम्याम के त में स्रे न ने से मया ह्या कुया है न

वहस्य न् श्रुम्य प्रिया निया प्रिया प्रिय प्रिया प्रिय प्रिया प्रिया प्रिया प्रिया प्रिया प्रिया प्रिया प्रिया प्रिय प्रिय प्रिया प्रिय प्रिय

७ रेट.य.ब्रूश.यह. हेश.यहित्।

र्ष्ट्र भीत कुरी के स्ट्रिंग । र्ष्ट्र स्ट्रिंग के स्ट्रिंग में स्ट्रिंग ।

क्षेत्राः श्रीः भितः तुः भ्रोः भेटः नवसः स्टाः नवः भ्राः भ्राः नवः स्टाः स्टा

स्वाराध्यान्त्रीत्। श्रीत्राध्याः स्वाराध्याः स्वराध्याः स्वराष्ट्यः स्वराष्याः स्वराष्ट्यः स्वराधः स्वराष्ट्यः स्वराधः स्वराष्ट्यः स्वरा

> त्यरक्षत्रक्ष्यक्षत्रक्ष्यक्षत्रक्ष्यक्षत्र व्यवस्थान्यक्षत्रक्ष्यक्षत्रक्ष

त्व्हर्मान्द्रः व्यास्य विद्रः स्वित्रः स्वित्रः विद्रः व

﴿ १ निरम्मित्रसम्बद्धित्।

न्यात्रेस्यात्रेस्यात्र्यात्र्यः स्थात्रेस्य । स्रिक्ष्यः स्यात्रेस्य । स्रिक्ष्यः स्थात्रेस्य ।

म्नास्त्रित्र्यः स्वाप्तात्त्रित् स्वीत्रायः स्वाप्त्रित् स्वाप्ति स्वाप्त्रित् स्वाप्ति स्वाप्त्रित् स्वाप्त्रित् स्वाप्ति स्वाप

ग्रम्याश्वाम्यम्यात्रम्यात्रस्य । वित्रः प्रते स्त्रम्य । वित्रम्य स्त्रम्य । वित्रम्य स्त्रम्य । वित्रम्य स्त्रम्य । वित्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य । वित्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य । वित्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य । वित्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्

अविशन् देवे निर्मे स्था क्रिया की निर्मे स्थित हैं निर्माय विष्म निर्मे निर्मे के श <u> ५८.शु.सस्रासद्गेर्नवायःचित्रेर्द्धेरःवात्त्रेवास्यर्द्धरःवर्द्धेरःवह्नियःसूरः</u> वर्रेशरावे न इस्रश्र के शहरामा मुन तुन तुन स्वा वर्षे र न विव हेत यव ग्रासुस ५८ सर्व त्यव ग्रासुस स एक ग्रास में ग्री ग्रास ५८ । वित उवा थ अळेवा ५८ बुद सेंट वी ५६ रा गुन क्षु न रास गहें ५ थ रा ५८ रा स विगार्चेन देश। बेर्गेन सम्बेष्य सम्बेष्य सम्बन्ध निवासिक श्चेन प्रदेश्वेषा श्चेशने प्रयाद्यम हेन प्रतित्वरा न्या न्या स्यया दे। वे र्डे शःश्रेण गर्डे दःश्रद्रशः याधिव ने सः विसः वर्तुः श्रेव न यदः पवे द्रो व्यूसः वशुरावर्गाभेवाभ्रेताभ्रुताभुरकाशी भेगार्थेरावाभेग्येरासे सामित्राया यात्रेयारात्रेया धरार्त्ते स्वरायात्रेयायार्त्रेयात्त्रुत्रास्वरायायाः दुर:बद्रार्थं अप्यदः सेद्रायर: क्षेत्रायात्र यहदः द्रसः द्र्यः देदः हेदः हेदा स्वरः वर्षेर्रेरे वर्षे अविव गर्वेव श्रेशाव कुग्रश्र रे बुद वीश र्वेद वी श्रेवे कःत्रवादःविवाःनब्रह्मा सेःवेदःसःसःवार्रह्मःस्वाः चीःनब्राः सेःहेःहेवाः ग्रथरःभ्रवशःग्रेःदुरःवर्हेदःयद्राःवदःविदःवववःवहेदःग्रेदःवादेरःवदेःरदःदेदः यःश्लेशःश्लुद्रशःश्चित्रसः दर्धित् सेत्रस्ये स्टास्टर्स्य स्टान्स्र्यः यामित्रा यक्तिन्द्रियाधित्रयम्। हिन्द्रिमान्यस्य प्रमान्यस्य प्रमान्यस्य विष् ग्राह्यस्यात्रशः क्षेर्यस्ति याहेर्यस्ति वाधित्रत्ये से वित्रस्ति भ्याह्यस्य गर्सेन्से अक्रुरक्षे सुरप्परा अक्रियासन्दर्शु सुरान्से सन्दर्भाग्न

मीर्थासे विदासर नर्से मामहस्रा श्री मायद द्रमा हे स द्रमा भूत द्रमा नर्डें गायान्यास्यारियायार्द्रम्यार्द्रम्याय्याः स्वार्धियाः यात्रम्याः स्वार्धियाः स्वार्धियः स्वर्यः स्वर्धियः स्वार्धियः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धियः स्वर्यः स्वर्धियः स्वर्यः स्वर्धियः स्वर्यः वियाश्चेता चेत्रया जालवारे वंशेजा वर्षे ना सर्वे ना स्वे न नः भ्रे अर्हेरः नवे स्रुवः रमा यः द्ये मा सरः दे र्स्वे या स्वी स्रु इया उधाया श्वेदःसं शेष्ट्रित्यर देव शेर्ट्रिया श्वेषाद दुःशेषी व र्षेद्र य दें ने व दिवा नेरस्य बद्दर्गिद्र वें प्रतिवाया दुर्य देट वी श्रुवा वें वा पर क्रें या प्रवाद विगामीश रहाहेराओ वेहासवे हिंसा भी या ह्या में विश्व का या सामीया यद्रा अव्दर्यन्थित्रक्ष्रिये वेद्राये वेद्राये विष्णु व्याप्त्र विष्णु व इ.स.स्र में भी कूरा ग्री मंग्री स्था मंबर स्था निर्मा है र के व र्रिदे देवारा पर्वोच । ववारा व नावरा प्रवेश हो दु इसरा । व्हें व प्रवेश हो दाया श्रे नार्य द्वार्य । नाश्य रश्याय दे दिरं ने वित्त प्रति ने वार्ष

श्रमा भीव र पार्विव मदि प्याविव र मदि प्याविव र मदि र म

१ वें संदेख्यायाः भीत्राविंदासदेखें व स्वास्त्र स्वास्त्

क्रें पदे स्याय राग्ने भीत मुगर्वेत्।

र्हेन् ग्रेन्यह्र अपि क्षेत्र वित्र प्रत्य क्षेत्र क्य क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र

मुन्यान्यार्थः भूवा त्यान्यान्याया । स्वना स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया । स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया । स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया । स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया ।

र्भिना-तु-नुना-र्सिक्षेट्र अप्यास्त्र अन्य स्त्र स्त्

१ न्यास्य स्वाका शेष्ट्र क्ष्याका शेष्ट्र क्ष्याक्ष्य स्वाक्ष्य क्ष्य क

याश्चरः याश्चरः विद्याः स्त्री । विद्याः स्त्री स्त्राः स्त्री स

वर्ष्ठभारात्रभार्थन्त्रभार्यन्त्रभार्यम्यम्यस्ति

इमाया देवामायायाये वित्राप्त निवासी

नर्हिन देव नहना या थी नर्ने शासराहें न होन होन हो की नार्ने शासराह या श्री शासराहें न होन होन हो न से स्था है से स्था है

म्बर्धियार्थ्य स्थ्रित्र स्थ्रित्य स्थ्रित्य स्थ्रित्य स्थ्रित्य स्थ्रित्य स्थ्रित्य स्थ्रित्य स्थ्रित्य स्थ्य स्थ्रित्य स्थ्रित्य स्थ्य स्य स्थ्य स्

भ्रे भूमः श्रिम् श्राप्तम् । स्विम् स्विम स्विम् स्विम स्विम

नर्हेन्दिन्श्वरः ष्यान्यः यहमा । हे त्रिवेद्यो त्रिक्षः यहमा । भूरः यदमादः षे देवः मुख्यः वर्देन्।।

नर्हेन्दिन्देन्देन्द्वर्भात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्य

हैं सित्रे हिंस ही स्वास्थ स्व त्ये व हो न्या । हु मार्चे प्रदेश हें व से श्री क्षेत्र से के व ही । है मार्चे मार्चे व स्वास्थ सित्र से स्व सित्र से सित्र सित्र

 नुयायाष्ट्रानु।

नत्त्रमा कुःके निवे भेति न्त्र निव नि

क्रें ख्यायाक्त के त्ये प्रत्यायाक्त के त्ये प्रत्यायाक्त के त्या वित्र के त्ये प्रत्याया के त्ये वित्र के त्ये वित्य वित्र के त्ये वित्र के त्

स्वान्त्रेन्त्र्यः कुवा क्रें निवे ख्वाका क्रें के के निवे खेन क्रें निवे क्रें निवे क्रें निवे क्रें निवे खेन क्रें निवे क्रें निवे खेन क्रें क्रें निवे खेन क्रें क्रें क्रें निवे खेन क्रें क्रें निवे खेन क्रें क्रें

न्धेरः वा

र्वे र श्वी र वि न पह्ना प्यर श्वा र श्वे र श्वी र वि न प्र श्वी र श्वी

र्देर-श्चीर-वेद-श्ची-रेगामालुद-लिय-पहुग-श्चे-पावका-दे-प्यक्ष-किय-दिया-रेगामालुद्दा श्चुद-द्द-श्चुव-क्षेया-क्षेयाका-श्चिक-क्षेत्र-प्रति-क्षेत्र-रेग-मी-द्वे-देय-क्ष्य-दु-श्चित-दु-श्चित-प्र-श्चुव-प्रति-देग-क्षेत्र-प्रति-क्षेत्र-प्रति-क्षेत्र-प्रति-क्षेत्र-प्रति-क्षेत् दर-क्षिय-देग-प्रति-प्रति-क्ष्य-क्षेत्र-प्रति-क्षेत्र-क्षेत्र-प्रति-कष्टि-क्षेत्र-प्रति-कष्टि-कष्टि-क्षेत्र-क्षे यात्र अः यात्र विः यो तिः विः यो ति अत्य विः विः यो विः य

१ न्यायायर्दिन्यवे कु.के.चवे प्यंत्र हत्

ह्यन्ति श्रायम्य विमान हिन्य स्था। ह्यन्य विश्व हिन्य स्था। स्थान स्थान

म्हें न्यावि ने ते । हिन् न्य न्यां । के अप्याय विया नि स्था विया नि स्था विया नि स्था नि स्थ

न्धेरः वा

र्श्व मी मान मिन स्था मिन स्थ

यर्ने श्रून र्हें मार्ये पुत्य नु त्युम्य भीमा नु तु या यशुम् रहें या श्री विमायमा श्चित्रपाहेर्यायेवराने स्वापर्यायात्र श्ची त्यार हेराश्चिरायाद्रा पार्या <u> चुदेः श्रें न् पार्ख्या निव श्रें न् निवे अक्षा भेन् निवे श्वायाया निवास</u> या दुरक्षियायी मुखासळदायळटा नदे रना हुट यी पर्स श्रेश रा केता लूर्अःश्वीवियःत्रम् विकान्त्रे रवायःक्षेत्रः रवायाव्यः विकानमः विवायः श्री विशहेर्द्धानमाळे दार्य दिन् के शायन विनान हेन मने स्वाय यश्वित्यविद्धेत्र्याकेत्याकुळे नर्यक्ष्रित्यार्वे त्रायाक्ष्र्या वर्षेत्र बर्गी से वेंद्र सदे स्वर् रेंवा पदे सुरे से से प्राये सकें । वारे रामी कुरायार्से प्रायायाविता । वेयाया प्रायायारी गार्से प्रायाया विवास स्थया शुःक्त्रवादिवेदान्येरान्हें दान्यायानाया वनुमाञ्चयाक्रियाने वेद्रान्येरा नर्हेन्नभूत्रस्थित्या कुत्रप्तेर्र्स्यानवे कुभूशन्ता । केन्नायसर्वे गर्भराग्री मुद्रा सँग्रास्ट्रिस द्रस्य नहिंदा सदी हैर गुदे स्नरग्रा से हिंगा गी हिंद किटा ने इसहया ये विष्ठा इत है से देवे के के के कित्र के स्वर्थ के से सहसार्क्ष स्थानश्चरानदे है दस्य यान है दान विरान में वार्किना या दस नश्रव सर रहा वेदे हा तहीय या वित्या गृत्वाया दया नित्र हिरा वाया है। न्मेर्न्स् हिन्द्वेन्द्र मेर्नि मार्थया महेन्या विषया प्राप्त स्तर्भ विषया मित्र क्रॅंश-पर्हेन्-प्रवे-ल्वायात्ययाक्रॅयाड्य-ने-छिन्-त्यवायास्यु-त्याययानेयाः क्रॅग्रायर वर्देर दी नेवर एवट श्रुग्य अर दी । ग्राय श्री क्रिय वर्देर-दर्देश-शु-वश्वद-पवे-कु-केवे-कुव-द्र-। क्वें-पश-वर्देद-पवे-कु-के-

र्नेर्ने के स्थानिया वी र्भेर

यायम्भेराक्षेत्राचराक्ष्यायाः स्थान्य स्थान्य

नक्तर्या नहेर्यदेखें व ज्वर्यन्तरम

क्रियास्त्रम् स्ट्रियास्य स्ट्रियास्य । भ्रामे प्रदेशस्य स्ट्रियास्य स्ट्रियास्य । भ्रामे प्रदेशस्य स्ट्रियास्य स्ट्रियास्य ।

क्षेत्र म्हण्या के वा में न्या के वा के व

न्भेरःव्। भूरःक्ष्युं नश्रेयः नःळ्यः म्यूवश्यः क्ष्यः क्षयः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः क्षयः क्षय

न्राक्रें नशेयानदे छया ही नुराहिं नुराहिं नुराहिं न स्वार्थान स्वार्थित स्वार्थ

न्ययः अर्थे व्याप्ति व्यापित्र विष्यः प्रविष्यः विषयः अर्थे व्याप्ति विषयः प्रविष्यः विषयः विषय

१ न्यायिः स्वायायाः श्रीः महिन्यिः प्रिवः निवा

क्ष्मः सुनः सें स्थान्यः । क्ष्मः सुनः सन् स्थान्यः ।

क्षेत्रायां नवर्गावेतां निर्वास्य सुताधा नोते न्यार्थ गार्टे सी सहस्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्त

न्धेरः वा

शरशःक्रिशःनश्रुद्रःपदेःन्तुःवयदशःन्गुदःवःनहेग्राशःहेःवर्ग्रेःनः

गुन्न त्यान्य निर्मे विश्व क्षेत्र क्

न्गु'मा अहे अ'मदे'भें व'न्व'न १न्।

१) ब्रैं पदेख्यायायायी सहस्यायीयाया । वहिषा हेत्र यावायायाळ प्रप्ति पदेश्यायाया । स्व पदेश्वर क्षेत्र क्षेत्र

नर्हेन्द्रेन् नार निना न ब्रान्त ने क्षेत्र प्रदेश के ना क्षेत्र स्वा निन्द्र ने ना निन्द्र ने ना निन्द्र ने ना निन्द्र ने निन्द्र निन्द्र ने निन्द्र निन्द्र ने निन्द्र निन्द्

म्ब्रास्थान्य स्थान्य स्थान्य

न्भेरःम्।
श्रॅमःन्यम् विकास्य स्थान्य स्थाः स्य

येश-नर्वेद-श्रॅट-नर्वद-श्रय-सें श्रुवाश-श्रिंश-संदे-मिट-स्रिश्वाण-पार्वेवानीश-प्रह्माश्चिट-स्रुय-विश्वानित्र-त्वाल-नित्य-त्वाल-नित्य-त्वाल-नित्य-त्वाल-नित्य-त्वाल-नित्य-त्वाल-नित्य-त्वाल-नित्य-त्वाल-नित्य-त्वाल-नित्य-त्वाल-नित्य-त्वाल-नित्य-त्वाल-नित्य-त्वाल-नित्य-त्वा

नडुःमा हिरःरे त्रहेव ग्री कुव नन् न

सहिवा हेव खुवाश ग्री हे श वज्ञ स्था । र्केश प्र प्र केश उव स्थव र्क्ष्व प्र । स्य प्र प्र क्षेत्र स्था क्ष्य प्र क्ष्य क्ष्य हो । स्य प्र प्र क्ष्य स्था क्ष्य स्था ।

यहेगाहेत् अटार्ट्न है । श्रू राज्ञान्य राज्ञे । हे या खेर यहेत् । विश्व विश्व

१) क्रेंशश्चे रंग्यानर्गे न्याये हिरारे विद्या में रात्रा निष्टि । विद्या म

न्से स्वित्रं से स्वेत्रं स्व

के स्थान्त्र क्ष्य क्ष्य स्थान्त स्थान स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान स्थान्त स्थान स्थान्त स्थान स्थान्त स्थान्त स्थान स्थान

२) र्केश महिन र्केश मिन प्रति क्षेत्र मिन प्रति मिन प्र

यार्केश्वाडिवार्ड्यानर्गेत्यते हित्ते त्या क्ष्या । त्येत्रत्य त्राण्णे तिर्वेत्रार्थे त्युक्ष्या ति त्युक्ष्या त्ये व्याचित्रा त्या । कार्हेवाश्वारु कुषा त्या त्या त्या त्या त्या त्या । वर्तेत् त्यहें श्वरावादेत्या त्या त्या त्या विश्वा । स्वत्य वि कुषा हित्र कुषा स्वतः विश्वारा व श्वरा ।

३) र्हेशन् स्वापित्राचे कित्र के स्वापित्र के स्वापित्र

न्धेरः वा

यायाः स्थित्वायाः व्यवः द्वाः याः स्थ्यः यादेः वित्। । यायाः स्थितः व्यवायाः व्यवः स्थितः स्थितः स्थितः । रादे.कु:ब्रव् ग्री:व:क्वर्य स्थयःवव कुवःवह्र द्यारादे ग्री के प्रश्चीय यात्रा ग्रवसःयरःन्त्रयः नरः हो रः देश विकः क्रिंशः ग्रवितः कुः स्रवः यः प्येरः प्रदेः हि रः केंशने न्या नर्गे न त्र शर्ने दाय छिन या वि खन र्रो या वन न् र्रेन पदे ह्यूद र्रे क्षे हिन्कें अर्थे अर्थ कुर्य निर्मा ग्रेनें वाया र कुर्य के या ग्रे के नःनरुरायानन्ग्रायस्यानकुत्रायाधितार्वे। । यदीरानेदारे यहेता कुर्धिता हर्त्रा लेख्यर्विः भूत्र्याधीः रवाहेषाः वीः क्रुवः द्रा वस्यावहेदः ग्री क्रुव क्रथ्य स्वर द्धंव विद है नय दे द्वा मी विद सर विव है नय दिव र्रात्राम् मेव में किया वर्षे (हिन्ने विद्वारी विवाहन) वे विद्वा हेव व य्यायायाद्या क्रियाववर्ग्या विद्राक्ष्यादे द्या विद्राक्ष्यायाववराया वर्गेद्रा राधिताया रवाहेंगामी कुत्ती रवाहेंगामश्या होता ही स्थापराक्षरा यदे क्वें त्र य दिर्देश से देश मात्र य खुष मात्र द क्वें न न माया य य विमाद र । नसूर्यानहें नित्ती के यावर्गे नित्ते यान्यान याने याने याने प्रति र्रे रंग श्रु र र र र र प्येत प्रश्न पादि पार य श्रु र ग्राट र्के पा र प्येत र्हे। विश गशुरुषायाष्ट्ररावहीदादर्गेषायरायेषयाते। वदीकित्वे देवाबदायावया र् सेर संदे लेग्राय निर्वित्र र त्वस्य या श्री।

त्रुव सेंद सेव परे कुव की सह्या नशुना

बेशमें दर्गन्त्र निवास के निवा बुदार्सेट सेद सदे कुद री जादद क्या स्टूट बद प्र १५ रा पेद री। दस गर्भेशःग्रीःन्त्रीःनःश्रास्य स्वरादेःविनःसरःन्हेन्यरः से त्राते। न्येरःव नुरक्षेरप्रा में या गारा श्रूरकी नुरस्याय सँग्राय श्रुं विन द्राय सर्र यदः रू. त्रीय सर अर्द्धर अ ग्राटा वर ग्री अ अर र सुग्री या अर र सूर अ ग्री। विद्रास्तरा से निर्मा स्त्री स् गुवन्वर्थः र्रेट्र स्ट्रेन्ट्र क्षेत्र के नानी निर्देश्य निर्वा ने निर्वानी । कुषासुवार्यायायादेरेयायाद्रायायाद्रायायाद्रीयाव्याक्षाक्षा नुन्यायया यथाग्रदान्द्रियराधी विशस्त्रीयात्रीयाह्याद्राह्म हैंगानी पळराङ्गी देखानहेन परे कुसरा दर प्रमुद्र भी भिरासर दर हमा ग्रम्भास्त्रवाध्याप्रयास्यास्य स्टावेद्राची स्त्राप्त प्राप्त स्वर्धान स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्र

स्व क्षेत्र क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र क

स्वाया विवासी स्वाया क्षेत्र त्या व्या क्षेत्र त्या व्या क्षेत्र त्या क्या व्या क्षेत्र त्या क्या व्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत

वर्ने र न अप सूत्र प्या या बुद यो सूत्र वर्गे या या शुस्रा

१ व्रुवःरमाःश्वरश्रुअः र्वेषायः पदिः क्रुः नडयः श्री

८८.स्.स्रेय.स्या.ज्रेश.सप्त.स्य.स्यय.स्य

तकत्त्तः र्हेन्द्रः हिंस्य स्वाद्याः स्वतः स्वाद्याः स्

गहिरायासनेरायदे हेरा द्येगया

सूत्र प्राची भी राज्य थी र से विश्व

याश्वरायास्त्र शुर्वार्क्षयात्रायदे हू।

र्रायित् श्रुप्त हिंद्य प्रेयः श्रुप्त श्रूप्त श्रुप्त श्रुप्त श्रूप्त श्रूप श्रूप्त श्रूप्त श्रूप श्रूप्त श्रूप्त श्रूप्त श्रूप्त श्रूप्त श्रूप्त श्रूप्त श्रूप्त श्

र्नेन क्रमा मार विमान हें र ज्ञारेन क्रम्या। मार विमान हें र ज्ञारेन क्रम्य क्षमा। मार विमान के सम्मान क्षमा। मार विमान के सम्मान क्षमा। मार के मार के सम्मान क्षमा। में स्थान के स्थान क्षमा।

न्दः सं र्या विष्यं क्षेत्रः कष्टेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः कष्टेत्रः क्षेत्रः कष्टेत्रः क्षेत्रः कष्टेतः क्षेत्रः कष्टेतः कष्टेत्रः कष्टेतः कष्टेतः कष्टेतः कष्टेत्रः कष्टेतः कष

१ व्यान्यस्य विद्या वि

न्यम्य नव्यम्यविष्णात्र्याः स्वाप्त्रम्थः स्वाप्त्रम्थः स्वाप्त्रम्थः स्वाप्त्रम्थः स्वाप्त्रम्थः स्वाप्त्रम् स्वाप्त्रम्यत्वर्षः स्वाप्त्रम्थः स्वाप्त्रम्भः स्वाप्त्रम्थः स्वाप्त्रम्भः स्वाप्त्रम्थः स्वाप्त्रम्यः स्वाप्त्रम्थः स्वाप्त्रम्यः स्वाप्त्य

ह्रास्ताविद्या पार्टें में ह्रा ग्री का प्रास्ताविद्या में में स्वा में स्व में से स्व में स्व में स्व में स

महिराप्ति मुन्न सर्कें दार्रे प्रमाप्ति प्रकेंद्र राष्ट्रे प्रमाप्ति सर्केंद्र स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत १ वे के अन्ते। नियान्त्रा के अन्ति अन्ति

न्तेरःव।

वार्वाःश्वाःविरःक्ष्रश्रःविरःश्वेतः।

देवेरःविरःविरःक्ष्रःविरःश्वेतः।

देवेरःविरःविर्यःक्ष्रःविरःश्वेतः।

वार्वाःश्वेतःविर्यःक्ष्रःविरःश्वेत।।

वार्वाःश्वेतःविर्यःश्वेतः।

वार्वाःश्वेतःविर्वःश्वेत।।

वार्वाःश्वेतःविर्वःश्वेत।।

वार्वाःश्वेतःविर्वःश्वेत।।

वार्वाःश्वेतःविर्वःश्वेत।।

वार्वाःश्वेतःविर्वःश्वेतः।

वार्वाःश्वेतःविर्वःश्वेतः।

वार्वाःश्वेतःविर्वःश्वेतः।

वार्वेतःविर्वःश्वेतः।

वार्वेतःविर्वेतः।

वार्वेतः।

वार्वेतःविर्वेतः।

वार्वेतः।

३ विजायित्यम्। द्याप्त्याप्ते छ्वापित्र विज्ञान्ते अत्यहेषाः हेवः श्रीः श्री विज्ञान्ते । विज्ञ

धिन्दिन्सहेस्यदिःवयः विस्वति। १ क्रुस्तिः सहेस्या १ क्रुस्तिः सहेस्या

५ देशसंदेर्नो द्रेरह्नसर्वे न्ते ह्यास्टे क्या स्था है द्रेर्स्य स्था है हि स्था स्था है हि स्था है है स्था है स्था है है स्था

हे उस नड्य पाट हे ट्व र से द्वा

८ रे देश से देश दिश ह्वा प्रशेष्ठ स्था होता से प्रशेष स्था होता से प्रशेष से स्था हिता है से स्था हिता है से स्था हिता है से स्था है से स्था

द्येरः वा

न्धेरःबा

भे स्याध्यानी निया नियान्य । नियान्य । उत्तर्भाष्ट्र । स्याध्य । स

क्रिंश्यर-दुः विद्यान्य स्ट्रिंग्य स्ट्रिंग

ही स्वायनमाश्राणित्यो अर्क्षेत्रचेत्रणित्ये स्वायात्रे स्वायात्रे

१० रे सर् चिरामी रही रहे लाय निर्मा सम्मान में वास माने माने स्थान में कार्य माने स्थान सम्मान सम्भान सम्भा

र्भरःव्। वह्याम्चिरःश्रुष्ठार्थःम्याद्ध्यःश्रुष्ठाः द्वरःक्चरःह्राप्तरःक्ष्याद्ध्यःश्रुष्ठाः व्यरःक्चरःक्ष्राप्त्रःक्ष्याद्ध्यःश्रुष्ठाः व्यरःक्चरःक्ष्याद्ध्यः स्वा व्यरःक्षरःक्ष्याद्ध्यः स्वा व्यरःक्षरःक्ष्यः स्व

१२ वे कें अंशि निया नियानित्ति । क्षित्र । क

ण्यात्रः श्रीतः मी श्रूमा मा स्थाने स्थित्र।।
श्रूमा स्थूमा मी स्थूमा मा स्थूमा स्यूमा स्थूमा स्यूमा स्थूमा स्थूम

द्येरःव। स्वःसहेशःस्रेगःवीःद्येतःतुःश्चेतःपदि॥ श्चेतःप्यतःश्चःवार्वेदःवुदेःद्येयःपदिसःद्रः॥ स्वःप्यतःद्यसःसदेःस्रकःश्चेरःदरःश्वःश्चेर॥ श्चेतःश्वगःद्यादःसदेःचवेदःस्रःवेदःद्रेग।

१५ विष्ठ अहमाहित् श्री विष्ठ व

न्धरम् इस्र स्व त्य त्य विकार्य स्व त्य स्व स्व त्य स

> द्येरःब्। भ्रेप्त्रेंद्र्युं प्रश्नायम्बाधिद्र्युं अप्यवस्था

धर्म् देव स्वर्म्य प्राची निर्दे न्या स्वी ।

हिंद् वित्य ह्व न्या विव दु वे दे ने हिंद न्या विव ने विव ने विव ने ने प्राची किंद ने क

२० र्नामान्यते निर्मा निर्मा स्थ्रीत् स्थित् स्थित स्

२१ रें नक्ष्र्राची सर्केनान्सन प्रित्राची सर्केनान्सन प्रित्राची सर्केना स्थान प्रित्राची सर्केना स्थान प्रित्राची सर्केना स्थान स्

२२ रे.हेर्च्ह्र्राचित्रंचित्यंत्रंचित्रंच

१३] शुक्र श्रेक् श्री द्वेस न में द्र श्रेष्ट्र श्रेष्

न्ययः शॅं खेनाश्चर्ह्न् स्यान्तः ते श्रुशः शॅनशा धिनः देतः वक्के सेन् तुः शॅं श्रृंतः न्वाः नीशा कः ११ शं स्थाः प्यानः स्यानः स्थाः तुशः स्था। स्तः १९ नः स्तः नीः निये सः श्रुशः हः से स्था।

१८ रे प्रश्नितः स्रोतः स्रोत्ति। स्रमः स्राधितः स्रोतः स्

१५ विन्द्रित्येन श्री । श्रिन्यानिने प्यमाश्रित्ये स्त्राप्त स्त्र स्

द्येरवा गै'यःवःदे'यथाः गुरःकं रेगाः द्रा য়ुःसर्ळें दे र्र्यूर्ट्स व्याचुर्ट्स विश्वेष्ठ विश्वा व्याच्छे देव व्याच्छे द्वा व्याच्य व्याच व्याच्य व्याच व्

१२ १ इस्र वश्चरश्चरश्चर हो द्ये वाद लेवा वर्गे द्यं दे दे दे दे विष्ठ वाद के दे दे दे दे विष्ठ वाद के दे दे विष्ठ वाद के दे विषठ वाद के दे विष्ठ वाद के दे विषठ वाद के दे विषठ

१८ रे बेट निर्देश द्ये प्रत्य क्ष्य क्ष्य

येवायान्य निर्मात्य स्त्रीय विष्ण निर्मा स्त्रीय विष्ण निर्मा स्त्रीय विष्ण निर्मा क्षेत्र स्त्रीय स्त्रीय

द्येरः वा

न्व्यास्य स्वास्य स्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य

स्वास्तिः विष्यः श्विसः सद्धाः स्वित्।। स्विसः स्वास्त्रः स्वास्तिः विष्यः स्वितः स्वतः स्वितः स्वितः स्वितः स्वि

यश्चर्यात्रः महेत्। अक्ष्यः यह प्राचे हे शःशः क्ष्याः श्चितः यह त्यः प्राचे यह त्यः प्राचे यह त्यः प्राचे यह त

द्येरः वा

कुःनेयः द्वरः संविद्वर्गः कुःनेयः द्वरः स्वितः स्वतः स्

३१ व्यक्षः अर्द्धः स्थ्वीः द्यो। अर्द्धः न्याः स्वादिः द्योः द्वादे । स्विः विद्याः स्वादे । स्विः विद्याः स्व

न्धेरः वा

न्येते क्रिंत प्रेंत प्रवास्त्र के प्या ह्वा शान्त के वा शान्त के स्था हिंदा से के त्या शान्त के प्या हिंदा से के त्या शान्त के प्या हिंदा से के त्या शान्त के त्या शान के त्या शान्त क

१) अर्केना न्यव के प्यर क्रें व से न मा रमेर'वा यानयःक्षेटः द्वारः सं स्यानयः वः क्षेटः सः निवा। श्रूरः कुरः तुरः नः श्रूरः गर्ने गः बुरः गे राः धेरः॥ वयाकुरायाधियावयाकुरानुायानविद्या वर्त्ती अर्गे व न्या प्रशादित्ती न विद्या या न है।। द्येदे क्रिंब न्या द्येरः वा वर्देन वर्दे न वर्दे ह अर्केग न विव न अर्गुग्या वसासमित्रे भूर र्के ग्राम् राविव हिर भू मह्वा। ष्ठि सुन्दे नविव रवन्त्र दे नशुर सम्मा रेत्र केत्र ग्रारे र प्रवित गुर प्रारेत् घर के।।

गशुस्रायात्र्वासाक्त्र्वात्रम्य प्रतेष्ठ्वात्रम्य विष्ठा प्रतेष्ठ्रम्य विष्ठा प्रतेष्ठ्रम्य विष्ठा प्रतेष्ठ्रम्य विष्ठा प्रतेष्ठ विष्ठा विष्ठा

१ वर्ष्यान्यत्रम् अस्य स्वान्य विषयः म्वा निर्मान्य स्वान्य स्

न्यार्केशनर्न् हे कुन्यर प्रवेत्र रोर पर्ना

३ वर्षु अःविद्यान्य स्थाः प्राचित्र विद्याः स्थाः स्थाः

च्रेसवयः द्याः यहिष्यः क्ष्यः प्रस्तिः क्ष्यः विद्यः क्ष्यः विद्यः विद

५ क्ष्मश्यान्त्रम्थः क्ष्मश्यान्त्रम्थः क्ष्मश्यान्त्रेतः व्यान्त्रम्थः क्ष्मश्यान्त्रेतः व्यान्त्रम्थः क्ष्मश्यान्त्रम्यः व्यान्त्रम्थः व्यान्त्रम्थः व्यान्त्रम्थः व्यान्त्रम्थः व्यान्त्रम्यः व्यान्त्रम्यः व्यान्त्रम्यः व्यान्त्रम्यः व्यान्तः व्यान्यः व्यान्तः व

() कःवश्वारुव्यान्त्रम्य क्ष्याः व्यान्त्रम्य व्यान्त्यम्य व्यान्त्रम्य व्यान्यम्य व्यान्यम्य व्यान्यम्य व्यान्यम्यस्य व्यान्यम्यस्य व्यान्यस्य व्यान्त्यम्यस्यम

भे प्रवासित्रम्य म्बर्गामा स्थान स्

द्येरः वा

द्येर्व्या श्रेश्वा निव्य र्या मिल्रेर्यं स्था मिल्रेर्यं म

१ व्यवस्यतः मह्मा न्यतः महमा न्यतः महमा क्ष्याः स्वरः क्ष्यः महमा क्ष्यः महमा न्यतः महमा क्ष्यः महमा न्यतः महमा महम

() श्रेष्ट्रव्यत्येम् ज्ञान्य क्ष्यं प्रेत्ये प्रेत्यं स्थयः यव क्ष्यं प्रेत्यं प्र

चनः क्रुश्राचेन्यत्राचन्त्रभः ख्रुसः न्याः व्यान्यत्रः व्यान्यत्रः व्यान्यत्रः व्यान्यत्रः व्यान्यत्रः व्यान्यत् वयान्यत् व्यान्यत् व्यान्यत्यत्यत्यत् व्यान्यत् व्यान्यत् व्यान्यत्यत् व्यान्यत्यत् व्यान्यत

न्येरःव। ग्रुनःयदेःवीं त्यस्याय्येव द्याः या नेवायः यदे। हैं ग्रुयः थ्वः न्यायदेः ग्रीनः कुदेः नतुनः हेः वे॥ ग्रुनः नया गर्नेवः नयोग्यायः यहुनः विद्यः विद्याः। ग्रुनः व्याप्ताः ग्रीनः कुदेः नतुनः हेः वे॥ ग्रुनः व्याप्ताः ग्रीनः विद्याः विद्

 १३ वृदेः वा ब्रुवाशः क्रुवा क्रुव्यक्षं व्यक्षः व्यवद्यविद्यक्षः विद्यक्षः विद्यक्यक्षः विद्यक्षः विद्यक्यक्षः विद्यक्य

गर्रे निवेदेग्व ब्राया क्ष्या स्वाय विवाय क्ष्य निवेद्य विवाय क्ष्य क्ष्

द्येरःव। श्रुवःवहेवशः इःववेः वर्त्तः इरःश्रेवः यः धे॥ यारा छेतः याश्यरः यो । सः श्रुवाः यार्वे वः वृवेः त्यत्राः श्रुवः श्रुवाः ववाशः सुरः वेशः यञ्जूवः छेतः यवे॥ त्रुवः श्रुवाः ववाशः सुरः वेशः यञ्जूवः छेतः यवे॥ त्रुवः श्रुवः ववाशः सुरः विशः यञ्जूवः छेतः यवे॥

१६ रे क्रिंगायर माञ्चयाय क्रिया निर्मात्त स्वान्त स्वान स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान स्वान्त स्वान्त

ह्य माने क्षेत्र क्षे

न्धेरः वा

यहसासर्गित् त्वासितः वास्त्राः वीः नत्तः हैः प्ये।।
स्राः त्याः त्याः वितः वीः स्राः त्याः स्राः वितः वा।
स्राः त्याः वितः वीः स्राः त्याः स्रीः स्रीः वितः वा।
स्राः त्याः वितः वीः स्राः त्याः स्रीः स्रीः वितः वा।
पक्षः स्रोतः स्राः प्याः वितः वितः वितः वा।
पक्षः स्रोतः स्राः प्राः वितः स्राः वितः स्रीः स्रीः वितः वा।

१८) सक्रमायहिं वाचा त्राचा त्राचा निर्मात्त्र मित्र प्रत्या क्षेत्र प्रत्य प्र

द्येरःव। क्रॅंशःग्रेःग्वामशःयदेःर्रगशःद्युयःश्चरःश्चेरःग्रेश। सुःश्चेमशःर्मेयःयदेःश्चेरःयःसेःचर्चरःयदे।। त्यमःदःश्चेरःयदेःश्चयःद्यस्यःदेशःग्वन्याः व्यमःयदेःयसःयःर्वस्यःदेशःग्रहःश्चेत।।

१९ वाड्याश्चर्यक्षः श्वीः वाड्याश्चर्यः व्याः व्यः व्याः व्

सहस्य विष्यः त्वा विष्यं कुष्ये से विष्यं क्ष्यं क

निन्ध्याम्य विद्यास्य विद

ग्रे नेपार्थः क्रियायायया नेपार्थः निहित्याद्वे क्षियाः यह निवा क्षियः यह निवा क्षयः यह निवा क्षियः यह निवा क्

द्येरः वा

सर्ळे चुर्या ने स्ट्राट्से पार्क्त न्या। चे दुवे चे क्षर प्रिच्या चित्र सु न चुर्या पे ना। चे दुवे चे क्षर प्रक्रिया चित्र सु न चुर्या पे ना। स्राप्य सुवे समीत प्रमार मा पी पर्दे न पार है। चुर्य से ना गुँ पार मा प्रमार स्था में न में प्रमार मा प्रम मा प्रमार मा प्रम मा प्रमार मा प्रम मा प्रमार मा प्रम मा प्रमार मा प्रमार मा प्रमार मा प्रमार मा प्रमार मा प्रमार मा

१ वायान्य वायान्य वायान्य वायान्य वित्य व

द्येरः वा

न्वायः वर्षः श्रीन्द्रः दरः श्रीः सन् स्वर्धः स्वा र स्वायः वर्षः त्र स्वर्धः स्वर्धः स्वा सः श्राप्त्रः त्र स्वर्धः स्वर्धः स्वा न्वायः वर्षः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वा न्वायः वर्षः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वा न्वायः वर्षः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः

र् प्रमें द्राया के प्राया कर के प्राया के प्राय के प्राया के प्

न्भेरःव्। सहस्रासंस्थित्वा क्षित्वा क्षित्वा । स्राह्म स्टिन् स्टिन स्टिन् स्ट

२ ह्याचित्रायायया वाययाचेत्रह्याचेत्रित्रिक्षेवायम् वित्रात्रेत्र्ये क्षेत्रायम् व्याच्याच्याः विवास्य व्याचेत्र्ये क्षेत्रायम् व्याचेत्र्ये क्षेत्रायम् व्याचेत्र्ये क्षेत्रायम् व्याचेत्र्ये क्षेत्रायम् व्याचेत्र्ये क्षेत्रायम् व्याचेत्र्ये क्षेत्रायम् व्याचेत्रे क्षेत्रे व्याचेत्रे क्षेत्रायम् व्याचेत्रे क्षेत्रे क्षेत्रे व्याचेत्रे क्षेत्रे व्याचेत्रे क्षेत्रे व्याचेत्रे क्षेत्रे व्याचेत्रे क्षेत्रे व्याचेत्रे क्षेत्रे व्याचेत्रे क्षेत्रे क्षेत्रे व्याचेत्रे व्याचेत्रे व्याचेत्रे व्याचेत्येत्रे व्याचेत्रे व्या

द्यं र ज्ञा शुक्ष स्थे द : श्या : प्रियं : स्थे :

भ्रे देग्रथः नरःग्रथः। ग्रथः ग्रेट्रदेग्रथः व्याः स्ट्रिं प्रिः व्याः व

गुव-ग्रथः नरः हेर पदे कुवा

द्येरःव। सळवःद्ये से से हिंगः स्रूगः वळेरः विदः दुः चवद्या। वनसः सेवः रे मृः द्वुसः व्यूरः विदः दुः चर्गेद्या।

८ व्राच-चर्यायय। वायय व्रेट्-च्रःक्षेवायां वेवाक्ष्यायाः व्रेट्-चर्ते क्षेत्रं राच ग्राव वायय वर्षः विद्याय व्यायय व्यायय विद्याय व्यायय विद्याय विद्

द्येरः वा

भु: ५वा अर्चे द: र्से अ: ४८: वी: कुव्य: विश्वः दिरा। र्केट र या कुवा अ: य अ: भु: हे द: हे ट: य वे: रेवा अ।। वर्केट अ: य र : जु अ: र्से : सुव्य: इस्राय: र्के अ।। द:वार्वे द: दर: सुर्थ: ४८: वी: खुर्थ: गुट: दें।।

ये देवाश्वाश्वाश्वाश्वाश्वा क्षेत्राः श्वी स्वाश्वास्य वर्गे द्रायश्वाश्वाश्वा क्षेत्रः श्वी स्वाश्वास्य वर्षेत्रः स्वाशः स्वशः स्वाशः स्वाशः

यदे कुत्

द्येर्य। श्रें सळ्यान्सर्थे र्सेन्याचेत्राचित्रः प्राय्याचेत्रः प

क्रिया ने अप्तिया अव्याया अव्याया क्रिया अव्याय विद्याया अव्याय स्थित स्थाय स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थाय स्याय स्थाय स्थाय

येग्रयन्त्रम् व्याप्त्रम् स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्यान स्थान्य स्यान्य स्यान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान

प्रियान्य विषयः व

१० रवायः नदेः वार्ययः न्त्रेत्। वार्ययः न्त्रेत्रः स्त्रेत्। स्वायः नदेः वार्ययः वित्रः वित्रः वार्ययः वित्रः वित्रः वार्ययः वित्रः वार्ययः वित्रः वार्ययः वित्रः वार्ययः वित्रः वित्रः वार्ययः वित्रः व

द्येरः वा

बर क्रिंत स्थेया वित्र स्था के स्था क्रिंत स्था वित्र स्था क्रिंत स्थेया वित्र स्था क्रिंत स्था क्रिंत स्थेया क्र

११ रे व्याहिमायाश्वया होता वाश्वया होता स्वायया स्वयया होता स्वायया स्वयया स्य

न्धे र वा

यार्थः रेयाः अप्यश्याः प्रश्वाकः श्रेषः श्रुवः श्रुवः रहा। यान्यवः श्रेषः श्रेषः श्रिवः श्रेषः श्रेषः श्रिवः श्रेषः श्रिवः श्रिवः श्रिवः श्रिवः श्रिवः श्रिवः श्रिवः श्र

११ व्याप्त मार्था में स्वाप्त मार्था में स्वाप्त में स

न्येन्स्

द्याः नित्र स्त्र स्त्र

भ्राम्य में स्वाद्य के व्याप्त स्वाद स्

यो क्षेत्राचर्स्नेर्या याहेरिह्यस्थायर्थायः विवास्याहेरिक्षियाः योडेयाः प्यत्यायस्थितः विवास्य हित्रा विवास्य हित्रा क्षेत्र

यो क्षेत्रार्देव्याष्ट्रेयायाच्याच्याचित्रम्या क्षेत्राःश्चित्रप्यदःयाच्याः वर्षेत्रप्यदःयाच्याः वर्षेत्रप्यदः वर्षेत्रप्यवः वर्षेत्रप्यदः वर्षेत्रप्यदः वर्षेत्रप्यदः वर्षेत्रप्यदः वर्षेत्रप्यदः वर्षेत्रप्यदः वर्षेत्रप्यदः वर्षेत्रप्यदः वर्षेत्रप्यदः वर्षेत्रप्यवः वर्षेत्रप्यदः वर्षेत्रप्यवः वर्यवः वर्षेत्रप्यवः वर्यवः वर्षेत्रप्यवः वर्यवः वर्षेत्रप्यवः वर्यवः वर्षेत्रप्यवः वर्यवः वर्

इनान्यत्र्वीनान्यत्रः क्वत्। नन्नन्यत्रः निन्नः त्र व्यानः त्र न्यानः त्यानः त्यानः त्र न्यानः त्र न्यानः त्यानः त्र न्यानः त्र न्यानः त्यानः त्यानः त्र न्यानः त्य

न्र्रास्त्रिः तुरुष्यानगाः श्रीत्राष्ट्रा श्रीत्रा

च्ये क्रॅंश स्वेचाया क्रॅंश उत्ति व्या यो क्रेंश या प्राप्त स्वा व्या या प्राप्त स्व क्षा क्रें क्षें या क्षें प्राप्त स्व क्षा क्षें या क्षें प्राप्त क्षें या क्षें प्राप्त क्षें या क्षें वा क्षें या क्षें या क्षें या क्षें या क्षें या क्षें या क्षें वा क्षें या क्षें या क्षें या क्षें या क्षें या क्षें या क्षें वा क्षें या क्षें या क्षें या क्षें या क्षें या क्षें या क्षें या

५ वे के अरु दिन विष्णामा के अरु से में में स्थान स्था

क्ष्म्याक्षेत्राच्यां द्वान्त्रम् द्वान्त्रम् विष्णाः स्वान्त्रम् स्वान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम् स्वान्त्य

श्रम्भाक्ष्याक्षात्र्वाक्षात्र्वे व्याक्ष्याः श्रीत्र व्याक्ष्यः स्वाक्ष्यः स्वाक्ष्यः स्वाक्ष्यः स्वाक्ष्यः स्व

भे त्वश्रात् वर्षेष्याय त्वश्रात् वर्षेत्र क्षेत्र क्

यक्षत्रः व्याः विद्याः विद्या

() न्वर्षोश्वर्षेष्यः श्रीष्यः श्रीष्यः व्यान्तः विष्यः विषयः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विषयः विषयः विषयः विष्यः विषयः वि

१० र्वा वा श्री श्राच्या स्वर्था स्वर्था व्या वा स्वर्था वा स्वर्था

द्येर्ज्ञ श्वार्थं क्रवाश्चर्यं स्थ्यं स्याः स्थ्यं स्यं स्थ्यं स्यं स्थ्यं स

११) विश्वास्त्र क्षेत्र विश्वास्त्र क्षेत्र क्

न्येन्द्र्व।

संग्वित्यर्षेन्द्र्यः चुन्यः स्रेगाः विष्याः स्थ्या।

नगुवाः प्रश्चाः स्वाद्यः स्वत्यः स्वाद्यः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स

द्येरः वा

विन्नः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः व्यान्यः विवाद्धः व्याः विन्यः क्ष्यः विवाद्धः व्याः विन्यः क्ष्यः विवाद्धः विवादः व

१३ वें वाया श्रीया प्राप्त विषया प्राप्त विषया श्री विषया श्रीया प्राप्त विषया श्रीया श्रीया विषया वि

१० विवर्ष्य स्वित्त्वीयाः प्राचित्तः हित्त्व्या केत्त्वर्ष्यः स्वित्तः हित्त्वर्षः स्वित्तः हित्त्वर्षः स्वित् स्वित्तः हित्तः स्वित्तः स्वित्तः स्वित्तः स्वितः स्वतः स्वितः स्वतः स्

१५ े नावद्र: द्वार्ग्य स्वीं नाः प्राप्त हो द्वार्गः हो दे दे दे दे विकास हो दे स्व के स्व क

१६ रे वयश्राभ्येशत्वेयाया रयाया श्राप्ते हेर त्वेया हो र श्रुवा

व्ययः स्रोतः स्रायः श्रुवः सम्प्रम्यायः विषाः व्ययः शुः वर्गे दः वयः वर्षे वाः समः विष्यः स्रोतः स्रायः श्रुवः समः द्रायः विषाः वययः शुः वर्गे दः वयः वर्षे वाः समः

न्धेरः वा

न्वरश्रास्त्रम्भवेत्रस्त्रम्भवेत्यम्यम्यवेत्रम्भवेत्रम्भवेत्रम्भवेत्यम्यवेत्यम्यवेत्यम्यवेत्यम्यवेत्य

द्येरः वा

मुलक्ट्रियाम् स्ट्रियास्य विद्यास्य स्ट्रियाम् स्ट्रियाम् स्ट्रियास्य स्ट्रिय

ग्री श्राम्य ग्रीयाय निवाता न्याता निवाता श्री है । व्यय श्रीम्य श्रीम श्रीम

न्येरःम्।

पार्ड्वाःयमाःमश्चनःपदेःश्चितःम्।

प्राचाःयमःमश्चनःपदेःश्चित्रम्।

प्राचाःयमःमश्चनःपदेःश्चित्रम्।

प्राचाःयमःमश्चनःपदेःश्चित्रमःमः।

प्राचाःयमःमश्चनःपदेःश्चित्रमःमः।

प्राचाःयमःमश्चनःपदेःश्चित्रमःमः।

प्राचाःयमःमश्चनःपदेःश्चित्रमः।

प्राचाःयमःमश्चनः।

प्राचःयमःमश्चनः।

प्राचःयमः।

प्राचःयमःमश्चनः।

प्राचःयमःमश्चनः।

प्राचःयमःमश्चःयमः।

प्राचःयमःमश्चनः।

प्राचःयमःमश्चःयमः।।

क्रुन्।

१९ वर्केट्रम्थायम् अत्राद्धाः स्थान् । अत्राद्धाः स्थानः । अत्राद्धाः । अत्राद्धाः । अत्राद्धाः । अत्राद्धाः । अत्राद्धाः । अत्राद्धाः ।

द्वेन्। संदेश्वा व्याप्त स्वर्धा स्वर्धा स्वर्धा स्वर्धा स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य

निर्म् के.प्ट्रे-श्रुक् श्रुवा वाश्रेर की. र्मेर की. श्रुव्य प्रदूष प्रवा वाश्रेर की. र्मेर का. युव्य प्रवा विश्व विश्व की. युव्य प्रवा विश्व की. युव्य क

११ विष्ठा विष्ठ

द्यंत्रःम् द्वे से दःद्वाः प्रदेश्वस्य स्थाः से या श्राण्या स्थाः स्था

११ रें त्र पालव श्री अपने पाया प्राप्त प्राप्त श्री पालव श्री या व्यापा श्री पालव श्री अपने स्था प्राप्त श्री पालव श्री अपने स्था प्राप्त श्री पालव श्री या व्यापा या व्यापा

द्येरःव।

श्रःरेगाः अर्थेवः अर्ळेरः पृष्ठिणः चिरेः आप्रशः प्रवरः देश।

पृर्तः श्रुः अरः प्रवे चे चा चे चा अः प्रदे छ।।

प्रवः ग्रुटः चा हेटः अवयः अः अर्दे वः क्रुः अर्ळेः धे आ।

प्रवः कुः प्रवृदः चरः देश अः यः से दः खः श्रु आ।

१३ े कुशर्योग्या प्रायाग्यापे हेन् कुर्यं स्वार्थं वारावेगाया यहेन्द्रस्थायोग्याय्ये क्ष्यं स्वार्थं क्ष्यं स्वार्थं क्ष्यं स्वार्थं स्वार्यं स्वार्थं स्वार्यं स्वर

नत्त्रः सः देवः नाव्यः नर्गेतः स्वा नश्च नः न्योदः देवः नर्गेतः व्या देः श्वः श्च नः न्योदः स्व याद्याः स्व या देवः सः सः नाव्यः विवा पर्योदः सः दे॥ देवः माव्यः नर्गेतः स्व सः न्याः स्व याद्याः स्य

<u> न्रेज्यक्त्र्यः व्याक्त्र्यः वित्र</u>्ये

१) गुर्नाह्यनः र्नेत्रमाल्यः नर्गेन्या नश्च्यः च्यानः लेगः श्वेतः र्ने नर्गेन्यः ने हिन् श्च्यः छेन्। छ्यः छेः नवेः नर्ने अः येः माल्यः लेगः नर्गेन्यः येः क्या

> द्येम्य । श्रे क्ष्म्य प्रत्य प्रत्

१ वित्रस्य उत् श्री दिन प्रावित पर्मेत्र । वश्च व्याप्त विवार्श्व र् प्रावित श्री वित्र स्वर श्री दिन स्वर प्रावित पर्मेत्र । वश्च व्याप्त प्रावित विवार्श्व विवार्भ विवार्

न्धेरः वा

क्यान्त्राक्त्र्याः श्रम्याः श्रम्याः वर्षेत्रम्याः श्रम्याः वर्षेत्रम्यः श्रम्याः वर्षेत्रम्यः वर्यः वर्षेत्रम्यः वर्यः व

यो श्रुप्ताति देव मान्य निष्ठा श्रुप्त निष्ठा श्रुप्त निष्ठा श्रुप्त निष्ठा निष्ठित स्थित श्रुप्त निष्ठा न

रमेरः वा

५) शे.स्थायदे.र्द्रवाववायग्रीरामा पश्चिता च्या

व्यः श्रुवः हो ८ ग्याटः दे १८ र स श्रुवः यथे १८ दे सः श्रें गाववः विवा वर्गे ८ र यथे श्रुवः व स्व १ यथे श्रुवः यश्रुवः यश्रुवः यथे १ थे। श्रुटः व्यः त्रुवा गो : कें सः यः श्रुवः वर्दे : के।। श्रेटः व्यः त्रुवा गो : कें सः यः श्रुवः वर्दे : के।। श्रेटः यो व्यव्या व्यवः वे स्व १ विवः विवा वर्गे ८ र श्रुवः विवा वर्गे १ व्यवः श्रुवः व्यवः श्रुवः व्यवः श्रुवः व्यवः विवा वर्गे १ व्यवः श्रुवः विवा वर्गे १ व्यवः श्रुवः व्यवः श्रुवः व्यवः विवा वर्गे १ व्यवः श्रुवः विवा वर्गे १ व्यवः श्रुवः व्यवः विवा वर्गे १ व्यवः विवा वर्गे १ व्यवः विवा वर्गे १ व्यवः श्रुवः विवा वर्गे १ व्यवः श्रुवः विवा वर्गे १ व्यवः श्रुवः वर्गे १ व्यवः वर्गे १ वर्गे १

() र्स्थायतेः र्न्द्राण्यव्यान्त्रान्त्रा गाविः ने त्याः द्व्यान्त्रान्त्रा व्यान्त्रान्त्रा गाविः ने त्याः द्व्यान्त्रा व्यान्त्रा व्यान्त्र व्यान्त्य व्यान्त्र व्यान्त्र व्यान्त्र व्यान्त्य व्यान्त्र व्यान्त्य व्यान्य व्यान्त्य व्यान्त्य व्यान्त्य व्यान्त्य व्यान्त्य व्यान्य व्या

भे र्स्थायन्त्रः भेर्द्धायि विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विषया विषया

र्वायनः श्रेन् थे ह्व न्द्रमार्थः श्रुक्षः श्रेवा। ष्यः त्रः वाशेन् स्थित्वा य्वन् । व्यव्यक्षः व्यक्ष्यः स्थित्। स्थायः वर्षः श्रेन् । स्वायः वर्षः वर्षः स्थाः स्था

भे भे में स्थानित में प्राप्त में में स्थानित में प्राप्त में स्थानित में स्थ

द्येरः वा

च्याम्यान्य स्थान्य स

नक्तर्यः व्याप्ताः उत् क्षेत्र क्ष्यः व्याप्त्यः श्रुवायः व्याप्त्यः व्याप्त्रः व्याप्त्यः व्याप्य

१ विश्वराष्ट्री विश्वराष्ट्रियाः प्रस्ति । द्रो दिवः स्र ह्रा स्थाः स्याः स्थाः स्य

न्तरम् स्वःसहं सःन्गरःग्रस्थः स्वाःन्तिःन्धेन् स्युरःस्ते॥ श्चेतःयेग्रसःन्गरःस्ते। श्चेतःयेग्रसःन्गरःस्ते। सर्द्धःसःग्रमः श्चेतःस्ते। सर्द्धःसःग्रमः श्चेतःस्ते। सर्द्धःसःग्रमः श्चेतःस्ते। सर्वेतःस्त्राः स्वाःस्ते। सर्वेतःस्त्राः स्वाःस्ते। स्वाःस्तेनःस्त्राः स्वाःस्ते। स्वाःस्तेनःस्त्राः

३ व्राप्तिः व्याप्ता वर्षा दिने दिन विश्वा विश्वा व्याप्ति वर्षा विश्वा वर्षा वर्या वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा

য়ৢ र व श श्चर प्यर व्हें वा कें श वार विवा य व हे व व श शें शें र व हो र प्रेर क्र

न्धेरत्।

यन्यारुव्याः कुव्यः प्यार्थेर्यः होन्यः हेर्।।

श्रूमः स्टेरिः तुः भेः श्रीरः वीशः नश्रूनः यः भेश।

श्रूमः हेरिः तुः भेः श्रूमः तुवाः न्दः सक्षुं नश्रः ग्रूमः।

स्रावयः वर्षे विः न्वदः सुवाः नर्विवः यशः स्रसः यनः न्हो।।

स्रावयः वर्षे विः न्वदः सुवाः नर्विवः यशः स्रसः यनः न्हो।।

ह्म वर्षामान्यते ह्म प्राप्त निमान्य महेत स्था हिन स्था

द्येरः वा

कु: श्रुक्षां केट श्रुक्षां क

भ्रे गहर्तक्षिण्यःभ्रम्पायः उत् द्रोर्द्रियः सर्ह्रम्यः क्रिं प्रम्थः स्थाः स्

ঘর-শ্রুবা

न्धेरः वा

क्रॅं स्र्रेन् लीका व्याप्त स्रित्र प्रति । श्रुवा प्रवित् । श्रुवा प्रति । श्रु

५) हेव शै श्रिंग य उवा निर्देव सक्द या प्राप्त सुवा वया हेव श्री श्रिंव या श्रिंग य उवा निर्देश स्वा वया हेव श्री श्रीं वया श्रीं या प्राप्त सुवा वया हेव श्री श्रीं या प्राप्त सुवा

र्भेर'वा

यारमारुवाः में मार्थाः मार्थाः में मार्थाः मा

म्या व्याप्त स्थान स्था

द्येरः वा

रे विट उत्र या यह सामये सह क्षेत्र प्राप्त का स्थान साम स्थान साम स्थान स्थान

भ्रे अर्ड्स्थर्केशन्त्रत्वेन्द्रिश्वाहेश्यान्तेश्वाहित्यः प्रतिक्षित्वास्य व्या त्रिस्त्वा त्रात्त्रावेत्य्य स्थ्यात्र क्ष्याव्य स्थित्यः स्थितः स्यतः स्थितः स

हो सर्ह्य के स्वा के स्व के स

गठिगःविंगःभेटःकेतःवें रःतुदेःहः अःयग्रमा

१० रे नेन्याया स्वतः वितास स्वतः द्वा द्वा नेतः हें द्वा ह्वा स्वतः स्व

१ वि: नुस्याः श्रुर्यात्र श्रुर्यः विद्याः हेत् यायायः स्वर्यः श्रुर्यः विद्याः हेत् यायायः स्वर्यः श्रुर्यः विद्याः हेतः यायायः स्वर्यः स्वर्य

द्यः क्रूव प्रदे मुवा

न्धेरः वा

श्वन्त्रश्वर्यःश्वन्त्रः श्वन्त्रः श्वन्त्रः श्वन्त्रः श्वन्त्रः श्वन्त्रः श्वन्त्रः श्वन्त्रः श्वन्त्रः श्वन्त श्वन्त्रः श्वन्त्रः श्वन्तः श श्वन्त्रः श्वन्तः श्व

त्रे वरः त्यः क्षेत्रः स्थाः स्थाः

द्येरः वा

यान्त्रमाञ्चार्त्रात्रमान्त्रमान्द्य

३ वर्ष्यास्त्रियः प्रत्वित्र स्वित्र स्वत्र स्वित्र स

द्येरःव्। श्वाचेत्रःयेत्रःयरःश्वेरःयदेश्वः च्याक्र्यःयेत्रः श्वेत्रः य्याक्र्यः श्वेत्रः य्याक्रः य्याक्रेत्रः य्याक्रः याक्ष्यः याक्षयः याक्ष्यः याव्यः याक्ष्यः याव्यः याव्

नडुःसःनश्रुशःनईद्ग्गिःक्वत्।
देशःसंग्वित्रःविषाःनईद्गःतर्देद्गःत्रशाः
देःद्गःसद्धंदशःसवेःद्विषाःनईद्गःसंग्वित्।।
नश्रुशःसवेःद्वंत्यःग्रीःनईद्गःसंग्वदः॥
देवेःनश्रुशःनईद्गक्तवःभितःवे॥
द्वेःनःनवेःभेःनद्वाःवेद्गःनित्र्दे॥
द्वेःनःनवेःभेःनद्वाःवेद्गःनित्र्दे॥

१) श्रुविः नश्रू अः निर्दे न् ग्रुः क्वा नश्रू अः निर्दे न् ग्रुः क्वा निर्दे न् ग्रुः क्वा निर्दे न् ग्रुः क्वा निर्दे न् व्या निर्दे ने व्

सर्वेदाकें ग्रान्सें से प्रकें र रूप र प्रा

१ जिन्माने मन् रहेन जिन्माने स्वापित स्वापित

द्येरम् स्यानदे र्वेरम् स्यानदे र्वेरम् न्यानदे र्वेरम् न्यानदे त्रम्यान्य स्वान्य स्वान्य स्वार्थिय र्वेरम् स्वार्थिय र्वेरम्

मुश्यान्द्रित् न्यू नुदेश्चित्र प्रमाद्य विष्या म्यान्त्र स्वित्र स्वत्य स्वत्य स्वित्र स्वित

च्ये श्र्वा स्वा प्रा प्रा प्रे प्रा हे प्र ह

नड्रगडेमान्स्यानुरमोन्छ्य।
न्द्रिं त्रेन्द्रिं केन्द्रमान्ने न्छ्य।
सळस्य स्यान्य न्यान्य त्रे त्रुन्ते न्छ्य।
स्वान्य न्यान्य त्रुन्ते न्छ्य।
स्वान्य न्यान्य न्यान्य त्रुन्ते न्छ्य।
स्वान्य न्यान्य न्यान्य त्रुन्ते न्छ्य।
स्वान्य न्यान्य न्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप्

१ विन्यसम्बद्धाः च्या विन्यसम्बद्धाः च्या व्या विन्यसम्बद्धाः विन्

द्यं र त्र्यं स्था त्र्यं त्यं त्र्यं त्यं त्र्यं त्र्यं

१ वे कें कें स्वाया मुना नहें न माने ने ते मुना कें स्वाया मुना ने कें कें माने स्वाया मुना ने कें कें माने स्वाया मुना ने कें कें माने स्वाया मुना मिला माने स्वाया मुना मिला माने स्वाया मुना माने स्वाया मुना माने स्वाया माने स्वाया

द्येरः वा

म्या देश प्राप्त स्वाया मुद्दा यदिन स्वया प्राप्त स्वया स्या स्वया स्वय

द्येरःब्रा श्लेशःश्लेषःक्षेत्रःक्षेत्रःक्षेत्रःविद्या

द्रिंशळ्त्रःस्यान्त्रः द्रिंशे अष्ट्रस्यान्त्रेश्वः स्रहेत् द्रः स्रहेत् स्रह

ग्रे श्रेस्य प्रत्र प्रत्र म्या श्रेस्य प्रत्य क्षेत्र क्षेत्

द्येरःव। र्या प्रक्षेत्रभाग्यक्कः स्रवा प्रक्ष्यः प्रदेश्वरः प्रवा प्रक्ष्यः याद्यः प्रवा प्रक्ष्यः याद्यः प्रवा प्रक्ष्यः याद्यः प्रवा प्रक्षः प्रवा प्रक्षः प्रवा प्रक्षः प्रवा प्रक्षः प्रवा प्रवा प्रवा प्रक्षः प्रवा प्रव प्रवा प्रवा

१ रेशेसस्येन्द्रन्द्र्म अस्यस्येन्येन्द्र्म विन्देन्द्रिन्णेः ग्रम्भाय्यायान्द्र्मान्द्रम्भान्द्र्मान्य्यावन्द्रम्भायाय्या अस्यस्य स्वाप्याय्याय्य स्वाप्याय्य स्वाप्य स्वाप यावयः अर्थन्यः मुन्यः याययः याविदः विद्याः अत्यः श्रुः वितः पदेः रहे याः ने सर्थनः यदेः रहे यायाः यावयः अर्थन्यः स्वतः स्वतः

र्यःह्र्याःयाश्रयः ग्रेट्रश्चेश्च्याः स्वार्यः ह्याः स्वर्षः विश्वार्यः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्

१ मुरास्या भ्राण्यायहेगाहेत्त्त्त्व्यायाकात्या। भ्राण्यायहेगाहेत्त्त्त्त्र्यायाकात्या। म्राण्यायहेगाहेत्त्त्त्र्यायाकात्या।

यो र्वेन्य महिकासमा स्वार्वेन स्वार

३ रेशः शुः उदा विशः देवः हः वर्गे दः शेष्ट्वा

नञ्जम् अर्थः क्रुत् क्

१ ते क्षेत्रचेत्रव्यान्यते क्ष्या क्षेत्रचेत्रत्र स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

येग्रायन्त्राम्यम् अस्त्रियः स्ट्रा स

द्र्य चित्र चेत्र चेत्र

५ में श्वेश्वेश श्वेदार्थी स्वाप्त स्

क्ष्या विया प्रमेश क्ष्या ची ची क्ष्या ची क्ष्या ची क्ष्या ची क्ष्या ची क्ष्या ची क्ष्या ची ची क्ष्या ची ची क्ष्या ची क्ष्या ची चित्र ची चित्र ची ची चित्र ची ची चित्र ची चित्र ची ची ची ची चित्र ची ची चित्र ची ची ची ची चित्र ची ची ची ची चित्र ची ची चित्र ची ची चित्र ची ची ची ची ची ची च

न्येम्ब्रा हेद्रास्त्रिः स्रवेश्व्रिः स्रोः स्रोः स्रो स्राय्ये स्त्राय्ये स्त्राये स्त्रा अर्मे त्याम्याप्य प्रत्य क्षेत्र क्षे

र् विवायस्थान्यत्रित्त्वेत् क्ष्यात्र्यस्थान्त्र्यः विवाविवायस्यः स्रोत्रात्तेत्रः क्षुत्रः वहवास्यस्य ने व्यस्य व्यस्य व्यस्य व्यस्य विवाविवायस्य क्ष्यात् विवायस्य विवायस्य

न्धेरःव।

त्योन्न्न्स्भुः पॅव्रं कर्षित्रः कर्ण्यः व्यान्त्रः न्स्यः स्यान्तः वर्ण्यः स्यान्तः वर्ण्यः स्यान्तः वर्ण्यः स्यान्यः व्याः वर्ण्यः स्याः वर्ण्यः स्याः वर्ण्यः स्याः वर्ण्यः स्याः वर्ण्यः स्याः वर्ण्यः स्थाः वर्णः स्थाः वर्ण्यः स्थाः वर्णः स्थाः स्थाः वर्णः स्थाः स्थाः वर्णः स्थाः स्थाः वर्णः स्थाः स्थाः

<u> इसे सः स्वा</u>

क्रं सूनशायनम् नितः विदायदे नशेया वेद्रा

निःश्वरात्यसःसेन्। त्यने। त्यन्। त्यन्यन्। त्यन्। त्यन्। त्यन्। त्यन्। त्यन्। त्यन्। त्यन्। त्यन्। त्यन्। त्यन्।

१० र् श्रम्यात्रयाये से न्यात्र स्थात्र स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्र स्थात्र स्थात्र स्थात्य स्थात

द्येरः वा

य्र्वास्त्रास्त्रात्व्यस्याः स्वास्त्रात्व्याः वित्रः स्वत्याः वित्रः स्वतः स्वतः

११ रे कुः सेन्यायस्य विष्य सेन्य स्वर्धित स्वर्य स्

न्धेरः वा

न्याक्ष्यान्त्रेत्राय्याक्ष्याः क्ष्याः क्ष्याः व्याध्याः व्याध्याः व्याध्याः व्याध्याः व्याध्याः व्याध्याः व्य

रेगार्मेल'वर्ग्य'राक्चु'यळेंदे'म्वय'यर्मे'व्य|| इय'ग्रुय'र्र्ग्य'र्म्युय्य'र्म्य्य'य्यम्'र्र्म्य||

१३ वृष्ट्रिय्यमाध्रव हिनामा कुष्ट्रियामाहिमानुसामहिमानुसाम्

द्येरः वा

वनः क्रुश्रः स्वीर्याश्चात्विदः ख्वाश्चात्वे॥ द्यादः व्यवदः स्वीर्याश्चात्वश्चात्वश्चात्वे॥ व्यादः स्वीरः स्वीर्याश्चात्वश्चात्वश्चात्वे॥ व्यादः स्वीरः स्वीर्याश्चात्वश्चात्वश्चात्वे॥ व्यादः स्वीरः स्वीरं स् १०) वन्नभानुःश्वातिः क्या कुःस्रभावन्यस्य विश्वाति । स्वात्त्र स्

१५ विमा श्री अप्तान श्रुव प्रति श्रुव विमा श्री अप्तान श्रुव प्रति श्री विमा श्री अप्तान श्री विमा श्

नडुःनविःसःस्रित्वे । नश्चान्त्रे स्थ्याः स्थित्यः न्याः ख्यान्त्रः न्याः मीः नम् स्थ्याः स्था। मीः नमः नुष्याः सःस्रितः क्या। नड्डे नः सुमः न्याः सःमिष्ठे थ।।

१ व्राचीः श्राक्षे गुवः र्श्वेदः र्श्वः तुः निरुद्धः ते देवः ते देवः

१) इस्राधाओं गुन्रें र्यं न्यान्त्राधान्त्राध्या त्यायी इस्राध्या स्थाय व्याप्ता स्थाय विष्ट्र स्थायी स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्य

नर्डे ख्राया करे क्वा देव देव के क्वा सकर विकास के स्वा

१२ र्स्थायदेः क्षः क्षुत्र न्युत्रः अर्थाः विवाश्चितः चित्रः स्थाः विवाश्चितः चित्रः स्थाः विवाश्चितः चित्रः स्थाः विवाश्चितः विवाश्चितः चित्रः स्थाः विवाश्चितः स्थाः स्थाः विवाश्चितः स्थाः स्थाः विवाश्चितः स्थाः स्था

हुँ ग्रेन्यित्योग्यः श्रेय्यः स्वाप्तः यथा। देशः सेन्यः याव्यः यदः सेवः याद्वेनः यः न्।। सुरः नः रहः नद्वः व्यादः स्वाप्तः स्वापतः स्वापत

१ वे अंदिश्यदे क कुत्र नश्चित नश्चित नश्चित अर्क्ट शे दिश्य की श्राह्म नश्चित नश्चित नश्चित नश्चित अर्क्ट शे दिश्य की श्राह्म नश्चित नश्चित नश्चित नश्चित अर्क्ट ने श्चित नश्चित अर्क्ट ने श्चित नश्चित अर्क्ट ने श्चित नश्चित अर्क्ट ने श्चित अर्क ने श्चित अर्च ने श्चित अर

द्यं र ज्ञा द्राण्यं त्र प्रमार संदि कर स्यायन स्याय के कि । र र प्रद्य र म्यायम के र प्याय र के र प्याय स्थाय के । य कुर प्राय्व मार्थ स्थाय के स्थाय के स्थाय के । श्वेर प्राय्व मार्थ स्थाय के स्थाय के स्थाय के । श्वेर प्राय्व मार्थ स्थाय के स्थाय के । श्वेर प्राय्व मार्थ स्थाय स्याय स्थाय स्थाय

में नर्हेन्यिक्ष्यश्चित्राचित

ष्ट्रेन्थ्यः श्रुवः यद्यः स्ट्रेन्यः स्ट्रे

भूत्रपितः क्रायान व्यक्ति स्वाति स्वित्र स्वत्र स्वत्य स्वित्र स्वित्य स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्

द्येरःब्रा सुःसेदःसेदःमवेःव्दसःदुःग्वेदसःमःधी। खुश्यः क्वतः त्यते : र्क्षेत्रः क्वत्यः त्र्यं वाः प्रत्यः व्यवः व्याः प्रतः व्याः व्याः

१ वर्ष्ट्र प्रश्चितः श्वीः प्रवादः वा वर्ष्ट्र प्रविः प्रवादः प्रवादः वा वर्ष्ट्र प्रवादः वर्षः वरं

सळंत्र न्येते न्यीय वर्षे र न्दें सा सु सहया न पी।

न्वायः वः वर्ते । वर्तः श्रेष्ठाः कन् । वर्त्तः वाद्या

१ व्याच्याश्चरम्भ्रम् श्री व्याच्यायः वर्षेत्र स्वेत्यः स्वाच्यायः वर्षेत्र स्वाच्यायः स्वच्यायः स्वाच्यायः स्वाच्यायः स्वाच्यायः स्वाच्यायः स्वाच्यायः स्वाच्यायः स्वाच्यायः स्वाच्यायः स्वाच्यायः स्वच्यायः स्वाच्यायः स्वाच्यायः स्वच्यायः स्वयः स्व

त्यन्तरःश्रृंदःषीशःर्केद्ग्यदेःश्रह्तःद्वःश्री। मदःश्रिंद्रःद्वेद्दश्यश्रायहत्यःचदेःश्ल्र्यःश्रयः। त्यनःश्रृंद्वतःश्रेषाःश्वदःयदःयदःवदि॥ त्यमःहःदर्शेदःवशःद्वादःचःश्वेष्णदःयहशा।

नर्डे नक्कर् भाष्ट्रस्य स्व क्षेत्र क्षेत्र न्या क्षेत्र

ध्यतः देरः न्यायः श्रुप्रत्यप्रायः यहेतः तथा। द्योः श्रुप्रः याद्याः ययाः श्रुप्रायः श्रुप्रः याद्याः यया। हेप्रः स्प्रायः श्रुप्रः याद्याः य

१) इनाःलुषाः मुः १ अया ध्याः धिनः देनः दिनः नामः विनाः पानहेनः वयान्यः सेस्रस्य सुः विनाः केसा केमः केमः प्रतेषाः नविः हसः पानिः विनाः पानिः विनाः पानिः विनाः पानिः विनाः पानि

द्येरःव। इगःसंदेश्यर्क्षव्याः क्षरः यः यवः श्रूशः हे॥ यः पुष्यः व उवः र्स्यायः श्रेट्रः यवः क्ष्याः क्ष्याः व्याः क्ष्याः व्याः क्ष्याः हः क्ष्याः व्याः व्यः व्याः व्य

३ | न्ययः नवे १९ अश्रा श्रुनः न्यायः नः विवाः के वाशः कृतः न्यायः श्रुनः । व्यायः नवे अश्रासः श्रुनः । व्यायः नवे व्यायः । श्रुनः । व्यायः विवाः के व्यायः विवाः के व्यायः । श्रुनः । व्यायः विवाः के व्यायः । व्यायः । व्यायः । व्यायः विवाः के व्यायः । व्यायः ।

न्धेरः वा

क्र्यायान्दरःक्र्याचीतःश्चेतात्वह्तायायास्यास्यःविदा।

भ्री स्ट्री स्वाप्त क्ष्रमा ध्रम् क्ष्रमा म्याप्त क्ष्रमा क्ष

५ वे स्वास्तिः हस्य ध्याः वेदाः से स्वास्ति व्याः से स्वास्ति स्वासि स्वासि

५ नवित्यात् भ्रम्भ नवित्यात् र्स्स्रित् भ्रम्भ नवित्यात् र्स्स्रित् भ्रम्भ नवित्यात् स्थित् स्थान् स्यान् स्थान् स्थान्य

द्येरःव। श्रेदःवर्धेरःश्रेःग्वंदःत्यःश्रुवःव्दःवश्रा श्रेदःर्से श्रेदःप्रसःश्रःग्वेरःद्योःग्वेशःययाश्रा अर्देदे कुषः।प्रयशःवर्धेश्रयःप्रदेश्वेरःश्ररःदे॥ द्यरःश्रेरःष्ठ्याः यदेश्वेदःप्रसःश्रह्ता।

ही: र्यास्थ्राया हिं र्व्याप्त्राया हिं प्राय्या हिं प्राया हिं प्राय

द्येरः वा

विस्तर्भायाः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः

र्रे यहेग्रथ.रेट.गु.४४४। यहेग्रथ.श्.रेट.यह.भुर.गट.विग.ज.

द्रभ्यः त्रा द्रम्यः स्ट्रम्थः स्ट्रम्यः स्ट्रम्थः स्ट्रम्यः स्ट्रम्यः स्ट्रम्यः स्ट्रम्थः स्ट्रम्यः स्ट्रम्यः स्ट्रम्यः स्ट्रम्यः स्ट्रम्यः स्ट्रम्यः स्ट्

हे. भु.सः इयः ग्रम्थः मह्न् प्रदे मुत्रा

यहूँ नित्र निर्देश शुः श्रायहँ नि स्यापा विद्या स्यापा स्

गर्भरत्यः हिंदः स्वाः त्यां भाषाः पदेः वियाः सहेद।

१ च्रायास्त्र के न्या च्रायास्त्र विद्यात्त्र व्याप्त के स्वर्ण के न्या के स्वर्ण के

यभूत पर्वे स्था कुराया भूत्र सामा विदाय सामा कि । यहाँ सामा विदाय सामा कि । यहाँ सामा विदाय सामा कि । यहाँ सामा विदाय सा

केराम्श्रस्यक्ष्म् न्द्रित्तः म्यान्याः स्वा न्द्रितः न्द्रितः न्द्रितः न्द्रितः न्द्रितः न्द्रितः न्द्रितः न्द्रितः न्द्रितः न्यान्यः स्वा न्द्रितः न्यान्यः स्वतः स्वतः स्वा न्द्रितः न्यान्यः स्वतः स्वतः स्वा न्द्रितः न्यान्यः न्यान्यः स्वतः स्वतः स्व

१ के र्रायान में विद्यान ने स्वार्धिया ने स्वार्धिय ने स्वर्धिय ने स्वार्धिय ने स्वार्धिय ने स्वार्धिय ने स्वार्धिय ने स्वर्धिय ने स्वार्धिय ने स्वार्धिय ने स्वार्धिय ने स्वर्धिय ने स्वर्

१ प्रयायानर्श्वता है:र्स्याप्या है:र्स्याप्या है:र्स्याप्या है:र्स्याप्या है:र्स्याप्या है:र्स्याप्या है:र्स्याप्या है:र्स्या है:र्स्याप्या है:र्स्याप्या है:र्स्याप्या है:र्स्या है:र्स्य है:र्स्या है:र्स्य है:र्स्या है:र्स्या है:र्स्या है:र्स्य है:र्स्या है:र्स्य है

द्रो स्टायानर्ज्ञ्जाचा न्यह्र्न्द्र्याचे स्वाप्त स्वा

ने वे श्वरायते क्रवात् पर्देशा न्रे ते प्रमुखे यन्या वेन ने ।

१ केंगानी'नडर'अळअअ'श'इ'र'अेव'मदे'र्श्वेर'न। केंगार्श्वेर' मडेगानी'वर'श्वेर'गवि'श'र्र्र्, अ'श्वेर्र्व'गर'र्र्र्, मेंश्वेर'र्के अ'श्वेर' बेंद्र'र्र्र्य्, मेंश्वेर' केंग्रेन्ने मेंश्वेर' केंग्रेन्ने मेंश्वेर' केंग्रेन्ने मेंश्वेर' केंग्रेन्ने मेंश्वेर' केंग्रेने मेंश्वेर' केंग्वेर' केंग्रेने मेंश्वेर' केंग्रेने मेंश्वेर' केंग्वेर' केंग्

द्येरः वा

ञ्चनः श्वाः स्वाः स्वेः वार्ष्णाः वार्षः वार्षः स्वाः वार्षः वार

श्चरः वालि : श्वरः प्रद्वा : प्रदेशः स्वरः अवः अवः यो । यदे : अर्क्षे वा । प्रदेशः स्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः श्वरः वा । यदे : अर्क्षे वा । वि : श्वरः श

१ व्याप्य के प्राप्त के प्राप्त

द्येरःव। इत्यः अश्वःय। देरःवशः दुरः यदे विषः श्री शः यश्वः द्याः यो। श्री रः यक्ते व्यायः यदे । यद्याः यो। यः यः ययाय। दे श्री दः वेशः यद्यः यदे । द्यादः यायः ययाय। श्री यः यः यहं दः यः यदे । वेशः विष्यः यो विष्यः । यदे । विषयः यो विषयः । यदे । विषयः यो विषयः । यदे । विषयः यो विषयः । यदे । । यदे

र्ग्रेशःमुद्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्य

यो ज्ञानाष्ट्रप्रिक्षे रामा देश्चरम्या देश्चरम्या के मान्या के स्वान्य के स्

द्येरः वा

श्रुव प्रते त्रु प्रेश गुव पे प्र वर्षे व प्रमः हो न।

क्रिन् चुःनःवनायः भेता भुःर्नेतः नारः सुरः नीः श्रुरः कें भः श्रुतः भेरः प्रिनः परिः श्रुतः । श्रुतः परिः श्रुतः परिः श्रुतः । श्रुतः परिः श्रुतः । श

दमेर'वा दमेवे'दमेर'वाईद'वल्य'व्याक्षे'वर्ग

५ वर्षायायदे यम् अत्राह्म स्वाहित्या स्वाहित्या स्वाह्म स्वाह

द्येरः वा

५ देशन्य उत्तर्भ श्रुम्य श्रुम श्रुम्य श्रुम्य श्रुम श्रूम श्रुम श्रुम श्रुम श्रुम श्रुम श्रूम श्रुम श्रुम श्रुम श्रूम श्रुम श्रूम श्रूम श्रूम श्रूम श्रूम श्रूम श्रूम श्रूम श्रूम श्रूम

नड्य.सूच्रीष्ट्राष्ट्रम्था.सूच्य.पट्टी.मू.मूच्य.प्रच.टूच्या

धेव श्री त्रिक्ष प्रदेश स्वर के प्रत्य से वा श्री प्रक्ष के प्रत्य के प्रत्

यो देशासरायमें पापिता श्वराया श्वरार्के शास्त्र श्वराया श्वराय श्व

द्यं र व्या विकास वित्र विकास वित्र विकास वित्र विकास वित्र विकास वित्र विकास विकास

र् विष्णुं स्थान्य देवा देवा स्थान्य विष्णुं स्थान्य स्थान्य

यश्रिरःयो:न्वरःश्च्याःवर्त्रः हेःवहें विवेयाहेर॥

न्येरःव।

ग्राचे नहें नः श्व्रवः प्यनः हेवः र्ये न्येनः सेव॥

ग्राव्यवः प्यवः प्रश्रेषः प्रतः प्यनः सेव॥

श्वुसः प्रयः नेवः प्यनः स्यनः प्यनः प

हेर्थ्या हिर्य प्राचित्र प्रमा हिर्य हिर्

१) व्यवनिवासक्तान्त्र वित्तान्त्र महित्या निर्देश वित्ते वित्ये वि

ह्रवाधी। श्वित् स्वर्थः विष्याः स्वर्धः स्वरं स्वरं

द्यं र ज्ञा श्चे र के र के र या न्य र या ने र या के त्या के त

१ रेग्रथास्य स्वर्धाः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः

मारमाञ्चर स्त्रिः स्वामाश्वास्त्रे मान्या श्री साम्या स्वामा स्वास्त्र स्वा

मुन्। विनास्यक्षरायद्वसानुन्त्वाक्षरायद्वसान्यस्य मुन्दास्य मुन्द

न्धेरः वा

द्र्यासक्तः नवे । ह्रिन्यम् न्ये न्या ह्रिस्य ह्रिस्य ह्रिस्य । ह

५ व्रायास्य प्राप्त विद्या स्वर्धि । स्वर्य । स्वर्धि । स्वर्धि । स्वर्धि । स्वर्धि । स्वर्धि । स्वर्धि ।

वसायर से से दासदान के दाया वा के दा

हेर-इग्नाप्य अर्द्धर्थाः श्रुरिः ग्री मुत्र नर्हेन पर्देन पर्देश प्रेश प्रमानिक विश्व श्रेट्ट्याह्याम्याम्याम् भी ह्या वर्षा नर्भेन् श्चन्यार विया सर्ह्र रूप श्चे र न।। ने ने अर्ड रश श्रें र कुन र परें र। नर्भेन्द्रन्युन्यवे अर्द्धन्य श्रे र्याहेश १ नर्हेन्यदेन्ते नेव अद्धर्म हैन न्ये नेव निक्ष के अधिर रस इयाग्रद्यांग्राट रुट मी क्षेष्ठ या निष्ट्र दिया शुर यह दया पर क्षेष्ट्र राजि कुत्र रमेर'वा कुः भूरः बेटः चः वहेवः प्रवे त्तुः गर्वेवः दृरः॥ कु'वाहेर विश्वासर श्रुवास वे वित्र विविश्यवा क्रेंन्यान्युःन्ययायन्तः इयादन्त्रे वात्राम्या वर्रे में राह्ते सूर्व राग्वेग हुत्रहेता १ र्भूर्यिः सर्द्ध्र सार्श्वे म् सेर्ट्स् इंडिंग्स्य ग्रेडिंग्स्य में र्भरः वा रुअ'र्गेन्। वस'र्रु'र्हे अ'रांदे'वि'क्द'र्रा।

हेर-तर्व-स-त्वाय-त्वे क्वा त्वाय-क्के क्वा-चेर-क्के स-द्व-द्वाया स्व-क्व-सहस्र-चेर-के स-उव-त्वाया स्व-क्व-सहस्र-चेर-के स-चेर-पा रेने-व-द्वाय-त्वे क्व-पेव-के । रेने-व-द्वाय-त्वे क्व-पेव-के । रेने-व-द्वाय-त्वे क्व-पेव-के ।

३ चित्रवित्राची के अन्य स्वाया विद्या विद्या विद्या के स्वाया के स्वया के स्वया

५ विश्वित्वाद्धवायी विश्वित्वाद्धवायी विश्वित्वाद्धवायी स्थेट मुस्य स्थायी विश्वित्वाद्धवायी स्थेट स्थायी स्थित स्थायी स्यायी स्थायी स

हेर्य्यक्तर्यः भ्रम्यश्चित्रः स्ट्रित्यः क्रम् र्ट्यायः द्रम्यद्रः यद्ये याः विवाया। क्रेन् क्रिन्यर्यो श्वायः विवाया। भ्रम्यश्चित्रः विश्वयः स्ट्रित्या।

न्येम्ब्रा न्यं त्रह् त्यान्यम् स्वित् स्वान्यं त्र्याः त्र्य

हेर्द्रश्चित्रः वर्ह्ण्ट्रश्च्या हेर्द्ध्यः क्रेंद्रश्चरः श्चरः दः प्यदः॥ देद्रायः क्रेंद्राये व्यव्यक्ष्ण्द्रश्चरः व्यव्या हेर्द्ध्यः क्रेंद्र्यः वर्ष्ट्रदः प्यद्या। सन्तर्द्ध्यः वर्ष्ट्रद्ध्यः वर्ष्ट्रदः प्यद्या। सन्तर्द्ध्यः वर्ष्ट्रद्ध्यः वर्ष्ट्रद्ध्यः वर्ष्ट्रद्ध्यः वर्ष्ट्

१ मशुःसुन्रसुम्रस्य मिन्न नहें न्याले ने स्थून मिन्न स्थान स्थित स्थान स्थित स्थान स्थित स्थान स्थित स्थान स्थान स्थित स्थान स्यान स्थान स

द्येरःव्। द्रांशं केवः र्ये श्रःश्रुट्या र्यं या श्रीया श्राण्या । र्वे त्या प्रदे ह्युः र्वे पाया प्राण्या ह्या श्रीया या प्रदा्य या या वित्र प्रयोगी या वित्र प्रयोगी या या वित्र या वित्र

निम्म अवतः निवितः कुष्णः स्रवः विः न्याः न्याः न्याः स्रवः निष्णः स्रवः निष्णः स्रवः निष्णः स्रवः न्याः स्रवः स्रवः निष्णः स्रवः स्रवः न्याः स्रवः स्रवः निष्णः स्रवः स

३) र्हेनशःस्वःळेंगशा नर्हेनःस्निःग्रेन्स्शःसन्तःस्वः र्वेयःग्रेशःदेवःशःस्वरःकेंगशा नर्हेनःस्वाशःसःस्रमःग्रेःगुरुःसवेः ह्वेयःव। गर्वाःवःश्चःनशःसहेशःसःग्रानःहिनःशा। महिश्राश्चेत्रामानि हैं न्यर महित्र श्चित्र सित्रा ठे सूत्र हित्र लिया छुं या नित्र नहेत्र हैं लिया। के क्वें सामेर्स मार्य हैं त्यत्रे सां ठे लिया। यमसा

शुअः द्वः संदेशः नश्रुवः श्रीः श्रुवः विद्वः संदेशः स्थाः स्याः स्थाः स

ग्रे अर्ह्मणामिन्स्यन्त्रम् देशस्य हेन् नेन् में द्वा ने स्वाप्त स्वाप

न्गर्स्स्रिं अः श्रृंत्रः गविः प्यरः श्रीः त्यः वि। विराद्ये विराविद्याद्यः प्रदेशः श्रुंत्यः वा प्ये या। वि विश्वे विषयः विद्याद्यः या श्रीः विश्वे विश्वे विषयः विश्वे विश्वे

१) यर्केना सेव मी ने साम स्वा सर्केना सेव मी प्रेन में विना मी स

यदी त्रशास्त्र प्रति श्री शादे न श्रिया हु । न श्री शासि । प्रति । प्रति । स्राप्ति । प्रति । स्राप्ति । प्रति । स्राप्ति । प्रति । स्राप्ति ।

वानःकैवावी में देन प्रम्ये र नहें प्रवाश र अ न में प्रा

ने से प्रहेग्य अंदा

व्यवायाय स्थान स्

ने त्यर्चिमा सम्मन के मानी क्रम् की मिं र्नि दिन है।

मन के नि स्त्री नि स्

र्यः यकुष्यः सञ्चरः या श्राण्यः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स

गुव-र्क्स्यश्चाय-क्ष्मान्ते। क्ष्मायक्षयशःश्चर-प्रयापःक्ष्माःधेव।। गुव-रुक्ष्म्यश्चर्याय-क्षमःधेव।।

म्बर्धियाः वित्रं निर्देश्यात्रं क्षेत्रं म्बर्धियाः वित्रं वित्

के श्रेरावहे नवे द्रम्य साञ्चे वासे हो ना

वर्देवे ग्राच ग्रुप्ताव सार्टा ग्राच ग्रेप्ता सार्थ व ग्राच यग्रास्यते वे त्याविव पा उवा या के स्त्रा स्व प्रते से व से से व से से व से स न्दर्हेन्स्स्राध्याम्द्राप्तिः वाव्यासुः शुस्या चविवः सहस्यास्रे पविवः रश्यहें श्रःविदःक्षृत्रः सूनाः सः यदिः वे स्वद्याः वी । श्राः सः स्वतः स्वा । यद्याः यायर्ने न हे ते प्रस्था सार्वे श्विम क्षेम पासी हो न ने क्षेम प्रमा हो न में या सारा श्री वेशस्य त्युराया नान हेराक्ष स्रित्र श्री ना बनाय र दिस् यदे द्रयय ग्री अ अहे अ य अ या अ यदि वें व्यक्त व य व वें मुद्रय श्रेव परि दर्भ वया रेश पर प्रविव स्त्र परि प्रविश्व स्तर्भ स्तर प्रविव नवर रेविः अप्दे निर्वाची अअर्दे अपविश्वचार्या अवि निर्वाचा व नक्षेत्रदेर्द्रश्रास्त्रे नक्षेत्रकेत्राकेत्र में स्रेत्र प्रस्ते होत्ते स्रेत्र प्रस् वेश्यम् त्युम्मे । ने सूम् त्युम्य ने स्वत्ये मुं स्वत्ये वे मिन्यो न्यया ग्रीशः सक्सराशुः प्यन्ताः र्से दः प्रदे सः प्रेना द्वानाः स्वेदे । विदः प्रः यः नहे व व राजे नः भे वर् नामिक्षाः भु सुर न भे दिश्व

य नशुः हो न्यानः स्थान । यानः हो न्यान्यः स्थान । यानः हो न्यान्यः स्थान । यानः हा सुः न्यान्यः स्थान । यायाची त्यायाची यायाची यायाची

यो चीयः चीतः भीत्रमा श्रीतः स्वार्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर

यश्चित्रव्यान्त्रश्चित्रवित्वः श्चित्रः त्याः त

२ रेसप्यान्ययानियानिक्षम् क्षेत्रार्श्वेर् स्वित्र हुःत्व्वित्रास्य प्याप्या । रेत्र त्यार्श्वेर् स्थानियान्य प्राप्या

क्षेत्राः श्रे र वि र वि व वि वि वि स्थान युवा श्राप्त श्राप्त युवा से प्राप्त युवा से स्थान युवा से वि व व व स्रित्र स्थान स्थान

द्येरः वा

क्षेत्रके देश्वर्म् स्थान्य स

यहेत्रान्त्रयान्यः व्याप्यः प्राप्तः व्याप्त्यः विद्याः विद्य

तस्यान्यते क्रिंत्यकात्रम्भान्यते त्यान्यते स्वान्यते स्वान्यत्यते स्वान्यत्यते स्वान्यत्यते स्वान्यते स्

इन्न्यक्ष्यक्ष्यान्यक्ष्यान्त्री
अर्देन्यान्यक्ष्यान्त्रेन्त्रान्त्र्यः
इन्न्यान्यक्ष्यान्त्रेन्त्रान्त्र्यः
इन्यान्यक्ष्यान्त्रेन्त्रान्त्र्यः

म्वान्तः ने देन व्यान्य क्षान्तः कष्ट्रान्तः कष्ट्रानः कष्ट्रान्तः कष्ट्रान्त

म्यास्त्र क्षेत्र क्ष

लूटशः ह्र्याश्राक्षात्याच्युद्धरात्राच्याचारा

कुलावनाग्री:स्वामी विष्यतक्तुः से नसर सँवैष्यवा तुः नर्ते न हैवासः सब्वार्वित्रदेवायाक्षात्रम्याद्याद्याद्याद्याद्वराद्वीत्राच्याद्वराद्वात्यवाद्वीत्रम् स्याः मुद्दाः स्र क्षेत्रायाद्वां या नियाः स्वाराः स्वाराः स्वाराः स्वाराः स्वाराः स्वाराः स्वाराः स्वाराः स्व र्यदेः रेग्रायायाया ठेग् कुः यळ्दः प्रायुष्यः सुग्रायः न्निः राये प्रायः यर्गे इरमिर्द्रम् हेर्यायायाययाया नेर्युत्रयो निर्म् ययानभ्रतारादे यायवदाकु द्यापी कु या है या मे कित्र द्राद्र यह या स्र यदे के दश धेना दें द कंद न दु न त्व न व न दश में द शे न सूद स कन श्रेन्द्रावालेवर्न्द्रवर्ष्य्य स्वास्य द्वार्था कुरी प्रस्रेन्य वर्षे द्रायते क्रॅंटर्न्स्वरेग्नरधेवर्मा वेशसरत्यूरिं। ग्रन्तेर्ग्भनशस् वना वर्कें र वक्क न वर्ष स्वा नी वि सव से पी वना हु नहें र है। र र र र र रेग्रायायम्बर्यं रावे केंद्र मेंग्राया केंद्र मेंद्र प्राप्त स्ट्राया मेंद्र रावे स्ट्राया मेंद्र रावे स्ट्राया स्ट्राय स्ट्राय स्ट्राया स्ट्राय स्ट्राय स्ट य। कु:८ग्रस्त्रग्रेग्रस्कुट:देट:ले:८वर:ब्रेंट:ब्रग्राग्रेश:केंट्र:वर्रःवर् अवतःवयार्केटःइयायाङार्येट्यायासे वायायर्हेटायदेःस्ट्रेट्ट्य्यादेः गरा वेशमरत्यूरावश वर्षरावेशवारायवाद्धवायहरायादा द्वेर मुंग्राम्भुंद्रद्राम्भुंद्र्याहेद्राम् अय्यवद्यव्यक्ष्वंद्रव्यम्भुंद्र्येद्र नरुरायानहेत्रत्रार्केटासदेशीटानीयानसूट्रायान्यायायाकेष्पटा नेंद्रीः कुलावर्केंदासर्केंद्राधेदादेग्ध्रयायात्रात्रायायायात्रात्रह्यायाःविदाद्विदात्राह्यदा

५ अनुत्रम् नुम्यान्य स्वान्ति। यहम्यान्य स्वे दित्र यमे दिन्ति मान्येय ग्रीया। यह दिन्दिन भ्रीय सम्बन्धिय स्वान्या

यात्राचितः देत्रादे प्रदेश्यः श्रुष्यः श्रुष्यः श्रुष्यः यात्रः देत्रः श्रुष्यः यात्रः विवायः विवाय

द्यं र ज्ञा वित्र वित्र

यदेतः याचा ग्रितः देवा देवा देवा विश्वा विश

ने न त्रिया अपया अपया स्वाप्त विष्या निष्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व शुः वे 'न्यानः हेव' यनः होन् 'वे होते 'अन्न शः हो अ' अहे अ' यहे वे दिन बूट में श सळं द बूँ टश सुद पा न शवा न प न द खूद रे न र ह व से प ग्रे द्वितः वार्ट्रायः वर्देस्य अपये प्रयाप्तर ख्रुतः यवे वक्र गावे व्रायाय दे दे धेर्र्र्वरित्वेश्यर्यर्व्यूर्विर्याय्युदेर्देव्युः भ्रवशा देवर्यः बुर् वह्याः र्हेट्या अव्यानदे ना के बार्य दे प्रति हित्या शुर हे प्रयान हे बार्व पा गुवः ह्नाम्बर्द्रास्य विदेशस्य राज्य के सामित्र स्थानित स्थ गशुस्राग्नी र्दिन स्नूदामी सार्के सासे दासुदारादे माद्यामा सामा सामा हो दासा ८८.क्षेत्र.कुर्या. थे.क्षेत्रा.च.क्षेत्रा.संयु.च.च्या.ची.क्षे.की.की.की.की.संट्या.संयु. गर्राचा वे प्रवे प्रथम्प प्राप्त वे अपार्ष अपार्थ हे प्रवामी हिर्मावे हा अन्देशसुःसङ्क्ष्यःसयःसयःमना<u>चःच</u>िन्नदेशसंख्यानार्द्वः

स्वास्तिः स्वानः स्वान्ति। सस्वान्ते ने स्वान्ति । स्वान्ते स्वान्ति ।

द्यं र व्या विष्ट्र व्या विष्ट्र विष्

यात्रान्ते केत्राची त्यात्र क्षेत्र ।

ब्राह्म क्षेत्र क्षेत्

कुना

वर्तवे नान ग्रु पो ने या वहे नाया से दा श्वर हे दर नान ग्रेट ग्राह्म यः दुगाः यः वः सेः धेः यवे यः धः यः प्राप्तः प्रदुर्यः प्रोत्यां वः यके गः वो वार्यः स्वरः सेः व्यायायदेणे प्राप्त श्रीव सेंदि । त्राया वे प्याप्त श्रीप से स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स ५८। ७. वे. अ८. ५८ ८८ व्यापानी वित् अ८. ५८ व्यापानी वित्राम्य धे ने अप्देश या अप से दारे अप में वा सामादारे हिताम्य असे वा प्ये मो निवे राञ्चर्राहर्श्यत्रयासहयातुरा वेयावावातेर्वर्यर्थर्येवायासर्वेदासदेः यर्देव नहेंद्र ग्री के ना श्रें र द्राययान ग्राचे हे दे देरे या श्राच श्रव ग्राट के ना श्चिरःश्चीः द्वरःग्रीशःग्रथः वरःगें से व्रशः सःधिवः वें । द्वाः सदेः विद्याः सदेः पःणेत्रा नर्गेत्रः सर्केगः न्नः से ते गार्स्स सर्वेत्रः स्वेतः स्वेत नदुःमदेः अन्नदः हे अः दह्याः आ अ दिः दहिया अ से न यात्र अ सर्वे वा पीः गो निव मित्र के निवास मित्र के निवास मित्र के प्र

र रवाज्ञान्यश्राधीः यावाद्यां विष्णा विष्णा

द्यम्स्य प्रमान्त्रम्य प्रमान्य प्रमान्य प्रमान्त्रम्य प्रमान्य प्रमान्य प्रमान्त्रम्य प्रमान्य प्रमा

प्रत्यं प्रस्ति विश्व विष्व विश्व विष्य व

द्याः त्रं त्यायाक्ष्यः क्षेत्रः त्र्याः त्रं त्याः व्याः त्रं त्याः व्याः त्रं त्याः व्याः त्रं त्याः व्याः व त्र्रः क्षेत्रः त्यायः क्ष्यः त्रं त्याः त्रं त्यायाया। द्याः त्रं त्यायाक्षयः क्ष्यः त्याः व्याः व्याः व्यायाया। द्याः त्रं त्यायाक्षयः त्र्वाः त्याः त्रं त्याः व्यायाया।

वर्षामवे मान के मा धेव रे ।

१० বন্ধ্রবশ্বরার ক্রিবা

क्षेत्राची के शासकुर शास देवा प्रशा

र्देव पावव श्वेन या नश्चेन या यथा श्वी

क्षेत्राःश्चेर्रः दे 'द्रवा'याय 'श्चेर्याय 'श्चेर्याय

क्रिंश्वर वर्षे निर्वे निर्वे

न्यान्त्रः न्यान्तः क्ष्यः न्यान्तः क्ष्यः न्यान्तः क्ष्यः न्यान्तः व्यान्तः व्यानः व्यान्तः व्यान्यः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्तः

११ समुक्'राये'श्रुये'ग्राय'र्क्षंग ८ देशसीट'री'ग्रायय'र्क्स्यम्य श्रु। । वर्गेट्रप'र्देक्श्रीय'समुक्'राये'श्री।

रनः कुशः ह्रसः नगः गुह्यः भेरः दिरशः भा श्वरः के देः नुः प्राचे शः स्रोदे रायः स्रोद्रः रायः भी। श्वरः श्री शः द्रम् याः ग्री शः स्रोद्दे शः रायः भी। स्रदः सः रुदः व्यदे शः स्रोद्दे शः सं भी शः राः श्री ना

वर्दीः पानः श्रुः द्रम्यः श्रुः द्रम्यः श्रुः द्रम्यः श्रुः द्रम्यः स्रुः द्रम्यः स्रुः द्रम्यः स्रुः स्र

१२ क्रेंट्र अपने प्राच केंच

नर्हेन्द्रेव्दर्भ्यःशुःनश्रृवःवःष्परः॥ क्षेत्राःनीयःस्ट्रिंद्यःश्रेत्रःस्यःधेव॥

ग्वाचितः देवः ने दिर्देशः शुः वश्रुवः ग्राटः वर्हेनः चेतः क्षेणः श्रुं रः ग्रीः व्याद्यः प्रवादः प्रवादः व्यादः व

श्रूनश्रम्भ्यत्वर्त्तर्भ्यः स्ट्रम्यः स्ट्रम्

ळ्याश्वार्यात्राच्यात्रश्वार्यात्राच्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्यात्यात्यात्यात्यात्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्

भ्रे ल्राया प्राप्त व्याप्त व

क्षेत्राःश्चें रःश्चः अते ः न्र्हें तः त्रेत्रः ह्याः या या या व्यव्याः व्याः व्यव्याः व्याः व्यव्याः व्यव्याः व्यव्याः व्यव्यः व्यव्याः व्यव्यः व्यव्यव्यः व्यव्यः व्यव्यः व्यव्यव्यः व्यव्यव्यः व्यव्यव्यः व्यव्यः व्यव्

त्तुयः स्वाः वाध्यः द्रः त्याः व्याः व्यः

वितेश्वानः ग्रुःश्वरशः मुशः दिः वानः ग्रेतः श्रुः श्रुः श्रेः श्रेतः वान्ते। क्षेत्रः वित्रः वान्ते। वित्रं वान्ते। वित्रः वित्रः। वित्रः वित्रः वित्रः व

स्यावि नेत्राक्ष्माण्यक्षमाण्यक्यक्षमाण्यक्यक्षमाण्यक्षमाण्यक्यक्षमाण्यक्षमाण्यक्

१ वाडेगायी अः श्चेनः यदेः यानः स्टेंग हेन श्चेशः नहेन पः याडेगाः युः याश्या । स्टेंगः श्चें रः ने दें याडेगाः नश्चेनशः श्चें।

यातः च्रितः हेतः श्रूशः श्रीटः यहेतः याचियाः च्रुः याश्रयः यशः यहितः देतः श्रीतः यतः च्रुशः यदिः स्क्रियाः श्रीतः याचियाः श्रीतः यावः स्क्रियाः वेतः

क्रिन् र्श्वराध्यात्र्यात्यात्र्यात

यितियाना चिति हेन स्मान र्थे क्रिन्स स्मान स्मा

त्त्राचार्राः भिर्त्ते व्याचिर्याः विद्याः वि

है हेव:८८:यहेव:याहेश:गाःश्वरा। क्षेताःश्वेरःदेःवे:यहिशःगाःयश्वेयया।

यारः विवा श्रेनः यदेनः स्वा व त्यया व त्यः ने व त्या व स्व त्या त्या व त्या व

१६ ऍटशत्रेश्यायत्र्यं वातःक्षेत्राःसळ्द्रिन्सूःक्ष्यायःस्। । वहेश्यःमःदेत्रेख्ट्यायःस्।

र्वेद्राची पात्र क्षेत्र अस्त्र क्षेत्र अस्त्र पात्र क्षेत्र प्रदेश क्षेत्र प्रदेश क्षेत्र क्

स्थानम्तिः तत्र्यात्रः त्र्याः स्थाः त्रियाः स्थाः व्यान्तः त्र्याः स्थाः व्यान्तः त्र्याः स्थाः व्यान्तः त्र्याः स्थाः व्यान्तः त्र्याः स्थाः स्थाः

यदेत्रः यात्रः श्वास्त्रः स्वाद्याः त्रात्रः स्वाद्याः यात्रः स्वाद्याः स्व

न्द्राधेदावेद्रायाधेदाया याता होत् कित्र हिंदा यो सून्य हो। हेंद्रा सह्या मी रुष रम्म राम रेष राम रामित सिंदी सिंद राम्या रुस रामित सिंद र वर्ष्टिम् अःरिविः प्ययः विद्वार्याः विदः विद्वार्याः श्री अः द्वाराः व्यूष्ठाः द्वाराः विद्वाराः नर्दा । क्रिया महाद्वर से से से स्वाद्या स्वाद्य स्वाद र्वे 'द्वे अ'चर्याच्याच्याचा क्षेत्र'णे द्या द्याचियाच के याच्याचे स्वरे । सर्वाक्षस्य प्राप्त क्षरंभित्र विविष्य प्रति । प्राप्त क्षर्य विष्य वर्ष्य स्थान्त्र व्या संस्था व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त स्था व्याप्त स्था व्याप्त स्था व्याप्त स्था व्याप निरः र्वेदः यः यह् नाः या नाया वा कः नदे न् वा या वा नाया निर्मे निर्मे । नःग्वितः तुःविद्वयः त्रभः नक्षुः नरः नेतः प्रभः नक्षुः नेतः यानः क्षेत्राः नदः। त्रभः ग्रीभासरेंद्रायरावहें भाद्रभाद्रस्थायायात्रा क्रास्तेरावर्षिवासायवे सह्या ॲॱख़ॱय़ॕॱॺॱ_{क़ॕ}ॺॱॸॻऻढ़ॱढ़ॼॺॱॻॖॺॱॸॖॖॸॱय़ॱख़ॺॱॸढ़ॱऄढ़ॱॿ॓ॺॱॸॾॱॾॗॕॸ॔ॱय़ढ़॓ॱ कैना: श्रद्राद्रम् अद्भेदेरे राष्ट्रमा व्यव्या विषय । किना श्रुर् प्रद्रा विषय । व्यः हुनः र्रेविः केना मे रामान ग्रुने हिन होन म्रा स्वार्य है। यानः क्षेत्राची क्रुत्रः याशुस्रायद्रेशः स्थाः व्येत्रः यद्रेशः ग्रीः यानः क्षेत्राः वित्रः वि ।

ते स्वाया स्वया स्वया स्वया स्वाया स्वया स्वया

क्रिंगाणिया वर्ते वर्गा

र्वः अप्त्याः अप्ति । स्वाः विष्ठः विष्ठ

वे:दे:दवो:चलेश:वहेवाश:बेद:दवट:क्वृषा

र्थेव-५-मेर-न

दे त्या क्रिंस दे वा वे दिया वो दे दे दे दे दे दे दे दे ते वा के स्वा के स्वा वे दे ते दे ते दे ते ते ते वे वा के स्व के

रेणायि ह्या स्वार्थिय स्व

हैं अन्ते ना ना निवा क्षेत्र क्ष्य निवा क्षेत्र क्ष्य क्ष्य क्षेत्र क

क्रिंश धिया प्रश्चे विषय अप्तर्देश

स्वस्थानिक स्वत्य स्वत

नाया है। हिंद् न्या है सारे नाया दुर अवा हुंद् अदे नाये हुंद अद्या नाया है। हिंद् न्या स्था नाया है। हुंद् नाया हुंद् नाया हुंद नाया हु

हिन् श्रेश कें अर्थ में ना निन् निया अर्थ हुय निम् ये प्रति । विक्र प्र

वियाः बियाश्वाश्वा प्रत्येष्ट्र श्वाश्वाश्वा वियाः वि

हिंद्रश्रीशः हैं अर्दे ना ने प्रदेश हैं ना ने प्रदेश ने अर्दे र हैं अर्दे ने अर्दे र हैं अर्दे ने से से प्रदेश हैं जो अर्दे अर्दे ने हैं ने प्रदेश हैं ने प

हिन्द्राह्म देवानी देवान हिन्द्राह्म देवानी देवान हिन्द्राह्म देवान हिन्द्राह्म देवानी देवान हिन्द्राह्म देवानी देवान हिन्द्राह्म देवानी देवान हिन्द्राह्म देवान हिन्द्राहम हिन्द्राहम देवान हिन्द्राहम हिन्द्र हिन्द्राहम हिन्द्र हिन्द्र

ण्याने हिंद् स्टाईस स्वाप्या विश्व स्वाप्य स्

गयाने हिंदारदावहेगा हेव दिस्याददा हैंगा एकर हो केंद्रा च इद सबदर्वासहें अर्वोर्ण्ये सूर्वा कुर्त्व सुरावस्य किया है अर्वे वा वी छ नवगारेगानभूतायर्नेना हिन्छेशस्य ही नरागशुसान्ना हेतासळता रुभारुम वर्मे वर्रमार्श्वे रामाश्वमा बादारुभाग्री कुः नाद्यार्थे खुदाळ रारुवरा बेदायमा देखें दर्ज मा कु क्रेन दरमह्याय सम्भाव स्थाप न्रेशन्दरहेवान्त्रीं बुदर्तु विशेषान्ते हैवा विनाग्री क्षेत्रा बुद्र हो द्वीं याया यदे र्र्झे केव पदी वस्य हैं सारे वा वी पदी वा हेव खुया यदे प्यसा हिर पदी वस्य हिंद्रस्टार्मेअप्याद्या श्रीशास्त्र व्याची विद्रा निस्रराया क्षेत्र राष्ट्रेत्र प्येत्र या क्षु उत्तर मित्र राष्ट्र राष् देश धीता

क्ष्यः त्रेणः निः यहेणः हेतः छुत्यः नवः नवः सः वेतः सवः छेतः स्राः नेतः । वितः ग्रीसः छेः विषा चेतः त्रेणं सः समा वितः वे । वितः ग्रीसः त्रावः न कुः स्राः । वितः ग्रीसः कुत्यः विवे । स्राः स्राः स्राः ने । वितः वितः ग्रीसः न । स्राः स्राः स्राः स्राः स्राः स्राः स्रा

ने दे पद्मेग्रासे द द्वारा कुषा

ळ्यायाविदात्त्रमान्त्रींश्व स्वाप्त्रमान्त्रींश्व स्वाप्त्रमान्त्रम

মহন:নই্মমা

निशः श्चेंत्र नडशः न्वो सिटः बुरः इसः यदेत्र यः वे से प्रहेषाश्चेत् ग्रीशः श्वेहते के शः अर्थि वार्ष्ठ्या य्याः श्चेंतः य्वेदे केत्र सिदः अर्थेत्। यदः अर्थेतः यदेते यादः यदि वार्थेतः यदि यद्वेया। ॥ न्वो यो याश्चेत्या। ॥